साल 2018 के रचना-उपलब्धि: 'चम्पारन सत्याग्रह गाथा' आ 'अग्निसंभव'

2018 के ई साल एह माने में खास रहल कि हमहन का पूरब-क्षेत्र बिहार में 'चम्पारन-सत्याग्रह' के लेके महात्मा गाँधी जी के बड़ा जोर-शोर से इयाद कइल गइल आ उनका व्यक्तित्व-कृतित्व पर रचनात्मक आयोजन कइल गइल। एमें गाँधी जी का नाँव-निशानी आ अनमोल देन पर चर्चा-परिचर्चा भइल।

राष्ट्रीय आ वैश्विक पटल पर एगो बड़हन-कालखण्ड में, विश्व-समाज के अपना करिश्माई व्यक्तित्व आ रहनी-करनी से प्रभावित करे वाला जननायक के, चम्पारन-सत्याग्रह का बहाने भा कवनो बहाने इयाद कइल आ ओह महात्मा के सरधा-सुमिरन कइल, आज का परिवेश में अउरी जरूरी लागत बा। एह दिसाईं भोजपुरी के दू गो रचनाकारन का रचनात्मक अवदान के हमरा नजर में खास महत्व बा, जे युग-प्रवर्तक नायक गाँधी के, अपना कविताई का जरिये, अपना भाषा-समाज का ओर से, पुनीत सरधांजलि त देलहीं बा, एह महान जननायक का जीवन आ करतब-कथा के बखान करत, सत्य, अहिंसा, प्रेम आ निडरता का सनेस से, भोजपुरी-साहित्य के अनूठा उपहार भेंट कइले बा। एह साल प्रकाशित पहिलकी रचना "चम्पारन सत्याग्रह-गाथा" (गुलरेज शहजाद) आ दुसरकी, प्रबन्ध काव्य "अग्निसंभव" (आनन्द सन्धिदूत) सार्थक उपादेय आ प्रासंगिक कृति बाड़ी सऽ।

अंग्रेजन का उपनिवेश में शासक आ शासित अलावा रंग-भेद आ पराधीनता के चुभन आ तिरस्कार सामान्य जन के ढेर विचलित कइलस, कारन ईहो रहे कि एही का जवरें शासित-देश शोषन, दमन आ उत्पीड़न के शिकार भइलन सऽ। ओघरी अँगरेजी बेवस्था में गोर आ करिया क भेद त रहबे कइल करिया लोग भा गोरा साहेबन से भिन्न, जाति आ चमड़ी के लोगन के शोषन, उत्पीडन आ दमन आम बात रहे। लन्दन से बैरिस्टरी पास कइ के लवटल मोहनदास करमचन्द गाँधी एही शोषित-पीड़ित लोगन क लड़ाई लड़े दक्षिण अफ्रीका भा अउरी जगहा गइलन। गिरमिटिया-प्रथा में पेरात मजदूरन का दुख-दर्द आ पीर से उद्वेलित गाँधी, एह शोषित-पीड़ित गुलाम लोगन क लड़ाई लड़ के जन-नायक आ मसीहा बनलन। बुनियादी हक, मानवाधिकार, समानता आ स्वतंत्रता का लड़ाई खातिर उनकर हथियार बनल सत्याग्रह।

चम्पारन में निलहन का खिलाफ जन-आन्दोलन के बल आ दिशा देबे वाला गाँधी जी चम्पारन-प्रवास में, गरीबी, अशिक्षा आ बदहाली दूर करे के जवन सत्य-संकल्प लिहलन, ओमे आमजन क विश्वास जागल आ सुराज का लड़ाई में, सामूहिक चेतना क मिसाल बने वाली जन-भागीदारी देखे के मिलल। अइसन अलख जागल कि गाँव का अपढ़-गँवार कहाये वाला लोगन खातिर ऊ गान्ही बाबा बनि गइलन। महात्मा गाँधी का प्रेरक व्यक्तित्व आ कारनामा से दुनिया प्रभावित आ प्रेरित भइल। फेर हमन क देश त उनकर कर्म-भूमि रहे। महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व पर, फेर से रोशनी डालत साल २०१८ के एह दूनों 'रचना' का रचनाकारन के साधुवाद!

कुछ रचे आ सिरिजे के भाव तबे जागेला जब कवि, लेखक का संवेदनशील मन में समय-संदर्भ के लेके कवनो बात-बिचार, कवनो अन्तर्बाहय घटना, कवनो गहिर भाव-प्रभाव के लेके उद्वेलन होला। भीतर का भाव-सान्द्रता भा भाव-सघनता के उरेहे-उकेरे के बेचैनी रचना-प्रक्रिया के पहिल प्रस्थान-बिन्दु हऽ। गाँधी जी के प्रेरक व्यक्तित्व आ सहज चिन्तन-दर्शन से प्रभावित कवि/लेखक के उनकर गाथा भा प्रबन्ध-काव्य रचे खातिर केतना खोजे-पढ़े आ जानकारी जुटावे के परल होई, फेरु उनका वृत्तान्त आ बात-बिचार के बखान करे खातिर शब्द-बिधान करे में अपने के साधे आ शोधे के परल होई। ई सब सोचि के एक बेर फेरु दोहरउआ, दूनो कवि-गन श्री गुलरेज शहजाद आ श्री आनन्द सन्धिदूत का कवि-प्रतिभा आ काव्य-कौशल का प्रति सरधा आ प्रेम प्रगट करत बानी।

गुलरेज शहजाद जी के रचना 'चम्पारन सत्याग्रह गाथा' के नाँव, नीमन बा, काहें कि ए गाथा-काव्य में कवि के 'फोकस', चम्पारन-गाथा पर बा। चम्पारन के आपन पौराणिक, ऐतिहासिक आ भौगोलिक महत्व बा, उहाँ के आपन क्षेत्रीय सांस्कृतिक रंग आ लोक-स्वर बा। कवि ओकरा नैसर्गिक वैशिष्ट्य आ ऐतिहासिक क्रम में, नील के खेती आ बन्दोबस्ती आदि का कथा कहत-कहत, नील के खेती करावे वाला निलहा गोरन का शोषन, जुल्म आ किसान-मजदूरन का उत्पीड़न के वृत्तान्त बतावत, ओह ऐतिहासिक जगहा पर पाठक के पहुँचा देत बा, जहाँ निलहा-विद्रोह क पटकथा लिखल जात रहे। चम्पारन-आन्दोलन आ संघर्ष क जमीन तइयार करे आ क्षेत्रीय अगुवाई करे वाला चम्पारनी नायकन में 'शेख गुलाब', पीर मुहम्मद मूनिस आ राजकुमार सुकुल आदि जुझारू नायकन के सगर्व-चर्चा करत कवि संघर्ष के ऊ तस्बीर देखावे में सफल बा, जवना तस्वीर में न्याय खातिर, आ मानवाधिकार खातिर बात कइल आ आवाज उठावल एहू से अरथहीन हो जात रहे काहेंकि हाकिम-कलक्टर, पुलिस आ न्याय करे वाला सब के सब, रैय्यत (नील-खेती करे वाला पीड़ित किसान-मजूर) का प्रति संवेदनहीन आ निलहा-अंग्रेजन के पक्ष लेबे वाला रहे। संघर्ष का एही क्रम में गाँधी के चम्पारन आइल आ सत्याग्रह का जरिये पीड़ित, शोषित रैय्यतन के न्याय दियावल, बहुत बड़हन उपलब्धि रहे। चम्पारने ना, ओघरी सउँसे भारत-भूमि खातिर गाँधी, गान्ही बाबा बन गइले। कवि गुलरेज, फ्री-वर्स आ नया कविताई का लय-विधान में ई 'सत्याग्रह-गाथा' लिखे के अनूठा प्रयास कइले बाड़न।

आनन्द सन्धिदूत के रचना 'अग्निसंभव' महात्मा गाँधी का विचार-दर्शन के अगिन-पाखी (अग्नि पक्षी) हऽ। प्रबन्ध काव्य का रूप में रचाइल एह रचना में गाँधी जी के जीवन-वृत्त, उनका करनी-धरनी, बिचार-दर्शन आ उनका संघर्ष का व्यापकता पर प्रकाश डालत कवि अपना कल्पना प्रवणता का जरिये जीवन का ओह बिचार-दर्शन का मूल्य के बखान कइले बा, जवन अजुओ देश-दुनिया खातिर प्रासंगिक बा।

भोजपुरी में प्रबन्ध काव्य के एगो समृद्ध परम्परा बा। श्री बिमलानन्द सरस्वती (बउधायन), रामबचन 'अँजोर' (कालजयी कुँवर सिंह), अविनाश चन्द्र 'विद्यार्थी' (सेवकायन, कौशिकायन) चन्द्रशेखर मिश्र (कुँवर सिंह), अनिरुद्ध त्रिपाठी 'अशेष' (प्रेमायन) आदि समर्थ कवियन का भाव-बोध, विचार-संपन्नता आ अभिव्यक्ति कौशल का जरिये बढ़ल ई पोढ़ काव्य-परम्परा, भाषा आ शिल्प का दिसाईं, शब्द-शक्ति के गहिराई, विस्तार आ भाव-गांभीर्य पवले बिया। एगो लमहर अन्तराल का बाद, आनन्द सन्धिदूत जइसन समर्थ-सफल कवि के स्रम से रचाइल-बिनाइल ई प्रबन्ध-रचना सचहूँ खास बा। स्वतंत्रता-आंदोलन के भोजपुरिया नायक बीर कुँवर सिंह का बाद, स्वतंत्रता, न्याय आ समानता खातिर संघर्ष करे वाला युग-प्रवर्त्तक, राष्ट्रीय नायक का रूप में 'गाँधी' जइसन व्यक्तित्व के प्रबन्ध-काव्य खातिर 'अग्निसंभव' का रूप में चुनल आ उनका वैयक्तिक वैशिष्ट्य के पुनः अपना भाषा में सिरजल आनन्द संधिदूते जइसन रचनात्मक निष्ठा से संपन्न कवि का वश के बात रहल।

मानवता, सामाजिक-न्याय आ स्वतंत्रता खातिर बिना तोप-तलवार, बिना हथियार लड़े वाला महात्मा गाँधी के सत्य, अहिंसा आ सत्याग्रह वाला संघर्ष के प्रासंगिकता आजो बनल बा। लोकमानस पर आपन अमिट छाप छोड़े वाला गाँधी जी का व्यक्तित्व, शिक्षा, आत्मसंघर्ष, समाजिक हस्तक्षेप, आ शोषित-पीड़ित-दलित सामान्य जन का उत्थान आ मूल अधिकार खातिर उनका प्रेरक नेतृत्व के अपना रचनात्मक शक्ति से पुनरुज्जीवित कइल, कवि सन्धिदूत का सृजन-कौशल के प्रमान बा। ऊ काव्य का सीमा-संभावना के ध्यान में राखत, गाँधी जी का कार्य-प्रणाली, भाव-विचार, आदर्श आ दार्शनिक भाव पर बेसी ध्यान देले बाड़न। एम्मे कवि के आपन अनुभव, बोध आ दर्शन सम्बन्धी ज्ञान समाविष्ट हो गइल बा। अपना गुरु परमहंस स्वामी दक्षिणामूर्ति से प्राप्त ज्ञान आ जानकारियन के सरधापूर्वक सम्यक उपयोग सन्धिदूत जी एह प्रबन्ध-रचना में कइल बाड़न। एतना बड़हन प्रबन्ध-रचना में, वृत्तान्त का साथ तथ्यपरक जानकारियन के सुव्यवस्थित उपयोग आनन्द सन्धिदूत का धैर्य आ स्रम के गवाही देत बा। भाषा प्रवाह आ लय- के प्रशंसा का कइल जाव? कवि अपना भाव-प्रवाह में जहाँ जइसन, सुबिधाजनक आ प्रासंगिक शब्द उचरल बा, निसंकोच प्रयोग कइले बा। संस्कृत, अंग्रेजी, तत्सम-तदभव आ सँग-सँग जन-व्यवहार के ठोंकल-ठेठावल ठेठ शब्द। अगर ई सुभाविक भाषिक-बिनावट ना रहित त जवन विषय-वस्तु बा, ओकर अतना गतिमय, लयबद्ध निबाह ना होइत। अपना भाषा आ ओकरा बाहरो-पूरा राष्ट्र खातिर साल २०१८ के ई दूनों रचना मूल्यवान बाड़ी सऽ।

आप आ आप सबका नेही-छोही लोगन के नया साल शुभता, सार्थकता आ सक्रियता देव, हमार शुभकामना !

••

अशोक द्विवेदी

अपना भाषा-साहित्य के चिन्ता में उपजल क्षोभ

शिवजी पाण्डेय 'रसराज'

भोजपुरी भाषा में लिखल–पढ़ल कइ बरिस से चल रहल बा, बाकिर एकरा भविष्य के लेके हमरा मन से दुश्चिंता आजु ले ना गइल। सोचनीं, त कारन उहे लउकल, जवन पन्द्रह बरिस पहिले लउकत रहे। यानी एकरा संस्थन आ साहित्यकारन में एकजुटता के अभाव, छुद्र राजनीति आ आपसी अनदेखउवल। ई कमी पहिले त कम रहे, बाकिर अब चरम पर लउकत बा। इहो एगो गौर करे वाली बात बा कि भोजपुरिहे लोग, भोजपुरी के हेठ बूझि के, ओके भाव ना दिहल, त दोसरा से का उमेद कइल जाव? घर में कुछ अउर आ बाहर कुछ अउर, यानी घर में त भोजपुरी बोलाइयो जात रहे, बाकिर घर से बहरा बोले में संकोच बनल रहल। हिन्दी में त पढ़ल–पढ़ावल जात रहे आ नोकरी, बेवसाय के भाषा हिन्दी भा अंग्रेजी रहे। हिन्दी के छोड़ीं, ऊ त एगो बोलचाल भा सम्पर्क भाषा के रूप में रहे, बाकिर अंग्रेजी आ उर्दू त कोट–कचहरी, नोकरी–चाकरी आ अभिजात लोगन के भाषा के रूप में काम करत रहे। हिन्दी, अंग्रेजी का आगा कमजोर, आ सहायक आ पिछलगुवे बनि के रहलि। एइजा के पढ़ल–लिखल सम्भ्रांत लोग, हिन्दी के राष्ट्रभाषा ना बना पावल, आ उहे लोग आगा जाके एके भाषाई पेंच के अझुरा दिहल। एही तरे भोजपुरिहा कहाये वाला, भोजपुरी के सम्मान दियावे भा संविधान के आठवीं अनुसूची में सामिल करावे के नाँव पर आपुसी हामाहूमी में पैंतराबाजी करे लागल।

केहू भोजपुरी के भविष्य के भाषा ना मानि के, राजभाषा हिन्दी के वकालत करे लागल। आ केहू ई कहि के भोजपुरी आन्दोलन के उपहास कइल कि हिन्दी पढ़े-लिखे आ नोकरी पावे के जरिया बिया, भोजपुरी में तऽ खाली खेती-गृहस्थी कइल जा सकेला। एह देस में सबसे अधिका बोले जाये वाली बोलियन में भोजपुरी बिया, बाकिर बिडम्बना देखीं, छोट-छोट जनसंख्या वाली मैथिली भा डोंगरी अइसन बोलियन के भाषा का रूप में संविधान के आठवीं अनुसूची में बिना रोक-टोक आ बिना कवनो बिरोध के सामिल क लिहल गइल, बाकिर अबहीं ले भोजपुरी भाषाई गुण आ साहित्य के संपन्न भइलो पर मान्यता से महरूम बिया।

भोजपुरिहा लोग बड़ा महात्वाकांक्षी होला, कवनो चीज के आपन कहें, बतावे आ अपनावे में तनिको संकोच ना करे आ ना कवनो कोस कसर छोड़ेला। एही तरे आपसु में एक दोसरा के नीचा गिरावे आ देखावे में तनिको पीछा ना रहे। भोजपुरी में सैकड़न लेखक, साहित्यकार बाड़न, सैकड़ों साहित्यिक किताब लिखले बाड़न बाकि ओकर प्रचार–प्रसार काहें ना भइल? जे जानत बा उहो, ओकर चरचा नइखे करत। ऊ ई समुझत बा कि कहीं हम एसे छोट ना हो जाईं? एही नाते ऊ नाँवें नइखे लेत। अपना भाषा साहित्य का प्रति ओकर ना त कवनो मोह लगाव बा ना कवनो जिम्मेदारी आ नाहिये कवनो स्वाभिमान। बटलो बा त ओकरा भीतर कतने निजी पूर्वग्रह आ भेद बा। एतहत बड़ देस में प्रोत्साहन सम्मान आ प्रतिष्ठा के हकदार कुछुवे लोग बा। ए कुछ लोगन में जादातर लोगन पर प्रभावशाली लोगन क किरिपा बा।

भोजपुरी संस्था भा अकादमी कुछ लोगन का जेब में बा। जहाँ जेब में नइखे उहाँ राजनीतिक प्रभाव में बा। भोजपुरी भाषा आ साहित्य पर एकेडमिक काम करे वाला कुछ संस्था, अकादमियन आ अध्ययन केन्द्रन में अकादमिक कार्यक्रम का नाँव पर आपन ग्रुप भा अपना पक्ष के पसंदीदा लोगन के अपना कार्यक्रम में बोला के खानापूर्ति क दिहल जाता। ना त कवनो गायक के बोला के ओकर कार्यक्रम करा के छुट्टी पा लिहल जाता। एह तरह से देखल जाउ त असइनका संस्था, अकादमी भा अध्ययन केन्द्रन से पच्छपात का कारन भोजपुरी के लाभ से जादा, नोकसाने ढेर लउकत बा। असहीं भला रउवें बताईं कि एह तरह के माहौल में भोजपुरी कइसे अपना भाषा–साहित्य के विकास करी।

एगो विसंगति अउरी बा, ऊ ई कि भोजपुरी के नाँव पर नया-नया पैदा होखे वाला झंडाबरदारन के बीच उहे प्रतिद्वंदिता अगड़ा-पिछड़ा, दलित आ क्षेत्र के नाँव पर बा जइसे राजनीतिक दलन में बा। भोजपुरी के भाषा आन्दोलन के एह नायकन में अपना-अपना माथे मउर बन्हला के होड़ मचल बा। कुछ लोग हिन्दी का नकल में पचासन बरिस पुरान प्रगतिवादी, जनवादी, साम्यवादी, हठवादी आदि-आदि बेमरिया लेले भोजपुरियो भाषा-साहित्य के खउरे-खरकोंचे आ एकरे आड़ में बड़का बुद्धिजीवी कहाये खातिर एड़ी-चोटी के जोर लगवले बा। समाज के जाति, वर्ग में बाँटि के द्वेष बढ़ावे वाला अइसन लोग भाषा आ साहित्य के भला करो भा ना करो, भोजपुरी लोक संस्कृति के धज्जी उड़ावे में कवनो कोर कसर नइखे उठा रखले। कुछ लोग किरिया खा के बइठल बा कि भोजपुरी में आजु ले जवन कुछ लिखाइल–पढ़ाइल बा, ऊ सब भिखारिये ठाकुर तक बा। भिखारी से आगा ऊ लोग भोजपुरी के बढ़न्ती–घटन्ती का बारे में सुने, सोचे के तेयार नइखे। ऊ लोग समूचा भोजपुरी साहित्य के 'गबरघिचोर', 'दमाद बध', 'बेटी बेचवा' से आगा जाये देहल नइखे चाहत। अइसन संकीर्ण दृष्टि, भाव आ विचार से एह नया युग में भोजपुरी भाषा के कवना भविष्य के निर्माण होई।

भोजपुरिहा लोगन के भाव–विचार आ गोल आ महत्वाकांक्षा के हिसाब से 'आपन–आपन डफली, आपन आपन राग' यानी अलग–अलग राग अलापे वाला लोग 'भोजपुरी' के दीन–दशा का सुधारी? अलगा–अलगा मंच, संस्था खोलि के भोजपुरी के भाषा साहित्य कला का नाँव पर खाये–कमाये भा पुजाये में लागल ई सभ भोजपुरी के शुभचिंतक आ मलिकारे बा। ई अच्छो रहित, एह माने में कि संविधानिक मान्यता आ ओकरा प्रतिष्ठा खातिर, एकजुट, एकसुर में आवाज लगाइत लोग ओसे सरकार पर दबाओ बनित आ एकजुटता के संदेशो जाइत।

जे भोजपुरी में, भोजपुरी खातिर, बिना लोभ-लालच आ मान-प्रतिष्ठा के परवाह कइले बरिसन से चुपचाप रचनात्मक काम कर रहल बा आ कइले जा रहल बा, ओके नजरअन्दाज कइ के, एक-दूसरा के टँगरी खींचे वाला ई कथित भोजपुरी-हित चिंतक मठाधीशे लोग बा। हमरा त चिंता होला कि भोजपुरी के कबो अगर मान्यता मिल गइल आ ओकरा नाँव पर पढ़े-पढ़ावे भा पुरस्कार-सम्मान के इन्तजाम होइयो गइल त ओकरा बाद के स्थिति केतना बिद्रूप आ भयंकर होई? तब त एक दोसरा क कपार फोरे में ना हाथ लउकी, ना ढेला। आवे वाला समय में बानर आ बिलाईं के बँटवारा ले निमने नू बा कि मुर्गा बाँड़े रहसु।

कुछ लोग अश्लील गीत, कविता, लिखि–लिखि गायकन से गवावत बा आ ओही से आपन खर्चो चलावत बा। ओह लोगन के ई नइखे बुझात कि एह गीतन के सुनि के लोग एह भाषा के केतना कुआदर दिही। ई लोग ना तऽ लजाते बा ना भविष्य से डेराते बा। भारत के विशिष्ट लोकभषन में भोजपुरी के आपन एगो पहिचान बनल बा। बाकिर शासकीय स्तर पर 1990 में जवन जनगणना भइल, ओमे जे पढ़लो–लिखल लोग रहलन उहो लोग मातृभाषा का कालम में हिन्दी लिखववलन। अनपढ़–गँवार लोग से बिना पुछले जनगणक लोग अपनहीं हिन्दी भाषा भरि देसु। अतने ना अधिकांशतः मुस्लिम भाई लोग, जे मदरसा शिक्षा से जुड़ल रहे ऊ भोजपुरिहा होइयो के आपन मातृभाषा अरबी आ कहीं–कहीं उर्दू लिखवावल लोग। सरकारी गणना के आधार पर भोजपुरी बोले वाला लोगन के असली संख्या के सही अनुमाने ना भइल। भले ताल ठोंकीं, कि भोजपुरिहन् क संख्या देस में अन्य भाषा भाषियन से अधिका बा, बाकिर साँच ईहे बा कि कागज पर कुछ अउर बा। इहे हालि कि 'केकरा प करीं हम सिंगार पुरुख मोर आन्हर'। मातृभाषा का दिसाईं सचेत आ जागरूक ना भइला के कारण, ई समृद्ध भाषा भोजपुरी, ना त रोजगार के भाषा भइलि, ना व्यवहार भा संस्कारे के। अपना संघर्ष, सहनशीलता से हर बिपरीत जगह, आपन जगह बना लेबे में दक्ष भोजपुरिहा अपना मातृभाषा के खुदे हीन मानेलन। जे अपना माई के भाषा भुला जाई, ओकरा दूसर का इयादि रही आ कवना विश्वास के साथे ऊ अपना भाषा–संस्कृति के परचम लहराई? झुठिया प्रदर्शन में आपन लात तर के जमीन छोड़ल एही के कहल जाला।

संख्या के हिसाब से हर नगर के हर क्षेत्र में, भोजपुरिहा लोगन के पइसार आ प्रभाव बा, बाकिर भोजपुरी भाषा–साहित्य के, लेके होखे वाला आयोजनन में एह लोगन के अनुपस्थिति अखरे लागेले। अइसना में एह लोगन के कवनो रूचि ना लिहल अउरी क्षोभ पैदा करेला। भोजपुरी आन्दोलन आ भाषा के लेके होखे वाला प्रदर्शन में भोजपुरिहा लोग के ना अइला के कारन सरकार पर कवनो दबावे ना बने। 'एक त बबुनी अपने गोर, दुसरे लिहली कमरी ओढ़ि'। गनीमत बा, कि एतना अंतरबिरोध, आपुसी अनदेखउवलि आ हामा–हूमी का बादो भोजपुरी के मूक रचनात्मक आन्दोलन चल रहल बा। भोजपुरी में लेखन आ प्रकाशन के स्तर बहुत ऊँच भइल बा। भोजपुरी का कवि, लेखकन का निरंतर सक्रियता से, भोजपुरी साहित्य समृद्ध आ सम्पन्न हो रहल बा, भलहीं एह सब के ईमानदार चरचा आ आकलन नइखे होत। तमाम अनिश्चितता आ निराश करे वाला माहौल का बीच, अजुओ हम एप्पर भरोसा कइले बानी कि आवे वाला समय कउवा आ हंस के पहिचान जरूर करी। जय भोजपुरी! ••

❑ ग्रा० पो०-मैरीटार, बलिया-277001

दू गो कविता

✍ अशोक द्विवेदी

जौन बाँचल रहे, तवन

आज हम टोल के अनमन देखलीं ।
गाँव में, गाँव के उलझन देखलीं ।

तेज आन्ही के गुजरला का बाद
जौन बाँचल रहे, तवन देखलीं ।

उनका ठेहुना क दरद ना लउकल
बूढ़ में, अस क लड़िकपन देखलीं ।

उहे सरिसों-मटर के प्रेम-मिलन
घाम आ सीत के छुअन देखलीं ।

पीर बिछुड़न क आ मिलन के खुशी
हिय का आँखिन से ऊ धड़कन देखलीं ।

लेके छिपुली क हम गरम हलुआ
माई का हाथ में बचपन देखलीं ।

उनका हटते इ आँखि भरि आइल
खीन-नयनन क जब आँगन देखलीं ।

लकम

समय के सरौता पर
कसइली नियर
टुकी-टुकी कटात ---
छिन-छिन में बँटात उनकर
सउँसे जिनिगिये छिटाइ गइल
तब्बो उनकर उ 'तोर-मोर'
'आपन-आन' वाला लकम
ना छूटल ।

हमके उनुका पर ना ,बलुक
उनके दिन-रात खोबसे आ
गरियावे वाला लोगन पर
हँसी बरल....अचम्भो भइल
कि ऊ लोग
उनहीं का राह पर चलत रहे
आ ओही लकम के शिकार रहे । ••

भोजपुरी के दशा आ दुर्दशा

अनिल ओझा 'नीरद'

जाने काहें, हमरा कबों–कबो ई भ्रम हो जाता कि भोजपुरी के विकास हो रहल बा आ कबों–कबों, इहो भ्रम हो जाता कि, ई हमार खाली भ्रम ना ह, सचहूँ एकर विकास हो रहल बा, लेकिन तब, तुरन्ते इहो प्रश्न मन में उठे लागता कि आखिर कवना दिशा में? दशा के दिशा में, कि दुर्दशा के दिशा में?

असल में ई भ्रम, एह से पैदा हो रहल बा कि भोजपुरी के नांव पर आजु के दिन, पूरादेश में, अतना ना मठाधीश पैदा हो गइल बाड़े कि ई बुझाते नइखे कि के असली, के नकली? के सच्चा, के झूठा, के काम करे वाला आ के भरमावे वाला? आजु जेकरे के देखीं ऊहे अपना पाकिट में एगो जिला स्तर के भोजपुरी संस्था, केहू प्रान्तीय स्तर के भोजपुरी संस्था केहू अखिल भारतीय स्तर के भोजपुरी संस्था आ केहू विश्व स्तर के भोजपुरी संस्था, लेके घूमि रहल बा। काम–धाम तेरह–बाइस, बाकिर प्रचार चरम सीमा पर। केहू अध्यक्ष बनि के नाचऽता, केहू मन्त्री बनि के झूमता। जइसे ऊ लोग कवनो संस्था के अध्यक्ष, मंत्री ना होके, देशे के राष्ट्रपति आ प्रधानमंत्री बनि गइल होखे आ अब बस भोजपुरी रूपी नाइ के माझी उहे लोग हो गइल बा। भोजपुरी ओह लोगन के प्रजा आ ऊ लोग ओकर पालनहार। अब ऊ लोग जइसे चाही त चूल्हा में त ई पहिलहीं से झोंकाइलि बिया, थोरे अउरी धनकाइ के फूँकि–तापि दियाई। हालाँकि ई काम अतना आसानो नइखे, कारण कि भोजपुरी एगो लमहर राह तय करता, आजु जवना मोकाम पर पहुँचि चुकल बिया, ओहिजा से एकरा के एकदम रसातल में भेंजल कठिन बा। लेकिन ओकर सम्बेधानिक मान्यता वाला असली मोकाम मिलि पाई, ई आज–काल्हु के मठाधीश लोगन के बूता त असंभवे लागता। ऊ भले काहें ना कवनो सरकारी भोजपरी अकादमी होखो, चाहें बी.एच.यू. के भोजपुरी अध्ययन केन्द्र।

जाने काहें, हमरा मन में, एगो भरम पलत रहऽता कि एह देश में दू गो काम ना होई।... एगो त राम–मंदिर कबों ना बनि पाई, आ दोसर कि भोजपुरी के भाषा के रूप में सम्वैधानिक मान्यता कबों ना मिलि पाई। आ दूनों में कारण एके लउकता बा। आपुसी रार आ ओमे होखे वाला राजनीतिक खेल। जइसे राम–मंदिर के नाम पर, देश के नेता खेलत आ रहल बाड़े। ओही तरह के खेल, आजु एक भोजपुरी के नाम पर बनल मठाधीश आ नेता–एकरा सँगे खेलि रहल बाड़े। हमरा कबो–कबो इहो भ्रम होखे लागता कि राम मंदिर के विरोधी, एह देश में, जतना मुसलमान नइखन ओह से बेसी हिन्दू बाड़े। जब टेन्ट में बइठल राम नेतन के जिताइये देत बाड़े त फेरू उनुका खातिर मंदिर बनवला के का काम? का जाने मंदिर बनि गइला के मुद्दा ना रहि जाई हमनी के पास? एह राजनीतिक खेल आ हामाहूमी में देश के न्यायालयो के कम 'रोल' नइखे। ऊहो तारीख प तारीख डाल रहल बा।

अइसने खेल, भोजुपरी का संगे खेलल जा रहल बा। पहिले त टाँगी

के बेंट लेखा, एकर अपने लोग, एकरा के काटे में लागल बा, खास क के ऊ लोग जे बा त एही क्षेत्र के, बाकी पहिले से हिन्दी में स्थापित हो चुकल बा, भा नया–नया स्थापित होखे के कोशिश क रहल बा, हिन्दी के सहारे मिले वाला रोजी–रोटी, जइसे स्कूल शिक्षक, कालेज भा विश्वविद्यालय के प्रोफेसरी के नोकरी के लालच का चलते ठीक रेल के पटरी के दूरी लेखा समानान्तर दूरी बना के चलि रहल बा। ओहू में जे एकरा लेखन कार्य से जुड़ल बा आ दू चारि गो पुरस्कार–सम्मान पा गइल बा आ साहित्य अकादमी तक ले जोगाड़ में बा, ओकरा ई भय हो रहल बा कि अगर भोजपुरी के सम्वैधानिक मान्यता मिलि गइल, तब त इहो एगो भाषा के रूप में ओकर दावेदारी पेश करे के हकदार बनि जाई। फेरू इहे लोग इहो तर्क देबे से नइखे चूकत कि भोजपुरी के अलग से अगर मान्यता मिलि जाई, त हिन्दी के राष्ट्रभाषा बने के क्रम में बड़हन बाधा उपस्थित हो जाई, काहें कि पूरा देश में, जवन हिन्दी, पहिलहीं से अल्पमत में बा, (काहें कि दक्षिणी भारतीय क्षेत्र से त एकरा के पहिलहीं से कवनो समर्थन नइखे, अइसना में) अगर उत्तरो भारतीय क्षेत्र से, भोजपुरी अलग हो जाई त हिन्दी के हिस्सा से अब इहो पनरह–बीस करोड़ के संख्या कम हो जाई, तब फेर एह देश में हिन्दी का नाँव पर रोजी–रोजिगार फइलावे वाला लोगन के का होई?

इहे कारण बा कि भोजपुरी आन्दोलन के ई खास विरोधी लोग, जेकर सरकार में पहिलहीं से पैठ बा, पहुँचि जाता आ सरकार के ई कुल्हि कारण गिनवावत, ओकर कान भरल शुरू क देता, जवना के चलते भोजपुरी के काम, बनत–बनत, बिगड़ि जाता। ई विशेष हिन्दीवादी लोग अउरी खतरनाक बा।

एहिजा हमरा ई बात समझे में नइखे आवत, कि अइसन दलाल लोग, मैथिल भाषा के मान्यता के बेरि कहाँ सूतल रहे, आ तब ई लोग तर्क काहें ना उठावल कि मैथिली के अलग हो गइला से, हिन्दी के रीढ़ के हड्डी टूटि जाई, आखिर ओहू क्षेत्र से त हिन्दी के लेखक–रचनाकार कम नइखन रहल, भा अबहिंओ नइखन। बाकिर बहुत शान्ति से मैथिल वाला लोग आपन हक ले लीहल, काहें कि ओह लोगन के बीच भोजपुरिया हिन्दी वाला विभीषण ना रहले आ अगर जो रहबो कइल होइहें त अपना मैथिल भाषा के होखे वाला लाभ के चलते, विभीषण बने खातिर तेयार ना भइले। एकरा के नू कहल जाई सच्चा मातृ मातृभाषा प्रेम।

जवना के जीवन्त अभाव, भोजपुरी भाषी लोगन में, उनुका बीच रहे वाला अपने दोगला किस्म के लोगन के चलते, झेले के पड़ि रहल बा। एगो अउरी जरूरी काम, जवन सरकारी अभिलेख भा पंजीकरण में कवनो भाषा–भाषी के सही गिनती खातिर जरूरी ह 'गणना', कि सचहूँ एह भाषा के बोले वाला एह देश में केतना संख्या में बाड़े? भोजपुरी भाषी लोग एमें हिसदारी नइखन कइले आ ऊ काम राष्ट्रीय जनगणना के समय आपन मातृभाषा भोजपुरी नइखन लिखववले, जवना के चलते सरकारी आंकड़ा एह बात के माने खातिर तेयारे नइखे होत कि एह देश के हतना लोगन के मातृभाषा भोजपुरी हऽ। जवना के चलते, सरकारी सिस्टम में जा के ई काम अंटकि जाता, जबकि मैथिल भाषी लोग ई काम आजु से तीस–चालिस बरिस पहिले से शुरू क देले रहे आ जवना के फल ओह लोगन के मीलल। अब भोजपुरी में, एह काम में, केहू अपवाद होखे त हम ना कहि सकीं, बाकी ई अपवाद, भोजपुरी के कुल्हि आबादी के, मुश्किल से एक प्रतिशत से बेसी त कवनो हाल में ना होई, भा ओहू से कम होई। भोजपुरी भाषी त बस अपना के भोजपुरिया कहाये में आपन शान समझतारे आ एही बल पर ऊ मान्यता के जग जीति लीहल चाहतारे। आजु के भोजपुरी आन्दोलन वाला दल में रउआ ध्यान से देखीं, त जाने कतना लोग–फलाना भोजपुरिया, चिलाना भोजपुरिया, ठिकाना बिदेसिया, भइया भोजपुरिया जइसन सैकड़न नाँव मिलि जइहें, जइसे अब इहे उनुकर गोत्र होखे आ एही के बल पर ऊ महान भोजपुरी भाषी का श्रेणी में आ जइहें, आ आपन सरकारी हक पा जइहें। एगो अउर बात हम इहाँ इयादि दिया दीहल चाहतानी कि ठीक राम मंदिर आन्दोलन लेखा लोगन में एगो नया नारा चलि पड़ल बा– 'जय भोजपुरी, जय भोजपुरिया' आ इहे अब एह लोगन के दुआ सलाम के सम्बोधन हो गइल बा, ठीक 'जय श्री राम' लेखा जवना के जगह पहिले गाँव में लोग, 'जय रामजी की' भा 'राम–राम' कहि के दुआ सलाम करत रहल हा। बस एही से हमरा संदेह हो रहल बा कि अगर इहे हाल रहल त, एह देश में, ना कबों राम मंदिर बनी ना भोजपुरी के सम्वैधानिक मान्यता मिली, कम से कम हमरा जीयत जिनिगी त नाहियें मिली, कारण अतना कम समय में, सरकारी सिस्टम के खाना–पूर्ति नाहियें हो पाई। बस एही से हमरा भ्रम हो रहल बा कि भोजपुरी भाषा मान्यता के आन्दोलन के कवनो दिशा नइखे मिलि पावत आ ऊ आपन दुर्दशा करा रहल बा आ ई हो रहल बा खाली एकरा दिशा भ्रमित आत्ममुग्ध मठाधीश लोगन का

चलते, जेह लोग का आजु खाली अपना चर्चा में रहे के फिकिर बा, भोजपुरी के विकास के ना।

एकरा ठीक विपरीत भोजपुरी के साहित्य समृद्ध बा आ ऊहो कवनो भोजपुरी–संस्था के सहयोग के बिना। ओइसे त अभीं ले भोजपुरी में अइसन कवनो संस्था बनबे ना कइल जे भोजपुरी लेखक के किताबि अपना खर्चा पर छापि के भोजपुरी साहित्य के भण्डार भरे में सहयोग कइले होखे, ओइसे एक–आध गो अपवाद भइल होखे त हमरा जानकारी में नइखे। हम खुद आपन कई गो किताब कई गो संस्था से छपववले बानी, बाकी सबके छपाई के खर्चा हमरा खुद देबे के पड़ल बा। आ एगो शायद हमहीं अइसन नइखीं, हमरा लेखा निन्यानबे प्रतिशत लोग अइसने बा। कतना लेखक लोगन के बारे में त इहाँ तक सुनले बानीं, जे ऊ लोग आपन किताबि छपवावे खातिर, आपन खेत तक बेंचि के पइसा जुटवले रहे। तबो एकरा खातिर हम कवनो संस्था के दोष नइखीं देत, पहिला बात त ई कि जब तक भोजपुरी भाषा ना बनल रहे तब तक ओकरा के छापे के जोखिम के उठाइत? आ अगर छापिये दीत त ओकर करित का? आजु के दिन त हिन्दियो के किताबि केहू कीनि के नइखे पढ़ल चाहत त फेर भोजपुरी के का बिसात? आ हमरा बुझाला कि भोजपुरी के विकास में ई काम सबसे बेसी खतरनाक आ बाधक बनल। लेखक खुद आपन किताब छपवा के सामने ले अइले, लेकिन ओकर केहू किनवइया ना मिलल, हारि पाछि के ऊ मुफत में बाँटल शुरू कइले, तबो पढ़वइया ना मिलल। एही चलते भोजपुरी के किताबि घर–घर तऽ छोड़ीं, हाँ लेखक के किताबि हर लेखक तक ना पहुँचल। हमार ई दावा बा कि आजु जेतना लेखक भोजपुरी में बाड़े ऊ खुद दस–बीस गो से बेसी लेखक के किताबि ना देखले होइहें आ नाँव त एह ले बेसी के जानतो ना होइहें शायद।

ऊ त भला होखे बीच–बीच में प्रकाशित होत रहत, भोजपुरी पत्रिकन के, जवना का चलते कुछु लोग सभा–संस्था के समारोह आ चर्चा में आइल आ ढेर लोग एक दोसरा के नाँव भर जानि पावल। लेकिन फेर सवाल उठता कि का ऊ पत्रिका ढेर दिन तक टिकि पवली स एह बाजार में? त काहें? ऊहे कीनी के ना पढ़े वाली आदति का चलते/कतने व्यक्तिगत पत्रिका त असमय काल कवलित हो गइली स, हलांकि कुछु लोग त आपन नाँव शहीद में लिखवावे खातिर पत्रिका निकालल, कि चलऽ पत्रिका भले मति चलो, बाकी एक–आधो अंक निकलि के बंद हो जाई त कम से कम, भूतपूर्व संपादक में हमार नाँव त जिनिगी भरि खातिर रहिये नू जाई। हलांकि कई गो संस्था अपना चन्दा के फंड से लगातार कुछु पत्रिका निकलली स, जइसे जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, विश्व भोजपुरी सम्मेलन, सम्मेलन पत्रिका, पूर्वांचल एकता मंच, बाकिर खाली चन्दा के पइसा से कब तक पत्रिका छपि पाई भाई, ग्राहको त चाहीं। गाँहक ना मिलले त धीरे–धीरे बन्द होखत चलि गइली स, बाकी अइसनो संस्था अभी बाड़ी स जवन अपनो खर्चा से पत्रिका लगातार निकालि सकत बाड़ी स, बाकी उहवाँ उहे समस्या खड़ा हो गइल बा। मठाधीशी विचार वाला लोगन के नेतृत्व। गिनि गूँथि के एगो पत्रिका कई साल से, एह बाजार में, सीना तानि के खड़ा बिया "पाती" बाकी ओकर एक मात्र कारण बा कि ऊ केवनो संस्था के अधीन ना होके डॉ. अशोक द्विवेदी के अपना बूता पर अपना त्याग आ खर्चा पर निकलि रहल बिया आ शान से निकलि रहल बिया। हमरा हिसाब से भोजपुरी पुस्तकन के आ पत्रिकन के प्रकाशन के ई कुल्हि कथा भोजपुरी के दुर्दशा के कारणन में से एगो हो सकेले।

हम इहाँ ई बातवत चलीं कि हम कवनो भोजपुरी संस्था भा कवनो तरह के भोजपुरी आन्दोलन के विरोध नइखीं करत। अगर ई ना रहिहें स, त जवनो तनी भोजपुरी के आवाज, जहां–तहां, जइसे–तइसे उठि रहल बा ऊहो बन्द हो जाई। हमार कहनाम अतने बा कि आन्दोलन होखो, बाकिर सरकारी सिस्टम में अपना एकजुटता के फिट कइला के बाद होखो ताकी सरकारो भोजपुरियनि के एह माँग के जायज मानि के, एह पर विचार करे खातिर मजबूर होखो। एगो भोजपुरी संस्था हमनियों के चलवले बानीं जा एही कोलकाता में, 'पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद्' के नाँव से, लगभग 46–47 साल तक, एगो भोजपुरी पत्रिको निकलले बानी जा, करीब–करीब 39 साल तक, बाकी हमरा ई कहे में, तनिको संकोच नइखे होत कि, एकरा अलावे भोजपुरी साहित्य के विकास खातिर हमनी का अउर कुछ नइखीं जा कइले, जवना के जरूरत बहुत जादा रहल हा। अब त संस्थो बंद हो गइलि, कुछ व्यक्तिगत कारण से, कुछ पुरान कार्यकर्त्ता लोगन के बुढ़ा के रिटायर हो गइला का चलते, कुछ लोगन के ना जुड़ि जवला का ओजह से। ना त 'भोजपुरी माटी' कवनो अतना कमजोर साहित्यिक पत्रिका ना रहलि हा कि जवना के आजु तक के कवनो भोजपुरी रचनाकार–लेखक परिचित ना होइहें। जाने कतने–कतने नया–नया लेखक रचनाकार लोगन के ई पत्रिका छपे के मोका देले बिया। खैर,

अब त ई बन्दे हो गइलि त अब एकरा पर बात कइला से का फायदा?

अब सवाल ई पैदा हो रहल बा कि जवन भोजपुरी, अपना खांटी लोगन के चिन्तन आ मेहनति का बल पर, बोली से भाषा बनलि आ भाषा से साहित्य, ओकरा दुर्दशा के कारण आजु अपने लोग काहें हो रहल बा? हम इहां बतावत चलीं कि, भोजपुरी भाषा आजु अइसन तइसन ना, बलुक मजिगर साहित्य के मालिकिनि बिया, हलांकि हम इहां इहो बतावल चाहत बानी कि, भोजपुरी में आजु जतना साहित्य उपलब्ध बा, हम ई दावा नइखीं करत कि ऊ ओकर अकूत सम्पत्ति बा, अभी ओकरा में अउर मजिगर साहित्य– भण्डारण के जरूरत बा, लेकिन तबो ई कहे से हम पीछे नइखीं हटत कि अभीं ले जवन आ जतने उपलबध बा, ऊ भारत के कवनो भाषा के साहित्य के सामने सीना तानि के खड़ा होखे में सक्षम बा। आ अगर कुछु कमी होखबो करी त काल–क्रम से ऊहो पूरा होई। हलांकि हम इहां, इहो दावा नइखीं करत कि, आजु भोजपुरी में जतना लेखक, रचनाकार बाड़े ऊ एकदम ठीक दिशा में रचनारत बाड़े कारण सइ में से, बीस–पच्चीस प्रतिशत से बेसी लोग अइसन नइखन जे गम्भीरता से आ सुसंगत तरीका से एह कर्म में जुड़ल बाड़े। बाकी में से पच्चीस प्रतिशत ठीक–ठाक लिखि रहल बाड़े आ एकरा बाद के बकियवा पसाच प्रतिशत अबहियों बेपरवाही से, खाली शहीदन में आपन नाँव दर्ज करे खातिर, खाली तुकबंदी आ अवांट–बंवाट कथा–कहानी उपन्यास दे रहल बाड़े जवना से भोजपुरी भाषा के बचावल जरूरी बा आ साहित्य से ओकरा के बिलगावल जरूरी बा।

अब एगो बात जवन हम कहल चाहत बानीं ऊ ई कि बनो चाहें जेतना संस्था भोजपुरी के नाँव पर करो कवनो तरह से एकरा भलाई के काम, केहू साहित्यिक करो, केहू सामाजिक करो, केहू सांस्कृतिक करो, काहें कि एह सब क्षेत्र में भोजपुरी के विकास के जरूरत बा, बाकी एकरा साहित्य के बचावे खातिर सहेजे खातिर आ एकरा उचित विकास खातिर, एगो संस्था, अखिल भारतीय स्तर पर अइसन बनो, जवन देश के कवनो शहर में, जहाँ सुगमता से भोजपुरिया लोगन के पइठ हो सको, उहाँ एगो भोजपुरी साहित्य संरक्षण केन्द्र स्थापित होखो, जहाँ भोजपुरी के हर साहित्यकार के ऊ रचना जवन गम्भीर सुसंगत, साहित्य लोकोपकारी आ उत्तम रचना का श्रेणी में आवत होखे, ओकर संचयन, संग्रह होखो आ उहां से ओकर प्रचार–प्रसार आ बिक्री के व्यवस्था होखो। हलांकि भइल त ई ढेर उत्तम कहाइत कि अइसन संस्था बनो जे भोजपुरी के उत्तम साहित्य के प्रकाशन के भार अपना ऊपर ले लेउ आ पुस्तक प्रकाशित कके भोजपुरी साहित्यकारे लोगन में खाली अपना लागत मूल्य पर उपलब्ध करावे के बीड़ा उठा लेउ। काम तनी कठिन बा, श्रम साध्य बा, आर्थिक परेशानी सबसे बड़ कारण होई एह में, हमरा मालूम बा भोजपुरी क्षेत्र के नब्बे प्रतिशत लोग एह में कवनो तरह के आर्थिक सहयोग ना करी, अपना गरीबी के हवाल देके, बाकी सम्पन्न लोगन में से अगर दसो प्रतिशत लोग एकरा खातिर तेयार हो जाई त भोजपुरी साहित्य के विकास में ई मील के पत्थर साबित होई आ अगर ई ना सम्भव हो सकल त कम से कम संचयन केन्द्रे के माध्यम से, एकर काम पहिले शुरू कइल जा सकेला, आ ऊ एह तरह से कि भोजपुरी के जेतना लोग साहित्य रचि के आपन पुस्तक अपनहीं छपवा के मुफ्त में बांटि के आपन प्रचार कइ रहल बा आ कंगाल होइयो के एकर सेवा कइ रहल बा, ओह लोगन में से उत्तम श्रेणी के किताब, ओही लोगन से, भले आधे दाम पर भा लागते मूल्य पर ओह लोगन से खरीद के, पांच दस प्रतिशत–आपन खर्चा जोडिके भोजपुरिया लोगन के उपलब्ध करावे के चेष्टा शुरू होखे। तनी भाग दउड़ होई, तनी लोगन के जागरूक करे के परी, पोल्हावे–मनावे–समझावे के पड़ी, राजी करे के पड़ीं, बाकी अगर हमनी मिलि के चेष्टा करीं जा, त धीरे–धीरे एह काम में प्रगति हो सकेला। एगो काम अउर हो सकेला एकरा से कि जवन सरकारी सिस्टम बार बार इहो कहि के एकरा के भाषा माने से नकारि देता कि एकरा में साहित्य कहां बा? बड़लो बा त उत्तम कहाँ बा, ओकरा मुँह पर, ओही केन्द्र से उत्तम किताबन के बण्डल उठा के ओकरा मुँह पर मारल जा सकेला कि देखि ले भाई, इहवाँ बा। एह स्थिति में, एकरा आन्दोलनरत नेतृत्व का, हर लेखक से अलग–अलग ओकर किताब मंगवावे के ना पड़ी भा खाली जानकारी के आधार पर ओकर एगो लिस्ट दे के काम चलावे के ना पड़ी। अगर ई हो जाई त प्रत्यक्षम्– प्रमाणम् संगे संगे हो जाई। हालांकि ई काम सरकार के भोजपुरी अकादमियो कइ सकत रहली स बाकी अभी ले कवनो से अइसन पहल ना शुरू भइल। ना होखे के कवनो उमेदि बा।

बात बहुत कहे के बा, पन्ना ओरात चलि जइहें स, पियाजु के छिलका ओरा ना पाई। बस एगो अन्तिम बात का ओर इशारा क के आपन बात खतम करतानी, जवन भोजपुरी के दुर्दशा आ बिनाश, दूनों के कारण में

सुरसा के मुँह लेखा खड़ा बा, आ ऊ बा, एह भाषा के फिल्म क्षेत्र आ फूहड़ गीत गायन परम्परा, जवना के पुरजोर बिरोध, भोजपुरी के हर क्षेत्र से भइल जरूरी बा। भोजपुरी फिल्म इंडस्ट्री त भाई अब हद पार कइ गइल बा। नजीर हुसैन के देखल सपना, नरक के गर्त में पहुँचि गइल बा। फुहड़ई आ नंगई में आजु ई भोजपुरिया हालीउड आ बालीउऽ, दूनों के मात कइ गइल बा, जवन कि एगो खास कारण बनि रहल बा, एकरा मान्यता आन्दोलन के परवान चढ़े में। ओइसे मान्यता मिललो पर, ई हामाहूमी भोजपुरी के राह के रोड़ा बनल रहीं।

कुल्ही मिला के आजु भोजपुरी के हर तरह से, हर क्षेत्र में बँचावल जरूरी बा, ना त ऊ समय दूर ना रहि जाई कि एक दिन ई खाली बोलिये बनि के रहि जाई फेरू से आ धीरे–धीरे शहर त शहर रउआ हमरा गाँव–घर के चौपाल आ अंगना तक से एकर लोप हो जाई। भोजपुरी आन्दोलन का अब जाट आ मराठा आन्दोलन के रूप लेबे के पड़ी, तब गाड़ी आगे बढ़ी। ना त ना। ●●

❑ 28/4, भैरवदत्ता लेन, नन्दी बागान,
सलकिया, हावड़ा, कलकत्ता-711106

लघुकथा

रंग

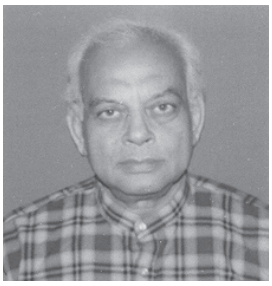

✍ **राजगुप्त**

आजुओ रोजे नियर हम फरहर होके दोकान पर साड़ी बेचत रहलीं। सोझा एगो परिचिताह लगनी गँहकी के परिवार बइठल रहे। जेकरा के हम डाल के चढ़उवा साड़ी पसन्द करावत रहलीं। नया डिजाइन के चारिगो साड़ी पसन्द करा देले रहलीं। पाँचवाँ पीयर साड़ी पसन्द करावे के रहे। मनगरे कइगो लगनौती साड़ी देखवलीं। जल्दी मन पर ना बइठत रहे। पीयर साड़ी पसन्द करावे में बड़ी पापड़ बेले के पड़ेला। एक का जगहा बीसन गो देखावे के पड़ेला। एकराबादो पसन्द होई कि ना, भगवाने जानसु।

आखिर देखावत देखावत एगो पीयर साड़ी गहँकी के पसन आइल। अगुताइल छटपटाइल रहलीं। पसन्द के बाद, गंगा नहइली। परिवार के पसन्द अइला के बाद साथे आइल बूढ़ि मेहरारू पसन्द कइल साड़ी के अपना हाथ में लेके उलटि–पुलटि के देखे लगली। देखत–निरेखत बूढ़ी बोलली, 'रे बहू! एमे त करिया के छींट झाँकऽता। दोसर देखु।'

एक झटका में पटल सउदा बूढ़ी काटि दिहली। 'मरले बा आ फेरू मारे के बोलवले बा।' बुझला अउरी पीयर साड़ी देखावे के पड़ी। रोवाँ–रोवाँ सीहरि गइल। मरता क्या नहीं करता। तिकड़म लगवलीं। हम आपन बलाइ बहुअन पर ओढ़ावत कहली, 'ए बहू! तोहन लोगन के आँखि नया बा। तोहन लोग ठीक से देखऽजा। हमरा त कतहूँ करिया मरिया नइखे लउकत।'

दूनू लड़की–पतोहि देखि के कहली, "ना हो आजी एमे कतहूँ करिया नइखे। कत्थई हो सकेला, करिया नइखे हो, आजी!" अतना सुनला के बाद करिया कत्थई पर बहस शुरू हो गइल। हारि–पाछि आजी बोलली, "ना रे एकदम्म से, साँचो करिया लउकता। नहछू नहावन खातिर करिया के छींटा–मीटा ना भेजल जाला।" "आरे बहू! जब अथाह पानी होखे त कवनो किनारा गगरा भर लेबे के चाहीं। इची अउरी पँवर लऽ जा। दूसर–तिसर देख ल जा।"

एगो दस बरिस के लड़िका जवन बड़ी देरी से अपना कपड़ा खातिर जिद्द करत रहे। साड़ी पसन्द कइला के चक्कर में लड़िका के बाति पर केहू ध्यान ना देत रहे। बाकिर ओकरी नधिअइला पर हमरा अंडस बुझात रहे। हमार ध्यान बिचलित होत रहे। ना अड़ाइल त रूसिआइल लड़िका कड़कि के बोलल, 'घन्टा भर में एह लोगन के एगो साड़ी ना पसन्द आइल। बड़ी पसन्न वाला भइल बाडू जा। पहिले हमार किनवा द जा। हमरी पसन्द में इचिको देरी ना लागी। हेतना मीन मेख निकालऽताडू जा। तब काहें ना बरिजलू जा, जब मामी छोटका मामा (दुल्हा) के बार डाई क के लीलार पर काजर के टीका। लगउवी।' लड़िका तलवार पर जवन ढाल बनल कि सभकर बोलती बन्द हो गउवे। हमार मन खिल गउवे। साँचो, जब दुलहा के करिये रंग से सँवारल बा, तऽ दुलहिन पर एतना मीन–मेख काहें? ●●

❑ राज साड़ी घर, चौक कटरा, स्टेशनरोड, बलिया।

अब तऽ जागहीं के परी!

शारदा पाण्डेय

'वसुधैव कुटुम्बकम्' के आदर्श राखे वाला एह देश के संस्कृति, संस्कार, विचार के का हो गइल बा? ई प्रश्न मन के अशांत बना देता। हम आजु अइसन स्थिति में आ गइल बानी कि अपने लोगन पर से विश्वास उठल जाता, तऽ विश्व के संदर्भ आ परिवेश में का कहि सकऽतानी? बुझाता कि देश अइसन छिपल ज्वालामुखियन के ढेर पर बइसल बा कि कतहूँ से खाली एगो लुत्ती चाहीं। बस कबो बस में, गाड़ी में आगि लाग जाई, कहीं रेल के पटरी उखाड़ दिहल जाई, कहीं जुलूस निकाल के हरिअर–लाल झंडा, टोपी लहराये लागी आ गाँव के लोग आपन घर बेंचिके, छोड़ि के भागे लागी। दंगा हो जाई, लोग मराये लागी। बस तुरंते देशभक्त नेतन के हुजूम सोझा आई। कबो छात्रन के भड़कावे के जाति आ अभिव्यक्ति के स्वतंत्रता के नाम पर, कहीं कवनो विशेष वर्ग के प्रति सहानुभूति जतावे के, केहू के लाखन के मुआवजा दियवावे के, दूध ढरकावे के, सब्जी फेंकवावे के आ चैनल पर आइ के बिध्वंसक आगि उगले के। तब हम कइसे कहीं कि पूरा धरती हमार कुटुम्ब हऽ। जब अपने देश, गाँव के लोग नरेटी काटे, बेटी नासे, तेजाब फेंके के तेयार बा तऽ संसार के नाँव लिहल उपहास कहाई। देश के चिन्ता केहू के नइखे, वोट के, गद्दी के भूख सभका बा। कइसे एक–दोसरा में फूट डालीं? दोसरा के अपराधी आ चोर कहीं, अपना के साधू आ साह कहीं? एही के होड़ लागल बा। दोसरा के बेटा–बेटी, परिवार के अपना धरम में छल बल–लालच से ले लीं, बाकिर आपन बेटी दोसरा किहें जाउ तऽ लइका के खून करि दीं। साम्प्रदायिक सद्भाव के नासि दीं। सहिष्णुता के सूली पर चढ़ा दीं। ईहे जेहाद हऽ।

हमरा नइखे बुझात कि ई पशुता–बहशीपन कब खतम होई। अब तऽ पढ़ल–लिखल, डॉक्टर, इन्जीनियर लइको भरम आ लालच में जेहादी बनि जाता। लोगन के हत्या करऽता, धर्म के नाँव पर। पूरा देश एगो आतंक आ डर में जीयऽता। केहू अपना घरे सुरक्षित चहुँप जाई, एकर भरोसा नइखे। समस्या बा सामाजिक आ भाविक असंतुलन के, धर्म के नाम पर राजनीति कइला के, जाति के नाम पर समाज के बाँटे के। अब देश आ राष्ट्र प्रमुख नइखे, जाति आ वर्ग प्रधान हो गइल बा। एमें दूरदर्शनी चैनली पत्रकारिता आ मीडिया के भरपूर सहयोग बा। केहू के राष्ट्र के शांति सुरक्षा के चिंता नइखे। खाली अपना महत्त्व, प्रभुता, धन–सत्ता के लालच प्रमुख बा, जे सच्चाई के नइखे देखे देत।

धर्म के नाँव पर स्वार्थ आ विभाजन के करिया चश्मा पहिर के ओही से पूरा वातावरण आ भाविक सद्भाव के मुँह पर करिखा पोतत बा लोग। अतना समस्या अतना विरोधाभास कथनी आ करनी में समाइल बा कि केहू के देश आ समाज विकास के चिंता नइखे। खाली विनाश के राह लउकता, आपन झोरी भरे के तृष्णा लउकता, चर्चा में रहे के लोभ बढ़ल जाता। हमरा तऽ ईहे नइखे बुझात कि जवना नियम आ काम से देश में शांति आ विकास हो सकेला, समृद्धि आ सकेला, ओकरा पर एकमत

ना हो के, सार्वजनिक निन्दा–बहस कइके, चैनल पर चिचिआइ के, केकर भलाई करे के चाहऽतानी? भारत के लोकतंत्र पूरा विश्व में अपना जनतांत्रिक स्वतंत्रता खातिर जानल जाला, ओह अभिव्यक्ति के स्वतंत्रता के नाँव पर हम बिघटनकारी भाषण देके जनता के भ्रमित करके, पीड़ित करेके, डेरवावे, उकसावे के प्रयास काहें करऽतानीं?

एह कुल बिन्दुअन के अनेक शाखा बाड़ी स। बाकिर हम खाली दूगो अइसन विषय ले तानी, जवन कुछ दिन से गरम चर्चा के विषय बनल बा। ओइसे एह देश के नवका विशेषता हऽ कि विषय उठावऽ, चर्चा करऽ, आगि लगावऽ आ जनता के भ्रमित, सशंकित कइ के पटा जा। ई जानतो मन मानत नइखे। देश में लगभग चार करोड़ 'घुसपैठिया' आइल बाड़ें। देश के सीमा सुरक्षित नइखे, रात में चोर लेखा, दिन में जंगल–खेत के आड़ लेके, नदी पार कइके बंगलादेश, म्याँमार आ पाकिस्तान से भागल लोग हमरा देश में आइ के बसल जाता। बाहरी लोगन के आवे के लगातार क्रम देखि के सन् 1971 में उहनी पर बान्ह लगावे के सरकार चिन्हित करे के विचार आ उपाय कइलस, बाकिर कवनो कठोर नियम ना बना के, ओकर पालन ना कइके चुपा कइल आ ई संख्या बढ़ते गइल। परिणाम भइल कि देश के कई भाग में जहाँ इनकर संख्या बढ़ल उहाँ भारतीय जनता के अधिका आ सुविधा बाधित भइल।

'घुसपैठिया' छल बल से उहाँ के मूल निवासियन के घर–दुआर छीने आ प्रताड़ित करे लागल। इहे ना ओह स्थान विशेष के संस्कृति के बिनासे के प्रयास कइलस जवन क्रम आजु ले अनवरत करत आवता। एसे मूल निवासी, जनजातियन के तऽ अपमान–प्रतारणा होते बा, देश के सुरक्षा–संरक्षा के खतरा गहराइल जाता। 25 मार्च सन् 1971 से ई समस्या अतना गम्भीर रूप लिहलस कि तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी कानून बना के 'घुसपैठियन' के निकाले भा उनुका देश में फेरू से भेजे के तइयारी कइली, बाकिर उनुकर ई प्रयास खाली कागज पर रहि गइल। बंगला देश से प्रताड़ित हिन्दू–मुसलमान दूनू जातियन के आपन–घर धन छोड़ि के नितांत विपन्न रूप में भारत में आवे के परल। एहू में दू वर्ग बनल। एगो जे अपना आवे के सरकारी रूप से सूचना दीहल ओकरा के शरणार्थी मानल गइल आ मानवीय संवेदना के तहत छः वर्ष के समय दीहल गइल, जेमे ऊ कवनो प्रकार से अपना देश में वापसी के व्यवस्था बना सको। बाकिर दोसर वर्ग जे चोरी–छुपे आइल ऊ 'घुसपैठिया' कहाइल। धीरे–धीरे इहनी के संख्या अतना बढ़ि बढ़ल आ संगे–सँगे कृतघ्नता, दुराचार, खुराफात, आतंक आ दबंगई कि ओहर क्षेत्र के मूल निवासियन के जीवन–धन–जन कुल्ही असुरक्षित हो गइल। बाकिर सरकार कुल्ह उत्पात जानियो के न्यायसंगत कठोर कदम ना उठवलस, ना एके रोके के कवनो उपाय कइलस। बल्कि सत्ता लोलुपता के लालच में ऊ वोट बैंक के राजनीति खेल गइल।

नेतन के उदासीनता आ राजनीतिक चाल से 'घुसपैठिया' स्वच्छंद भइलें सऽ आ आम जनता त्रस्त हो गइल। जेकरा विरोध में ओइजा के जनता विशेषतः आसाम के जनता में आक्रोश फूट पड़ल। जनता सन् 1979–1985 तक लगातार संघर्ष कइलस। 'असमगण परिषद' ओही के प्रतिक्रिया स्वरूप जन्म लिहलस। संघर्ष लगातार खूनी होत रहल, बाकिर समस्या के निदान ना भइल। ई जरूरे भइल कि केन्द्र सरकार (तत्कालीन) आँखि मूँदि लिहलस आ नेता लोग वोट का लालच में उहनी के 'राशन कार्ड' बनवा दिहलस। वोटर लिस्ट में उहनी के नाँव आ गइल, नागरिक के अधिकार मिल गइल आ अब तऽ आधार पत्रों बनल जाता। ब्रह्मपुत्र के लहर के संगे बंगला देशियन के ओर से लगातार घुसपैठ होता आ भारत के अनुकरण पर ओह पार से उहनी के परिचय पहचान पत्र देबे के असंवैधानिक काम कुछ ले दे के लगातार हो रहल बा। अनुमान बा कि दू करोड़ ले अधिका बँगलादेश से, पाकिस्तान से मुसलमान शरणार्थी आ ओले अधिका रोहिंग्या के रूप में लोग अबहियों आ रहल बा। ओमे विशेष रूप से प्रताड़ित–बंगाली हिन्दुओ बा, जेकरा बहिन बेटी के बलपूर्वक मुसलमान बनावे के प्रक्रिया चल रहल बा। कहे खातिर ई बंगलाभाषी लोग हऽ।

बंगाल के मुख्यमंत्री ममता बैनर्जी जे सन् 2005 में संसद–भवन में इन्हनी के भारत में अइला के विरोध में बोलल रहली, ऊ 'रिकार्ड' लिखित बा, आजु उनुकर भाषा, सत्ता–लोभ में बदल गइल बा। ऊ अब वोट के लालच में सत्ता–लोलुपता के कारण उनही के भारत के नागरिक माने खातिर देशद्रोह के भाषा बोलऽतारी। कहतारी कि, 'जदि इहनी के भारत से जाए के कहल जाई तऽ गृहयुद्ध हो जाई, रक्तक्रांति हो जाई। जेकर पूरा दायित्व वर्तमान केन्द्र सरकार पर होई' आपन बात मनवावे खातिर ऊ 'बंगलाभाषी' के कार्ड खेलतारी जेसे पश्चिम बंगाल के जनता के सहानुभूति मिल जाउ। बिना सरकार के अनुमति के अपना कुछ सदस्यन के आसाम में भेजऽतारी, जेकर उद्देश्य बा ओइजा के शांति भंग कइल। 40,000 घुसपैठियन के पहिचान कइल गइल बा, जे आपन परिचय–पत्र नइखे दे पवले। यद्यपि

सरकार की ओर से एक महीना के पूरा समय दीहल बा कि ऊ लोग आपन कागज पत्र जुटावसु ताकि जे उपयुक्त पात्र नागरिक सूची के छूटि गइल बा ओकर प्रवेश कऽ लिहल जाउ। बाकिर कांग्रेस समेत पूरा विपक्ष आ तृणमूल अकारण एके मुद्दा बना के संसद के कार्यवाही बाधित करऽता, जनता में दुष्प्रचार करऽता, देश में अशांति पैदा करे के प्रयास करऽता। जबकि ध्यान देबे के बात बा कि ई काम कांग्रेस के करे के चाहत रहल, बाकिर साठ बरिस तक सत्ता में रहलो पर वोट के लालच के चलत, तुष्टीकरण के नीति के चलत ऊ सरकार बीचे में गणना कार्य छोड़ दिहलस, उच्चतम न्यायालय के आदेश के अनदेखी कइलस। अब ई काम सुप्रीम कोर्ट के आदेश से वर्तमान सरकार पूरा करे के कोसिस में बा तऽ राष्ट्रहित ना सोच के, कांग्रेस आ अन्य विपक्ष के संगी लोग अनेक अनर्गल प्रश्न उठा के देश के मूल नागरिकन के अधिकार, सुरक्षित जीवन आ संसाधन पर आघात करते बिया, देश में असुरक्षा, आतंक आ दंगा भड़कावे के पूरा प्रयास में लागल बिया। देश में जनसंख्या विस्फोट, गरीबी, संसाधन–अल्पता के प्रमुख कारण एही घुसपैठियन के जरिये अनाधिकृत रूप से आ रहल बा। आजु काल्ह चैनलन पर होखे वाला बहस में एकर झलक देखल जा सकेला। एही संदर्भ में डा0 रिजवान अहमद नाम के एगो मुस्लिम शोधकर्त्ता आपन बड़ा स्पष्ट विचार व्यक्त करत पाँच गो समाधान दिहलन, जवना पर विचार कइल जा सकेला। जइसे–

1. घुसपैठियन के नियमानुसार जे भारत के मूल निवासियन के हऽ शारणार्थियन आ घुसपैठियन के ना। उनकर निवास अवधि छः साल के रहे, उनुका के उनुका देश में भेजे के प्रयास होखो।

2. इनका के वोट देबे के अधिकार मत दीहल जाव।

3. अचल सम्पत्ति कीने के अधिकार मत दीहल जाव।

4. सरकारी नौकरी में स्थान ना मिलो। ई कुल्ही अधिकार भारत के मूल निवासियन के हऽ, शरणार्थियन आ घुसपैठियन के ना। उनका निवास अवधि छः साल के रहे, ओकरा के मत बढ़ावल जाव।

5. एह देश में सन्तानोत्पत्ति के अधिकार मत दीहल जाव।

एह संदर्भ में सबसे बड़ समस्या जनसंख्या वृद्धि के बा। ई तर्क कि संतान खुदा के देन हऽ एसे ऊ जतना दीहें हमार सौभाग्य बा। जबकि सरकार दू सन्तान उत्पन्न करेके के छूट देले बिआ। ई नियम इन्दिरा गाँधी के समय से लागू बा। बाकिर ई वर्ग माने के तैयार नइखे चाहे ऊ मुसलमान भारत के नागरिक होखे, चाहे शरणार्थी आ घुसपैठिया होखो। अल्पसंख्यक वर्ग के एगो नेता ओबेसी तऽ अपना सभा में साफे साफ कहलन कि, 'तोहरा लोग में दम बा जतना चाहऽ लड़का पैदा करऽ। ऊ आपन बल बा। हमनी के पालन–पोषण के जिम्मेदारी सरकार के हऽ। माने कि उनुका देश के विकास, उन्नति आ अन्य समस्या से कुछु लेबे–देबे के नइखे, खाली अपना वर्ग के भड़कावे आ संख्या–वृद्धि के उद्देश्य बा। ई संख्या वृद्धि तीन तरह से हो रहल बा– बाहरी घुसपैठियन के कारण, असंतुलित सन्तानोत्पत्ति के कारण आ एजू के कमजोर दलित वर्ग के बहकाइ के धर्म परिवर्तन के आधार पर। ईहे कारण बा कि 3 करोड़ से बढ़ि के आजु इनकर जनसंख्या 19 करोड़ हो गइल बा आ एह आधार पर पहले भीतरे–भीतर बिभाजनकारी भाव खदकत रहे, बाकिर अब तऽ दूरदर्शन पर आके दोसर पाकिस्तान बनावे के ई लोग धमकी दे रहल बा। जम्मू कश्मीर के मुफ्ती एकर घोषणा चैनल पर कइलन। एह भाव के राष्ट्र विरोधी कहला पर उठि के चलि गइलन। स्पष्ट हो जाता कि ई वर्ग राष्ट्रीय धारा में कवनो तरह मिले के तेयार नइखे। देश से कुल्ही लाभ लेबे में बा, बाकिर देश हित में सहयोग करे के तत्पर नइखे। आश्चर्य आ दुःख बा कि आजु के स्वार्थी, सुविधाभोगी, सत्ता लोभी नेतागन के ई विमर्श समुझ में नइखे आवत, बल्कि ऊ तऽ अपना अज्ञान आ स्वार्थ के कारण अल्पसंख्यक बुद्धिजीवियन के संगे बइठक करऽता लोग। उनुका अपना देश से मतलब नइखे, बहुसंख्यक के ऊ ब्लेकमेल करत बा लोग। ए लोग का बूते राजनीति करे वाला सत्ता पर आपन जन्मसिद्ध अधिकार बूझत बा लोग। उनुका ए खातिर एकमुश्त अल्पसंख्यक वोट चाहीं। ओइसे 19 करोड़ के संख्या वाला वर्ग के अब अल्पसंख्यक कहल उचित नइखे। एही संदर्भ में 'रोहिग्या' घुसपैठियन के समस्या बड़ा विकराल आ शोचनीय बा। इहनी के अपना आतंकी आचरण के कारण अपना देश म्याँमार में प्रताड़ित भइलन तऽ भारत में चोरी छिपे पैठ करिके कई प्रदेशन में अपना रहे के स्थान जोहि लिहलन। ई कुल्ही भागि के आइल बाड़न तऽ स्वाभाविक बा कि कवनो धन सम्पत्ति लेके नाहिएँ आइल बाड़न। देश के गद्दार आ देश के विरूद्ध साजिश करे वाला, इनहन के वोटर कार्ड, राशन कार्ड, फर्जी आधार कार्ड सबकुछ बनवा देले बाड़े सऽ। जवन कुछ बा, एही देश के मूल आधार पर बा, चाहे ऊ स्थान होखे, रोजगार होखे, चाहे कवनो नया सम्पत्ति बनावल गइल

होखो। ई वर्ग देखे में निरही, व्यवहार में अविश्वसनीय, क्रूर, स्वार्थी आ निर्दयी बा। कई प्रमाण मिलता कि एमे नरभक्षियो लोग बा! इनकर संस्कार आतंकवादी बा। ममता बैनर्जी आ वामपंथी नेता इनके वोट बैंक के राजनीति के तहत बसावे के सिफारिश करऽता, मानवाधिकार के दोहाई देता। ध्यान देबे के बात बा कि इहनी के आचरण–व्यवहार संदेहास्पद बा। देश में अशांति फइलावल, चोरी–छिनैती के काम से भारत के मूल निवासियन के जे अधिकांशतः शांतिप्रिय होला ओके डरवावे–धमकावे के वृत्ति बा। जम्मू कश्मीर में सैनिक आवासन के निकट इहनी के बसे–बसावे के प्रयास उहाँ के नेतन के विशेष षडयंत्र के तहत हो रहल बा। सैनिक आवास पर आतंकवादी हमलन के पीछे इहनी के हाथ बा, विश्वस्त सूत्रन से ई आशंको व्यक्त कइल गइल बा, प्रमाणो मिलल बा। एह तरह से देश में दंगा कइल आ करावे के प्रयास में इहनी के लागल बाड़न। आश्चर्य बा कि 92000 कश्मीरी पंडित परिवारन के भगावे वाला कट्टर नेता इहनी के ऊपर कृपा के हाथ धइले बा, वोट के राजनीति के कारण, अल्पसंख्यक के नाम पर आ मानवीय संवेदना के नाम पर। अब तऽ प्रियंका अइसन सिनेमा स्टारो इहनी के शिविर में जाइके, इहनी के छावनी के रख–रखाव देखि के दया आ कृपा के भाव दर्शावे में आगा आ जाता। एह तरह से देखल जाउ तऽ मुस्लिम जनता, नेता, बुद्धिजीवी, पत्रकार, सिनेमा स्टार' सभ के देश के समस्या के निदान के प्रति कवनो उत्तरदायित्व नइखे, बाकिर देश विभाजन आ देश में आगि लगावे में, सस्ता लोकप्रियता बटोरे में पूरा सहयोग आ आकर्षण बा। समय रहते जदि देश के प्रबुद्ध नागरिक, नेतागण आ न्याय–प्रक्रिया के रखवाला ना चेतल आ एकर निदान ना कइल तऽ भारत के अस्मिता, स्वतंत्रता, अखण्डता, संस्कृति, ज्ञान आ संस्कार कुल्ही के नष्ट होखे में समय ना लागी।

डॉ. रिजवान टी.वी. चैनलन पर स्पष्ट रूप से बयान देले रहलन कि मुसलमान जहाँ जतना अनुपात में रहेला ओही अनुपात में समस्या उत्पन्न करेला, खुराफात करेला। उनकर ई कथन ई सब देख–सुनि के शत–प्रतिशत सही बुझाता। उत्तर प्रदेश, बिहार में बेर–बेर दंगा, साजिश, प्राथमिक बेसिक परिषदीय विद्यालयन के नाम बदल के 'इस्लामिया' लिखल, रविवार के विद्यालय ना बंद कइके शुक्रवार के बंद कइल, सहायता सरकार से लिहल आ जनता तथा देश से अपना कुतर्की ढिठाई से विश्वासघास कइल एकर प्रत्यक्ष प्रमाण बा। जहाँ ई अधिसंख्यक हो जा तारन, ऊ स्थान 'कैराना' हो जाता। बहुसंख्यक अपना शांतिप्रियता के कारण लगातार अपने देश में प्रताड़ित होता, अपना घर से बेघर कइल जाता। ना न्याय के मापदंड एक समान बा, ना व्यवहार के। 'अखलाक' मारल जाता तऽ ओकरा घरवालन के मकान, 50 लाख रुपया दिआता, दू भाइयन के नौकरी दिआता, नेतन के झुंड के झुंड ओकरा संवेदना खातिर आ जाता इहाँ तक कि कथित बुद्धिजीवी लेखक 'साहित्य अकादमी के सम्मान लौटावे लागत बा लोग, हिन्दुअन के असहिष्णुता के नाँव पर, डा0 नारंग के मुस्लिम युवक देश के राजधानी दिल्ली में पीट–पीट के हत्या कइ दिहलन तऽ ना कवनो नेता परिवार से मिले गइल, ना चैनल पर ओह हत्या के दृश्य देखावल गइल, ना मुआवजा–नौकरी दिआइल, ना बुद्धिजीवी लेखकन के संवेदना जागल, ना मानवाधिकार संगठन के ई अनीति बुझाइल। ना असहिष्णुता के प्रश्न उठल, ''लिंचिंगो' ना गहाइल। इहाँ तक कि जम्मू कश्मीर का श्रीनगर के नौहट्टा जामिया मस्जिद के बाहर सुरक्षा में लागल पुलिस उपअधीक्षक अयूब पंडित के नमाजियन द्वारा पीट–पीट के हत्या कऽ दीहल गइल तऽ कवनो वामपंथी, कांग्रेसी, आम पाटी के नेता उनका घरे जाके संवेदना ना दीहल आ बुद्धिजीवी लेखकन के आपन सम्मान लौटावे के इयाद ना आइल। राणा मुनव्वर अइसन लेखकन के मुँह से एह 'लिंचिंग' करे वाला के विरूद्ध एकहूँ शब्द ना फूटल। एगो रोचक बात अवरू बा कि सम्मान के पदक आ सम्मान पत्र लौटावे के जोश सभमें आइल, बाकिर सूद सहित सम्मान राशि लौटावे के प्रयास ना लउकल ई कुल्ही काम देश के बदनाम करे के, सरकार के अयोग्य बतावे के, अपना हाथ में सत्ता आ पद–सुविधा खिसक जाए के कुण्ठा के कारण जान–बूझ के कइल जाये वाला षड़यंत्र रहे, जेसे जनता भ्रमित होखे।

भारत के जनता अब ना जागी तऽ भविष्य ओकरा आवे वाली पीढ़ी के दण्ड दी "लमहे ने खता की थी, सदियों ने सजा पाई" के स्थिति से उबरे के चाहीं। ओकरा समुझे के परी कि अन्याय केहू, कतहूँ करे, केहू के संग करे तऽ ओकर विरोध कइल जाये के चाहीं। दंगाइयन से, जेहादियन से डेराये ना उनुकर भंडाफोड़े के प्रयास होखो ना तऽ फिदा हुसैन हमरा देवी देवतन के अश्लील चित्र बनावत रहिहें, आमिर खान पी.के. परोसत रहिहें, संजय भंसाली अलाउद्दीन के सपना में भारतीय अस्मिता के भुनावत रहिहें आ हिन्दू सहिष्णु बन के सहत रही। एगो सशक्त जाग्रत सरकार के जड़ में दीमक जिआवत रहब, ऊपर से झूठ के तेजाब फेंकत रहब आ फेरू अपने परिस्थिति से

बाँचे खातिर शुतुरमुर्ग बनि जाइब। बाकिर ओसे समस्या के समाधान ना होई। देश के विनाश के, अखंडता के नाश के, संस्कृति के भ्रंश के जमीन अवश्य तेयार हो जाई। हमारा अपने बीच में फनफनात नाग, साँपन से सावधान रहे के परी। कहले गइल बा कि 'सम्हल के रहना अपने धर में छिपे हुये गद्दारों से।'

अब एगो दोसर विषय बा नारी के सम्मान आ अधिकार से संबंधित 'तीन तलाक आ हलाला के'। एह समस्या के सोझा आवते मुस्लिम समाज में का कथित नेतन अशांति आ खलबली मच गइल बा अउरी काँग्रेसी, वामपंथी, सपा, बसपा के मुँह सियाइ गइल बा। ई तीन तलाक आजुए से ना अदालत में सन् 1986 से लटकल, सुगबुगाता। धर्म के नाँव पर सियासती नेता आ मुस्लिम सम्प्रदाय एसे बचे के चाहता।

धर्म आ मजहब के ई कवन रूप हऽ कि जेकरा संगे विधिवत् बिआह कइल गइल, संतानोत्पति भइल, जे तहरा घर के रीढ़, तहरा बेटा के महतारी हऽ, ओकरा के जब चाहऽ तीन बेर 'तलाक–तलाक–तलाक' कहि के अपना घर से, जीवन से निकाल दऽ। जेसे ऊ गृहलक्ष्मी एक शब्दन के बम से घायल हो के समाज में सिर उठा के जी ना पावो नइहर–ससुरा में दया के भीखो ओकरा के ना मिलो। लइका के बाप छिना जाउ, जीए के आसरा नसा जाउ। काल्हु के पत्नी एह शब्द–बम से खून में लथपथ सड़क पर निराश्रित खड़ा हो जाउ। जिनिगी नरक बनि जाउ। कारण कतना छोट कि जदि समय पर भोजन ना मिल पावल भा, कवनो दिन स्वादिष्ट ना होखो, तरकारी में नून तेज हो जाउ, उठला में तनी देर हो जाउ तऽ असहिष्णु मरद 'तलाक' के तलवार से कुल्ही संबंध–सूत्र एक ही बेर में काटि के अलगियाइ जाउ। दोसर बिआह कइ लेउ। काहें कि ओकरा चार बिआह के छूट बा। ई तलाक बिना कवनो नियम–कानून के पति के दबंगई से कबो दिया सकेला। मेहरारू एसे हर क्षण आतंक आ भय में जीअसु। ओकर आपन कवनो व्यक्तित्व कवनो अधिकार नइखे ई कुल्ही होला मजहब के नाँव पर।

अवरू अपमानजनक एगो दोसरो रूप बा मुस्लिम समाज में धर्म के नाँव पर! 'तलाक' कहला पर जदि मेहरारू निरालंब हो जाले आ पति के क्रोध तनी शांत होखे आ ऊ एके आपन भूल समुझ के सुधारे के चाहे तऽ ओकर प्रक्रिया अवरू लज्जास्पद किंवा घृणित स्वरूप पावेला जेकरा के मुल्ला–मौलवी धर्म के नाम पर अब तक जिअवले बा। ऊ हऽ 'हलाला'। जइसे कि नाँवे से स्पष्ट होता कि ई प्रथा नारी जाति के जानि–बूझि के संत्रस्त कइल, मृत्यु ले ढेर दुःख दीहल, ओकरा तन–मन–सम्मान तीनों के नष्ट कइ के आश्रम देबे के ऊ परिपाटी बा, जेसे ऊ जीवन भर त्रास में जीयो। अपना के स्वतंत्र व्यक्ति ना मान के, पुरुष के सम्पत्ति मानों, वस्तु मानों, ओकरा आज्ञा के पालन, चाहे ऊ कइसनो होखे, करे के बाध्य होखे। पति के तलाक दिहला पर पति तऽबे ओह पत्नी के स्वीकार करी जब ऊ दोसरा आदिमी के संगे शारीरिक संबंध स्थापित करी। कवनो नारी चाहे कवनो जाति–धर्म के होखे अपना पति के अलावा कवनो अन्य मर्द से शारीरिक संबंध स्थापित करे के ना चाही, जदि ऊ पतिव्रता बिआ स्वैरिणी नइखे। बाकिर ई आश्चर्यजनक बा कि माता–बहिन–पत्नी के रूप में जवन नारी पूजनीय–सम्माननीय होखे के चाहीं उ स्त्री ए परिपाटी से खुला रूप में अपना पति के द्वारा दोसरा पुरुष से बलात्कार करवावल जाले, धर्म के नाम पर पवित्र कुरान आ हदीस के नाम पर। सैकड़न साल से मुस्लिम नारी के एह आपत्तिजनक स्थिति से गुजरे के परल बा, जेकरा से ओकर निस्तार नइखे। एगो घटना सोझा आइल कि एगो पति अपना पत्नी के तलाक दिहला के बाद अपना बाप से ओके 'हलाला' करवलस, फेरू दुबारा 'तलाक' दिहला पर, अपना भाई से 'हलाला' करवावे पर जोर दिहलस तऽ ऊ मेहरारू मना कइ दिहलस आ कोर्ट में आपन दुःख क्षोभ बयान कइलस। कहलस कि आखिर बतावल जाव कि बाप के संगे 'हलाला' के कारण ऊ अपना पति के महतारी भइल, त अपना पति के रूप में ओकर स्थिति का होई? मौल्वी के फैसला आइल कि ऊ महतारी भइल। एह ले ढेर कवनो नारी के भाव आ सम्मान के का अपमान हो सकेला? ई कवन मजहबी न्याय?

आजु के समाज आदिम युग के समाज ना हऽ जब संबंध के कवनो विशेष परिभाषा ना रहल, खाली आदम आ हउवा ईहे दूगो जाति रहल। वर्तमान सरकार के आगा मुस्लिम मेहरारून के एगो वर्ग ई समस्या रखलस। मोदी सरकार एह केस के 'कोर्ट' में ले गइल। जहाँ 'कोर्ट' के निर्णय के अनुसार 'तलाक' के असंवैधानिक आ अमानवीय कहल गइल। बाकिर विपक्ष आ अवरू छुटभैया दल मुस्लिम 'वोट बैंक' के लोलुपता के कारण, खुलके सरकार आ 'कोर्ट' के साथ नइखे देत। काँग्रेस, सपा, बसपा, सी.पी.एम. के नेता एकरा के मुस्लिम धर्म के अंग बता के पैरोकारी करत बा। जेकरा बारे में बोलल भा कवनो कदम उठावल उचित नइखे मानत। मुस्लिम नारी के सम्मान आ अधिकार उनुका दृष्टि में महत्त्वपूर्ण नइखे। संसद में प्रश्न उठवला पर एने से पलायन के दोसर रास्ता अपनाइ के कहल जाता कि जदि तलाक दिहला पर

पति के सजा हो जाई तऽ मेहरारू का करी? ओकर पालन–पोषण कइसे होई? एसे तलाकशुदा मेहरारून के पोषण के भा आर्थिक भार सरकार के उठावे के होई। बिपक्ष का एह शर्त के मनले पर ई प्रस्ताव पारित हो सकेला। प्रश्न बा कि जब बिना कवनो दण्ड आ भय के जदि कवनो अदिमी तलाक दे देता ओह घरी ओह मेहरारू के पालन–पोषण के उत्तरदायित्व के लेता? ओह स्थिति खातिर विपक्ष के सियासत के कवन रूप बा? सन् 1986 में आइल 'शाहबानो' काण्ड के उदाहरण सोझा बा।

'सुप्रीम कोर्ट' के एह संदर्भ में शाहबानो साठ साल ले अधिका के शाहबानो के पति उनुका के तलाक दे दिहलस आ शाहबानो के भरण–पोषण के कवनो आधार ना रहल ऊ सड़क पर आइ कइली तऽ कोर्ट उनुका भारण–पोषण खातिर उनुका पति के आदेश दिहलस। बाकिर मुस्लिम समाज कोर्ट के फैसला के विरोध में खड़ा हो गइल कि ई हमार धर्म के प्रश्न बा। हम एकरा के स्वीकार ना करब। तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गाँधी मुस्लिम वोट बैंक के चलत झुक गइलन आ ओह नारी के प्रति न्याय ना हो पावल। ऊ कुल्ही प्रस्ताव राजनीतिक तुष्टीकरण के ठंडा बस्ता में धराइ गइल। ई स्पष्ट हो गइल कि मुस्लिम सम्प्रदाय अपना स्वार्थ के अनुसार 'सुप्रीम कोर्ट' के मानो, अन्यथा ना मानी। अब ई सवाल उठता कि ओह घरी कुल्ही दल काहें ना खड़ा भइल, एह आर्थिक सहायता के संशोधन के साथ? ई दुमुँही चाल काहें अब खेलाता? ई कवना आधुनिक न्यायप्रद राजनीति के उदाहरण कहाई? अब एगो शाहबानों ना हजारो शाहबानों खड़ा बा लोग।

शिक्षा के प्रसार के संगे एह जलालत से ओह वर्ग के नारी–समाज अब मुक्ति चाहिता आ आपन अधिकार चाहता, जइसे हिन्दू तलाकशुदा महिला के अपना पति के सम्पति आ आय से आपन जीवन सुधारे–जीए के अधिकार मिलल, ओइसहीं मुस्लिम समाज पर भी ईहे व्यवस्था लागू कइल जाउ। सरकार से जीवन भत्ता के माँग कवनो दृष्टि से उचित नइखे, काहें कि एसे तलाक के घटना बहुतायत से होई। मुस्लिम पुरुष निर्भय होके एकर दुरूपयोग करी। जेकर परिणाम सरकार पर अनावश्यक बोझा आ एह वर्ग के सरकार से अधिकाधिक धन–दोहन आ शोषन के प्रवृत्ति बढ़ी। सजा के साथ संपत्ति देबे के नियम से अइसन घटना में कमी आई। विपक्ष अपना चाल के चलत एक ओर मुस्लिम वोट क नुकसान नइखे चाहत, दोसरा ओर वर्तमान सरकार के नारी–सम्मान रक्षा के अभियान–प्रयास के अपाहिज बनावे के चाहता।

एह दृष्टि से कुल्ही महिला नागरिक के समान समुझ के एके नियम कानून बनावे आ पालन करे के चाहीं। मुस्लिम मेहरारू के वस्तु आ गुलाम ना बूझि के व्यक्ति समुझे के परी आ ओह समाज के पुरुष के अपना सीमा में आवे के परी। चार बिआह के स्वतंत्रता कवनो धर्म के अंग के रूप में स्वीकार ना होखे के चाहीं जेसे नारी के जीवन नरक बने से बच सको। ऊ अपना हक से रहो 'तलाक' के आतंक में मत जीओ। बहुविवाह के संत्रास आजुओ मुस्लिम महिला के सहे के परऽता। पुरुष के ई कहे के अधिकार कतहूँ से नइखे कि मेहरारू 'कम अक्ल' होखेली, उनुका पढ़े–लिखे के ना खाली घर में रहि के घर के जिम्मेदारी देखे के चाहीं। एह मानसिकता से पढ़ल लिखल समझदार लोगन के उबरे के चाहीं। एह वैचारिक प्रक्रिया में अइला पर जवन 'हलाला' के स्थिति बा ऊहो समाप्त होई। हलाला अइसन घृणित नारी के असम्मानित करे करवावे वाली 'रेप प्रथा' अब बन्द होखे के चाहीं। ई धर्म ना हऽ, ई मुल्ला–मौलवी के कामुक भावना के प्रकाशन हऽ। ईहो सुनाता कि पइसा लेके मौलवी भा अवरू केहू नाते–रितेदार लोग हलाला करके तेयार होला। ई एक तरह के व्यवसाय कहाई, जवन नारी के शारीरिक शोषण के खुला स्वीकृति मानल जाई। एह संदर्भ में कवनो फतवा के महत्त्व ना देबे के चाहीं। खुद एही मुस्लिम समाज का प्रबुद्ध नर–नारी के सामने आवे के चाहीं।

भारतीय मुसलमान एह कुप्रथा के काहें कवना डरे नइखे छोड़े के चाहत? ई यक्ष प्रश्न बा जबकि पाकिस्तान अइसन आतंकी देश, अरब आदि मुस्लिम देश 'तीन तलाक' के असंवैधानिक करार देले बा।

एगो सुखद समाचार आइल बा कि वर्तमान सरकार वोट के चिन्ता ना करिके मुस्लिम नारी के सम्मान सुरक्षित राखे खातिर एगो सबल निर्णय लेके विपक्ष के अनेक विरोध के बाद भी 'तलाक' से मुक्ति के ऐतिहासिक अध्यादेश पारित कऽ दिहलस। पूरा शिक्षित समाज के, देश के, एकर स्वागत आ सम्मान करे के चाहीं। भारतीय मुस्लिम महिला समाज के एह जीत पर बधाई। बाकिर ई जीत, तब असली जीत होई, जब व्यावहारिक धरातल पर खुद एही मजहब के समझदार आ प्रबुद्ध लोग एकरा पक्ष में आवाज बुलन्द करी। ••

❑ 255/142, बाघम्बरी हाउस स्कीम, अल्लापुर, प्रयागराज–6

स्व0 जगदीश ओझा 'सुन्दर' के कुछ गीत

(एक)
ना केहू बिपतिया के भरिहें खदोना,
मरम बूझऽ बाबू! अनेर बाटे रोना!
सूरज ना सूते, चनरमा ना लेटे,
सरगवा के जोन्हिया ना जोतिया समेटे
जरे दिनवा-रतिया, ना तेलवा न बतिया,
ना बइठल सपन के बनावे घरौना।
मरम बूझऽ बाबू! अनेर बाटे रोना!

सुगम बाटे हरवा-कुदरिया के धन्धा,
फरुहवा से काटऽ बिपतिया क फन्दा,
खुरुपिया से खोदऽ महँगिया के जरिया-
बनावऽ न मेहनति से मटिया के सोना
मरम बूझऽ बाबू! अनेर बाटे रोना!

धरतिया का आँगन में हीरा-रतन बा,
समुन्दर का सीपी में मोती मगन बा
जो जोखिम उठइबऽ, जो बुड़बऽ त पइबऽ
मड़इया का माथे लगइबऽ डिठौना।
मरम बूझऽ बाबू! अनेर बाटे रोना!

(दू)
सोनपंखी चिरैया कहाँ रे उड़ल जाइ
कवना बहेलिया के तीर सनसनाइ!

देस के सिंगार रहे, हार रहे गला के
मंगल के चिन्ह रहे, सगुन रहे भला के
तपोभूमि छोड़ि काहें चलल ई पराइ!
सोनपंखी चिरैया कहाँ रे उड़ल जाइ!

ओर रहे जिया के, अँजोर रहे दिया के
प्यार रहे राम के, दुलार रहे सिया के
कृष्ण कहि जगावे, गोविंद कहि उँघाइ!
सोनपंखी चिरैया...

जंगल से मंत्र लेइ, बस्ती में चहके
भटके ना चरन कबों, मन न कबो बहके
मीठ बोल हिया हरे, कटे सइ बलाइ!
सोनपंखी चिरैया...
टूटल विश्वास भइल, अइसन अनहोना
लागि गइल देस के, विदेसियन क टोना
सुघर सोनचिरई से पीर ना सहाइ!
सोनपंखी चिरैया कहाँ रे उड़ल जाइ!!

मइया का चिरई बिन, लउके अन्हियारे
बाबा के प्रान गइल, भार के सम्हारे
प्राती गुम, साँझवति के दिया झिलमिलाइ!
सोनपंखी चिरैया कहाँ रे उड़ल जाइ!!

धरती के सरग से सनेह डोर जोरि के
मनई के, दनई का बन्धन से छोरि के
बसुधा में भावना कुटुम्ब के जगाइ!
सोनपंखी चिरैया कहाँ ....!!

(तीन)
ए गवैया! जिनिगिया के गीति गाउ रे!
प्रान थिरकि-थिरकि जाउ, उहे धुन सुनाउ रे!!

बन्द नया-नया आवत आ जात रहि गइल
छन्द अपने में बूड़त-उतिरात रहि गइल
मिलल बरकत ना राहि के, डेग ना बढ़ल-
ए गवैया! जिनिगिया के गीति गाउ रे!

साँस-साँस बदहवास, आस छूटि रहल बा
आदमी से आदमी क साथ छूटि रहल बा
कहीं ढोल, कहीं पोल जेने देखीं ओने पोल-
बेसुरा भइल समाज, तनी सुर मिलाउ रे! ए गवैया! ...

चुभे जिया में न जाइ, उ कलाम का करी
दवा कंठ में न उतरी तऽ काम का करी
एह जमाना के दौर जाम लेके खड़ा बा-
बढ़े दुइ छलाँग मारि, उहे मधु पियाउ रे! ए गवैया! ...

राति जुलुम के नसाइ, हँसे दरद खिलखिलाइ
लोग कहे फूल, गइल आसमान में फुलाइ
अछर-अछर दे सनेह, सबद-सबद दिया बने-
डहरि-डहरि, नई-नई रोसनी जराउ रे! ए गवैया! ...

दऽ नैना के अंजन, जे जोति जगमगाइ
दऽ मनवाँ के मंजन, जे मइलि छूट जाइ
हवा बहे सनसनाइ तहार गीति गुनगुनाइ-
फरकि उठे गतर-गतर, बीन अस बजाउ रे! ए गवैया! ...

••

जमाना जरि गइल ?

श्रीमती प्रेमशीला शुक्ल

'जमाना जरि गइल'– ई कहल रहे बुढ़िया काकी के। काकी रहली त नवाहे, बाकी बाति बहुत चुनि–चुनि के आ वजन वाली कहें एही से उनुकर नाम बुढ़िया काकी पड़ि गइल रहे। काकी जमाना का चाल–चलन से बड़ा दुःखी रहें। ऊ एगो गीति गावें– "सुरहिआ तेरे फैसन ने बिगाड़ा जमाना। सलवार वाली नहीं बिगाड़ी, फराक वाली नहीं बिगाड़ी। दू चोटी वाली लइकी ने बिगाड़ा जमाना।" काकी जब दू चोटी कइले, हाथ में किताब लिहले लइकिन के स्कूल जात देखे ते बिदकि उठें। "हुँह, बेटा बनऽता लोग, बाप–माई के पगरी भुइयाँ लसारी लोग।" – ई चाहे अइसन कवनो दूसर बात कहत, काकी हाथ–मुँह चमकवले बिना मानें ना।

ई प्रकरण बीतले आधा सदी से ऊपर हो गइल। लइकी हकीकत में बेटा बनि गइली सन– पढ़े वाली, कमाए वाली, माई–बाप के फिकिर करे वाली। ई लइकी बाप–माई के पगरी भुइयाँ लसारऽताड़ी कि अकासे पहुँचावऽताड़ी– एपर सोच–विचार करत, हमके लागता कि बुढ़िया काकी आजुवो मुँह चमकावत कहताड़ी– "जमाना जरि गइल।" कहें काहें ना? उनुके सिखावल रहल कि ससुरा में दबि–खबि के रहिहऽ, उहाँ के दुःख–सुख चुपचाप सहिहऽ, मुँह मूनि के रहिहऽ, अइसन कि ओरहन ना आवे आ आजु के लइकी ससुरा में शौचालय ना रहला पर तूफान मचा देताड़ी, ससुरा छोड़े के बात करताड़ी आ ऊपर से उनुकर तारीफ होता, फोटो अखबार में छपऽता। पहिले 'सहल'–बड़ाई रहे, अब, 'ना सहल' बड़ाई बा, त अपने सोचल– जाए कि जमाना जरल कि ना?

वैज्ञानिक प्रगति आ तकनीकि विकास से आदमी के खाली सुख–सुविधा नइखे बढ़ल, ओकर आचरण आ बेवहार पर भी असर पड़ल बा। खासकर संचार माध्यम के नित बदलत स्वरूप त बहुत असर डाल रहल बा। ए सब पर मुख्य रूप से पच्छिम के वर्चस्व बा एसे ए सब का साथ पच्छिम के जीवन दृष्टि, रहन–सहन, जीवन मूल्य दुनिया का दूसर–दूसर देस में जा रहल बा। दूसर देस ए सब के केतना प्रभाव आ कवना तरह के प्रभाव ग्रहण करता, ई ओह देस की स्थिति–परिस्थिति पर निर्भर करत बा। ध्यान में रखे के चाहीं कि ई प्रभावग्रहण संसार का अलग–अलग हिस्सा में थोड़ा बहुत आगे–पीछे क के हर जगह पड़ल।

भारत में एकर पदचाप उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में सुनाए लागल रहे। बीसवीं सदी में सुरूआते से जहाँ–तहाँ आन्दोलन का रूप से ई प्रभाव सामने आवे लागल रहे। पच्छिमी दुनिया के जवन जीवन मूल्य दुसरे देसन में आपन प्रभाव डालत रहले सन, ओमें स्वतंत्रता आ समानता एगो महत्वपूर्ण मूल्य रहे। मन में स्वतंत्रता आ समानता के भाव जगले के ई परिणाम रहे कि भारत का स्वतंत्रता आन्दोलन में सुरू से महिला लोगन के भागीदारी रहल। आगे चलिके महिला समाज अपना ऊपर होखेवाला अत्याचार का खिलाफ आ अपना हक खातिर बोले लागल लोग। धीरे–धीरे आवाज आन्दोलन के रूप लेबे लागल। भारत में आन्दोलन के फरे–फुलाए लायक पुरहर जमीन तइयार रहे। ओईसे त वैदिक काल से लेके आज तक मनस्वी आ विदुषी महिला के कई नाम लिहल जा सकेला, कई विद्रोही चरित्र खोजल जा सकेला बाकी ई सब 'विशेष' के श्रेणी में आई।

कवनो समाज के पहचान ओकरा 'सामान्य जन' से होला 'विशेष व्यक्ति' से ना। भारत का महिला समाज का बारे में कहल, पीसल के बेर–बेर–बेर पीसल होई, एसे आगे चले के।

समानता आ स्वतंत्रता केसे? पुरूष समाज से। समानता आ स्वतंत्रता में समानता भौतिक जगत से जुड़ल मूल्य ह, स्वतंत्रता भौतिकता का अलावा आध्यात्मिकता के भी स्पर्श करेले। समानता में स्थूलता के अंश ज्यादा होला, जबकि स्वतंत्रता में अपेक्षाकृत सूक्ष्मता के अंश ज्यादा होला। जवन बाति समानता से जुड़ल होला ऊ ज्यादा साफा आ सझुरल लागेला आ जवन स्वतंत्रता से जुड़ल होला, ऊ तनी कम साफ आ अझुराइल लागेला। काकी का एह कुल बाति से कवनो मतलब ना रहे। हँ, ऊ दूनूँ का खुलहा खिलाफ रहें। दू–चार लइकनी के नाम लेत ऊ सोदाहरण बतावें कि देखिल– छुट्टा भइले से आ कमइले से फलानी का घर के कइसे नास भइल। बदला में हम जब दू–चार गो नाम लीं त काकी के एँड़ी से चोटी ले जरे लागे आ हमरो, के समेटत कहें कि 'तुहूँ त ओही गोलि में बाड़ू, तूँ त कहबे करबू।' काकी का बाति पर हमके इस्थिर हाके के सोचे के पड़े कि जेतना नाम काकी लिहली हऽओ परिवारन में कुछ अनर्गल बाति कइसे पइठि गइल। हम काकी के बतावल चाहीं कि समाज के विकास सीधा आ सपाट ना होला। अगर पेड़–पालो के रूपक लेके कहए जाए त ई ताड़ का पेड़ अइसन ना, शमी का पेड़ अइसन होला, जवना के कन्छा बड़ी नगीचे–नगीचे झीन–झीन जीरा अस पतई लिहले, काँटेदार आ गझिन होला। ए कुल्हिन के बिलगावल आ काँट–कुस से बचल बहुते मुस्किल होला। कई बेर जरूरत पड़ेला कि कुछ कन्छा के काट दिहल जाए। जवना समाज में ई ना होला, ऊ समाज में झाड़ झंखाड़ बन जाला। महिला समाज में समानता आ स्वतंत्रता खातिर सजगता अइला के असर भइल कि स्त्री घर की चहारदीवारी से बाहर निकलली आ आत्मनिर्भर भइली। आकास के कवनो उँचाई उनुका खातिर अलंघ्य ना रहल। समाज स्त्री का उपलब्धि के सँकरलसि, स्वागत कइलस, बाकी एगो घातक विसंगति एही घरी जनम लेति रहे। स्त्री का उपलब्धि के 'मनुष्य' के उपलब्धि ना मनिके 'स्त्री' के उपलब्धि मानल गइल, सगरी 'मनुष्य' जाति का उपलब्धि में ना समाहित कइ के ओह उपलब्धि के उपजाति स्त्री का खाता में डाल दीहल गइल। कवनो दुसरा देस में अइसन होइत चाहे ना, भारत में अइसन हो सकल रहे। भारती के उदाहरण इहाँ समाने रहे। ई साँच हाऽ कि भारती मंडल मिश्र की पत्नी का रूप में आदि शंकराचार्य से शास्त्रार्थ करे खातिर उतरली, बाकी शंकराचार्य अइसन ज्ञानी महापुरूष उनुके 'स्त्री' ना मनुष्य का रूप में देखत रहलें। कहीं अइसन उल्लेख ना मिलेला कि औरत होके भारती शास्त्रार्थ कइली, जबकि आजु का समाज में महनीय–से–महनीय उपलब्धि के 'औरत होके' का विशेषण का साथे जोड़ दीहल जाला।

'ध्रुवस्वामिनी' प्रसिद्ध नाटकार जयशंकर प्रसाद के लिखल नाटक ह। ए नाटक का एगो प्रसंग में नाटक के नायक चन्द्रगुप्त नायिका ध्रुवस्वामिनी के समुझावत कहले बाड़ें कि 'देवि! जीवन विश्व की सम्पत्ति है।' ई वाक्य कई अर्थ में महत्वपूर्ण रहे। जवना में से एक ई कि जीवन का संदर्भ में स्त्री–पुरूष जइसन विभाजन ना कइल जा सकेला। मनुष्य मात्र के जीवन विश्व के सम्पत्ति हऽ। अनेक अइसन अक्सर आ विषय होले, जहाँ स्त्री–पुरूष के विभेद अनर्थकारी होला। बदलत सामाजिक परिवेश में अगर अइसन अनर्थकारी विभेद से परहेज कइल गइल रहित, त ऊ काँट–कुस ना उपजल रहित, जवन आजु का समाज के बेर–बेर गड़ऽता विडम्बना ई कि, एकर उल्टा नतीजा भइल कि स्वतंत्रता आ समता के डेग भरत स्त्री का सामने पुरूष प्रतिपक्ष बनि के खड़ा हो गइल। मुँह में प्रशंसा आ मन में आहत अहं लिहले पुरूष, हाथ में विजय पताका आ मन में उद्धत अहं लिहले स्त्री वादी–प्रतिवादी बनि गइलें। बरिसन से चलत सामाजिक सहअस्तित्व के समीकरण गड़बड़ाए लागल। एकर सबसे ज्यादा असर स्त्री–पुरूष के पारस्परिक सम्बन्ध पर पड़ल दाम्पत्य जीवन में अशान्ति अउर अस्थिरता, प्रेम विवाह आ तलाक में एक साथ बढ़ात्तरी, वैवाहिक सम्बन्ध के अनुपयोगिता, विवाहेतर सम्बन्ध के प्रचलन आदि तमाम–तमाम आधि–व्याधि आ कि मौज–मस्ती समाज में ब्याप गइल। पुरूष त हरदम के स्वतंत्र, स्त्री नया तरह से स्वतंत्र– दूनों उन्मुक्त साँस लेबे लगलें, बाकी जवन हवा मिलल ऊ सौरभ संयुक्त रहे का? काकी रहिती त कहिती– "ना, ई त चिराँयँध बा, बन्ने जरठायन, जमाना जरि गइल।"

सदियन से अपना अहं का संतुष्टि का क्रम में स्त्री का साथे मनमाना बर्ताव करत आइल बा– कब्बो अच्छा कब्बो खराब; शलीन, कब्बो बर्वरता से भरल। समाज में ऊ दूसरा दरजा के नागरिकता कपार पर ढोवत आपन नियति एही के मानके जिनगी बितावत रहल बा। समता आ स्वतंत्रता के सपना के साकार क के अपना नियति के हरफ खुद लिखे में जुटल बा। ए क्रम में ओकरा जीवन दृष्टि में, जीवनशैली में कई बदलाव आइल बा– कुछ धनात्मक कुछ ऋणात्मक।

बुद्धि के उपयोग कठिन–से–कठिन समस्या के समाधान निकलले में ऊ कर सकेले त झूठ के साँच आ साँच के झूठ साबित कइलो में कऽ सकेले। तऽ का आजु के स्त्री सर्वसमर्थ हो गइल, ओकर राहि सुगम आ निष्कंटक हो गइल? समय का साथ स्त्री का समस्या के रूप बदलल बा, समस्या के अन्त नइखे भइल। आ एक समस्या तऽ जइसे जस के तस बा। सुरक्षा का लिहाज से औरत जेतना कमजोर आजु से बरिसन पहिले रहे, ओतने आजुओ बा।

बलात्कार आ हिंसा, असुरक्षा के दूगो मुख्य रूप बा। सुरू से स्त्री का एह दुनूँ के दंश झेले के पड़ल बा। समय–समय पर हिंसा के रूप तरीका बदलत रहल बा। ऊपरी तौर पर अइसन लागेला कि पहिले बलात्कार के मामला कम होखे। एक तऽ पहिले स्त्री घर की चहारदीवारी में बंद रहे, एसे बलात्कार के अवसर कम मिले, दूसरे बलात्कार का अधिकतर मामला में स्त्री की घोर असहमति का बावजूद स्वीकार भाव रहे काहे से कि एके ऊ स्त्री आपन नियति मान लेले रहे। यंत्रणा आ असहमति का बावजूद स्त्री में विरोध के भाव ना रहे। अब अइसन स्थिति नइखे स्त्री असहमत रहेले तऽ विरोध करेले, ओके समाज का सामने उजागर करेलें। काकी एहीके कहे "आपन लूगा अपने लुटावल।" मतलब कुछ ऊँच–नीच हो गइल तऽ ओपर परदा डालल जाला कि बखान बतिआवल जाला?– काकी के कहनाम ई रहे। आजु उजागर कइला के आलम ई बा कि 'मी टू' के कैम्पेन चलि पड़ल बा। एक सिअरा हुआँ तऽ ढेर सिअरा हुआँ–हुआँ। फेर तऽ समाज में आवाज उठे लागल कि अइसन मामला के सत्यता–असत्यता के जाँच होखे चाहीं। होखहीं के चाहीं। एकरा साथे एगो बड़हन निष्कर्ष ई छनि के आइल कि इज्जत के चिन्ता पुरूषो का करेके चाहीं, ओकरो चरित्र पर धब्बा लाग सकेला, पगरी खाली बेटी–बहिन का वजह से ना खुद अपनो वजह से भुइयाँ गिर सकेला।

कानून पीड़ित का पक्ष में खड़ा होला। बलात्कार का मामला में कड़ी–से–कड़ी सजा के बन्दोबस्त बा, बाकी अपराधी सोचेला तूँ डार–डार, हम पात–पात। बलात्कार कर आ हत्या कऽ दऽ। ना रही बाँस ना बाजी बँसुरी। पीड़ित जीअवे ना करी तऽ के कही, का भइल? कइसे भइल? एक बात अउर होला। कानून में एतना 'स्पेस' जरूर होला कि ओकरा व्याख्या एक से अधिक तरीका से कइल जा सकेला। एही स्पेस के गलत तरीका से पेश कऽके मनचाहल रास्ता निकाल लिहल जाला। कब्बो–कब्बो तऽ कानून में से, अइसन कंधा निकल जाला कि ओकरा से समाज का संस्कार आ भाषा से टकराव होखे लागेला। हाले में अनिवासी भारतीय जोसेफ शाइन का मामला के सुनवाई करत उच्चतम न्यायालय के फैसला में आई.पी.सी. धारा 497 के निरस्त कइल गइल हऽ। कहल–गइल ह कि एह धारा से स्त्री, पुरूष के संपत्ति बन गइल रहली ह। पति–पत्नी के मालिक ना हो सकेला। स्त्री का समानता के अधिकार मिले के चाहीं। ए धारा का अनुसार विवाहेतर सम्बन्ध व्यभिचार ना हऽ, ना अपराध ह, अगर ऊ मन–मर्जी आ सहमति से बा।

भारतीय समाज जबसे व्यवस्थित रूप लेले होई तब से इहाँ का जनमानस में विवाहेतर सम्बन्ध व्यभिचार हऽ, नाजायज हऽ, अपराध ह। भले ही ई फैसला समाज का क्रमिक विकास के परिणाम बा, स्त्री की समानता आ स्वतंत्रता के पक्षधर बा, बाकी एके जनमानस में उतरले में समय लागी। जब तक विवाह, प्रेम आदि के अवधारणा में बदलाव ना आई तब तक ई संभव नइखे। जवन समाज "एक म्यान में दो तलवारें कभी नहीं रह सकती है" रटत आइल बा उ ए फैसला के सहज रूप में कइसे ली? बल्कि गुंजाइश ही रही कि जीअत मांछी केहू कइसे घोंटी, के अगिला चरण पूरा करत, ओके रास्ता से हटा दिहले के गुंजाइश बन जाई, जवन बलात्कार वाला मामला हो रहल बा। समाज जड़ ना होला। गतिशीलता समाज आ संस्कृति के सुभाव हऽ। सार्थक उपलब्धि के चाह समाज की संरचना आ मूल्यात्मक आधार के नया दिसा आ गति देले। एही क्रम में भारतीय समाज तीव्र संक्रमण का दौर से गुजर रहल बा। तकनीक आ संचार माध्यमन का विकास से समाज–दृष्टि प्रभावित हो रहल बा। परिवर्तन के लपट चारो ओर उठ रहल बा। कि जमाना जर रहल बा। ई कवनो आरोपित भा अनपेक्षित प्रक्रिया ना हऽ, विकास के सहज आ जरूरी प्रक्रिया ह। सोना तपी ना त शुद्ध कइसे होई। जमाना जरी ना, तऽ पुरान के छोड़ल आ नया के धारण कइसे कइल जाई? परंपरा आ प्रगति का समन्वय खातिर ई जरूरी बा।

एक बेर फेर महान नाटककार जयशंकर प्रसाद के कहल याद कइल जाय। जब जीवन विश्व के संपत्ति हऽत निरंकुश स्वतंत्रता के सवाल कहाँ? भारतीय दृष्टि समन्वय आ सहयोग के दृष्टि ह। अपनो स्वतंत्रता के मतलब हऽ दुसरो का स्वतंत्रता के आदर कइल। आजु के स्त्री का ओह स्मृति की रचना में रत बा, जवन दूसरे के नियंत्रण में ना, विवेक सम्मत आत्म नियंत्रण में रहि के, दूसरे का स्वतंत्रता के आदर करत, अपनी स्वतंत्रता के रक्षा करेके सिखाई। ●●

❑ 302, ईशान होम्स, घूमा, अहमदाबाद–58 (गुजरात)

भोजपुरिया संस्कृति में फइलत अपसंस्कृति के विख-बेल

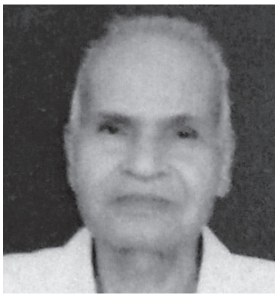

शिवपूजन लाल विद्यार्थी

एह में दू मत नइखे कि देस के सांस्कृतिक वातावरन दिन–प–दिन प्रदूषित आ विकृति के शिकार हो रहल बा। विदेसियन के हमनी प बहुत दिन ले शासन रहल। ऊ आपन भासा लादे खातिर हमनी का भासा पर आघात कइलन, सांस्कृतिक परम्परा के चूल हिलावे के जोरदार कोसिस कइलन, धक्का मरलन, हमनी प आपन सभ्यता–संस्कृति के रंग चढ़ावे के पुरकस प्रयास कइलन, मगर हमनी के सांस्कृतिक परम्परा के जड़ अतना बरियार आ गहिरा रहे कि ओकर बार–बाँकां ना भइल आ ओह प विदेसी रंग ना चढ़ल। चोर–दरवाजा से थोरिका बहुत विदेसी सभ्यता–संस्कृति के घुसपइठ जरूर भइल, बाकिर आपन संस्कृति के मूल तत्व प कवनो आँच ना आइल, ऊ अक्षुण्ण आ बेअसर रहल। आजु फेरू हमनी के सांस्कृतिक विरासत पर अपसंस्कृति के पुरजोर हमला हो रहल बा। एह हमला से हमनी के सांस्कृतिक छवि धूमिल हो रहल बा, मौलिकता अलोपित हो रहल बा। आ ई अपसंस्कृति के लहर इलेक्ट्रानिक मीडिया, सिनेमा, पच्छिमी सभ्यता, वैश्वीकरण आ उदारीकरण आउर पूंजीवादी झुकाव के दुष्प्रभाव से आ रहल बा।

अपसंस्कृति के एह चउतरफा आक्रमन से हमनी के भोजपुरियो संस्कृति बँचल नइखे। सभ केहू जानेला कि भोजपुरिया संस्कृति के आपन एगो अलगा पहिचान बा, शान–सनमान बाख रंग–रोआब बा, लेकिन अपसंस्कृति के अजगर घुसकत–घुसकत भोजपुरिया संस्कृति के साफ–सुथरा अँगना में घुसि के फोंफकार रहल बा। ओकरा बिखइला सांस से हमनी के संस्कार, रहन–सहन, खान–पान आ भासा–साहित्य चिन्तनीय रूप से प्रभावित हो रहल बा।

ई बात सभ लोग जानेला कि भोजपुरिया भाई सीधा–सरल, भोला–भाला, बिना छल–कपट के ईमानदार, उदार, आ दिलदार, बाकिर अनयाय–अनेति के बरखिलाफ कट–मरे वाला व्यक्तित्व के मनई होलन। कविवर स्व0 भुवनेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव 'भानु' के निम्न पक्तियन में भोजपुरियन के संस्कृतिगत विशेषता के कुछ बानगी देखे लायक बा–

झूठ न बखाने जाने, छूत–छात माने–जाने
माने–जाने सभके, न जाने जी हजुरिया
धुरिया चढावे जाने, पीठ न देखावे जाने
दीठ न लगावे जाने आन के बहुरिया
चले के उतान जाने तान के लउरिया
बानी मरदानी जाने, चाल मस्तानी भानु
होला एक पानी के मरद भोजपुरिया।

ठाट न बनावे जाने, काट न कटावे जाने
बत न बनावे जाने, बात साफ–साफ जाने

डाँटी के बनल 'भानु' माटी के कसल उहे
खाँटी ह जवान ऊ सजल भोजपुरिया।

मगर अब ई स्थिति बदल रहल बा। भोजपुरियन के शील–सुभाव, बात–बेवहार में अब शहरी बनावटीपन आ बदचाल के बदबू समा रहल बा। संस्कारगत खाँटीपन खतम हो रहल बा। नयका पीढ़ी के लइकन में अब छोट–बड़ के खेयाल नइखे रह गइल। शील–सुभाव में उदण्डता के घुन लागि रहल बा। आजु के बाल–बच्चा आपन बाप–मतारी, गुरू–परोहित के उचित सनमान आ आदर नइखे देत। पहिले हमनी के पुरनका पीढी के लोग आपन बाप–मतारी, बूढ–बुजुर्ग के संस्कारगत सरधा भाव से गोड़ छू के प्रणाम करत रहले। बहिन भाई के कठवत भा बरगुना में पानी लेके प्रेम से गोड़ मीसत रही। मगर आजु ऊ सभ बात धीरे–धीरे सपना भइल जात बा।

एगो समय रहे जब संतान आपन पुरखन के चरन–चिन्ह प चलत राम–लछमन के आचरन आ आदर्श के जीवन में चरितार्थ करत रहन, ढारत रहन।

प्रात काल उठि के रघुनाथा, मातु–पिता
गुरू नावहि माथा।
मुनिवर सयन कीन्हि तब जाई, लगे चरन
चाँपन दोउ भाई।।
उठे लखनु निसि विगत सुनि अरून सिखा
सुनि कान
गुरू तें पहिलहिं जगतपति जागे रामु सुजान।।

आजु ऊ संस्कार, ऊ आदर्श सभ हवा खाये चलि गइल। कतना कदलाव आ गइल। इतना विघटन हो गइल। आजु के छोरन के, नयका पीढ़ी के किसोरन के आचरन के, वेवहार के चेहरा देखीं। सबेरे उठि के बाप–मतारी के गोड़ लागे, उनुकर आज्ञा के सिर आँख प धारन करे के बात त दूर रहल, घोड़ा बेचि के लामा तानि के दिन चढ़े ले फोंफ काटत रहत बा लोग। बड जेठ के कुछ खेयाल ना। लोकलाज के कुछ परवाह ना। अगर बाप–मतारी कुछ टोकत बोलत बाड़न तऽ उलटे उनुके प लोग चढ़ि बइठत बा, धउँस जमावे लागत बा। शिष्टाचार, शालीनता, कायदा–कानून सभ जइसे घास चरे चलि गइल।

छात्र प्रणाम–पाती से बचे खातिर गुरू से भरसक कन्नी कटा लेत बाड़न। यदि दुर्भाग्य से रस्ता में कतहीं गुरू भेंटा जात बाड़न तऽ बिल्कुल ऊपरी मन से, सतही तौर से औपचारिकता निर्वाह बस 'प्रणाम सर' कहि के खिसकि जात बाड़न। जब दिल में सरधा–भाव के स्फुरन होखे तब त माथा शिष्टाचार–भार से झुके। ई सब गिरावट, विकृति आ अवमूल्यन अपसंस्कृति के देन है। अपसंस्कृति के शिकार आजु के लइकन बड़–बुजुर्ग, बूढ–पुरनिया से बदतमीजी करे में, हुकुमउदली करे में आपन गौरव आ बड़वग्गी समुझत बाड़ेन। गली–कूची आ सड़क प फूहड हरकत करत दूअर्थी फिल्मी गीत गावत चले में अपना के आधुनिक आ समयानुकूल समुझत बाड़न। पीढ़िया प पलथिया मार के बइठ के खाइल एह पीढ़ी के लइकन के देहातीपन आ गँवारूपन के निसानी लागत बा आ बिना गोड़–हाथ धोवले, जूता–चप्पल पेन्हले कुरसी–मेज प खाइल सभ्यता आ आधुनिकता के प्रतीक। ई सभ आयातित संस्कुति के उपज ह। आ इ आयातित संस्कुति धीमा जहर लेखा हमनी के परम्परागत सांस्कृतिक धरोहर आ ब्यवहार के विषाक्त कर रहल बा। मृतप्राय बना रहल बा। मानसिक गुलामी के कारन ई खोखड़ बदलाव आ ई संस्कृतिगत विकृति आ रहल बा। ई मानसिक गुलामी आ संस्कृतिगत विकृतिये के कुप्रभाव ह कि शादी–वियाह, परब–तेवहार, छठी–छौला के अवसर प परम्परागत संस्कार गीत अब अवरतन के कलकंठ से सुने के नइखे मिलत। ओकरा जगह प अब रेडीमेड कैसेट बाजि रहल बा, फिल्मी गीत चल रहल बा।

शहरन में, कथा–वाचक खोजे–ढूँढे के झंझट का तर्‌रदुत से बचे खातिर पंडित जी के एवज में टेपे से सतनारायन भगवान के कथा आ पूजा–अर्चना सम्पन्न हो जात बा। टेप आ कैसेट अब आदमी के प्रॉक्सी कर रहल बा। ई सब मशीनीजुग के नया खोज आ शॉटकट रस्ता ह। नाच में नचनिया अब गावत नइखन, कैसेट के धुन प मुंह चलावत वाड़न आ भोंड़ा ढंग से देह दोमावत बाड़न। गुरू के सामने उनुकर छात्र खइनी ठोंकि ठोंकि के खा रहल बा, आ गुरूओ के खिला रहल बा... सिगरेट के कश लगा रहल बा। गुरू–शिक्षक खुद छात्रन से पान–सिगरेट मंगाने में संकोच नइखन करत। छात्रन के साथे सिनेमा के लुत्फ उठावत बाड़न, नाच–गाने के मजा लेत बाड़न। ई विकृति, ई अपसंस्कृति के लहर मरदे तक सीमित नइखे, अवरत लोग भी एकरा से अप्रभावित नइखे। शादी में, पार्टी में कल्ब में अब लइकन के जवरे लइकिन भी नाचत–गावत बा लोग, बारात में अब अवरत लोग भी काफी संख्या में जा रहल बा आ जिन्स पहिन के, कूदि–कूदि के, मटकि–मटकि के जवानी के उभार देखावत मस्ती में थिरकत बाड़ी। आ मरद के कान काटत बाड़ी। आधुनिकता के नाँव प,

एडवान्समेंट के दउर में एकरा के सांस्कृतिक पतन ना त का कहल जाई ?

भासा के स्तरो पर अपसंस्कृति के ई मार कम चिंताजनक नइखे। हमनी के पछिमी समभ्यता के अइसन गुलाम या कहीं, आन्हर भक्त हो गइल बानी जा कि अब 'बाबूजी' 'पिताजी' 'माई–मइया' 'आजी–दादी' 'काका–काकी' 'दीदिया' 'भउजी' आदि कहे में छोटापन आ हेठी मालूम होत बा। बड़ा गर्व बड़प्पन आ कुलीनता के अनुभव करत धड़ल्ले से आपन बाल बच्चन के डैडी, अंकल, आंटी, मम्मी, सिस्टर, मैडम, मैम, मिसेज के गुरूमंत्र सिखा रहल बानी जा। भासा के ममिला में हमनी के बच्चन के जुबान पर, ओठ पर सख्त लगाम लगावले बानी जा। अगर बच्चा कतहूँ से सुनि–सीखि के गाहे–बेगाहे भोजपुरी बोले के कोसिस करत बा भा बोल देत बा तऽ ओकरा के डाँट पियावल जाता, जइसे उ भोजपुरी बोलि के बहुत बड़ गुनाह कर देले होखे। बच्चा में भोजपुरी के बिख ना घुसो एह से मतारी–बाप बच्चन के आगा भरसक भोजपुरी बोले से परहेज करत बाड़न।

अपना भासा के प्रति हम भोजपुरियन के अइसन गलत मानसिकता आ हीन भावना बन गइल बा कि जइसे भोजपुरी पढल–लिखल लोगन के भासा ना ह, जाहिल–जपाठ के बोली ह, बेटी–रोटी करे के गाली–गलौज करे के भासा ह। इहे हीनभावना से जकड़ल आ विदेसी भासा के आकर्षण जाल में फंसल हमनी के बड़ा फक्र से गर्व–गुमान से आपन बाल बच्चन के इंगलिश मीडियम के स्कूल में दाखिला करावत बानी जा। जहाँवा अंग्रेजी ड्रेस, कान्हा प छव–सात किलो किताब कॉपियन के बोझा आ यस, नो, सर, सिस्टर, टाटा, बाँई–बाई, गुड मार्निग, मम्मी–डैडी, अंकल–आंटी जइसन चालू शब्दन के सिवाय कुछ ना हासिल होखे।

सभ्यता–संस्कृति के पइस आ फइलाव खातिर भासा–साहित्य बड़ा कारगर हरिथ्यार साबित होला। मुसलमान आ अंगरेज शासक भारत में आपन सभ्यता–संस्कृति के प्रचार–प्रसार का दिसा में इहे हथियार के इस्तेमाल कइलन। नोकरी आ रोब–रूतबा के चारा देके उर्दू–फारसी आ अंगरेजी के पढ़ाई–लिखाई के सफर शुरू भइल। उर्दू–फारसी आ अंगरेजी जानेवाला के अच्छा–अच्छा सरकारी नोकरी मिले लागल। आ एह तरह से विदेसी भसन के कैप्सूल में भरल मुस्लिम तहजीव आ अंगरेजियत के जहर भारतियन के नस–नस में गते–गते घुले लागल, पेहम होखे लागल।

हँ, ई सही बा कि मुस्लिम सभ्यता के दबदबा ढेर ना रहल, ओकर प्रभाव के तूती बहुत दिन ले ना बोल पावल। हुक्का–गुडगुड़ी के प्रचलन ओतना ना हो पावल। पायजामा–सेरवानी के फइलाव बहुत दूर तक ना भइल। भारतीयता के रंग में रंगाइल हिन्दुवन प एह पहनावा पोशाक के असर कुछ खास ना भइल। हँ, खान–पान में कलिया पुलाव, कबाब, केसर–कस्तूरी आ मिर्च–मसाला के प्रभाव आजो हमनी पर जरूर हावी बा। इतिहास में जिकिर आइल बा। चीनी यात्रियन के यात्रा वृतान्त में एह बात के चरचा आइल बा कि हिन्दू लोग बहुत सात्विक अउर शाकाहारी भोजन करत रहन। इहाँ तक कि पियाज–लहसुन जइसन तामसी तासीर वाला चीजन से दूर रहत रहन। अंगरेजन के आगमन से मुस्लिम सभ्यता के रंग रूआब बहुत कम हो गइल आ अंगरेजिय सिर पर चढि के बोले लागल। अंगरेज तऽ चल गइलन स, बाकिर आपन भासा आ कल्चर के अइसन नशीला शराब पिआ देले बाड़न स कि ओकर नशा फाटे के नाँवे नइखे लेत।

दूर–दर्शन, मारधाड, रहस्य–रोमांच, हिंसा–हत्या, सेक्स–बलात्कार, अपहरण के घटनन के ताना–बाना से बुनल फिल्म, पॉप संगीत, पेप्सी आ कोकाकोला के कल्चर–ई सभ मिली के आपन संस्कृति के पवितरता आ मौलिकता के छरन कर रहल बाटे। पॉप संगीत के धूम अब हिन्दिये तक सीमित नइखे रह गइल, भोजपुरियो में ओकर गुंज सुनाई पड़त बाटे। पहिले लोकधुनन प आधारित फिलिम संगीत के निर्माण होत रहे, पर अब फिल्मन के फूहर अश्लील गीतन के तर्ज आ नकल पर एक से एक गंदा आ घिनावन भोजपुरी गीतन के कैसेट तइयार हो रहल बा। आ ऊ कैसेट आजुकल धड़ल्ला से बस में वाहन में, सांस्कृतिक आयोजन में बज रहल बा। निश्चित बा कि ऊ गंदा गलीज कैसेट सभ्य आदमी के सुने लायक नइखे, पारिवारिक माहौल में बाजे जोग नइखे, मगर सब चलिये रहल बा। नयका पीढ़ी के नवहीं लोग एह गीतन का धुन प मोर नियन मस्त होके झूमि रहल बा। फलस्वरूप नया पीढी के लोगन के संस्कार बिगड़ रहल बा। उनकर सुभाव में उच्छंखलता बढ़ रहत बा आ तरह–तरह के विकृतियन के पइसार हो रहल बा।

अगर एह फूहर विकृतियन के गंदा प्रवाह के रोके के उपाय ना कइल जाई त गते–गते आपन संस्कृति के सभ मौलिकता आ विशिष्ट पहिचान दह जाई। एह दिसाई हमन सभ के मिलिजुलि के सोचे विचारे के चाहीं। खास क के एह कमि में कवि, लेखक,

रचनाकार, शिक्षक आ बुद्धिजीवी लोगन के आगे आवे के चाहीं। हम कुछ उपाय सुझा रहल बानी।

पहिलका बात ई क अश्लील गीतन के कैसेट प रोक लगावल जाय आ एकर खुलके भर्त्सना होय। कइसन–कइसन अश्लील आ उत्तेजना पैदा करे वाला गीत आजुकल बाज रहल बा, एकर एकाध बानगी दे रही बानी–

तोहरा के देखि गोरी कुछ–कुछ होता
आवऽ गोरी आवऽ तनी चलीं जा अलोता

गणेश जी के पापा से प्यार हो गइल
चोली प गोली चल जाता
कजरा पर कटार, राजा हम जाइवि बिहार।

एह उदाहरनन से गीतन के गिरत छिछिला स्तर के अन्दाजा बढ़िया से लगि जाता। अइसन गीतन के असर नवनिहालन प कइसन होई, आ होत बा, एकरो अनुमान करे के चाहीं। एह से इ जरूरी बा कि अइसन उत्तेजक गीतन के कैसेट प लगाम कसल जाव। एकरा में कैसेट निर्माता त दोषी बड़ले बाड़न, गीतकार आ गवइयो कम कसूरवार नइखन। सस्ता लोकप्रियता आ थोड़ा आर्थिक लाभ लोभ के चलने अइसन बजारू फूहड़ के गीतन के बाढ़ आ रहल बा। इ सभ घटिया हिन्दी के फिल्मी गीत के असर ह। एकरा पहिले भोजपुरी में प्रेमपरक आ श्रंगारिक गीत लिखाइल बा, बाकिर ओकरा में संयम आ मरजादा में ध्यान रखल गइल बा। लोक कलाकार भिखारी ठाकुर आ पूर्वी के जनक महेन्दर मिसिर श्रृंगारपरक गीतन के खूब रचना कइले बाड़न मगर काफी मरजादित आ संयत ढंग से। मानवीय संवेदना से भरल वोह गीतन में मर्म के छुए के ताकत बा। वोह में साहित्य बा, भाव के गहनता बा। एकरा ठीक विपरीत आज के कैसेटन के गीतन के साजित्य आ समाज से कवनो लेवे–देबे नइखे। सच्चाई ई बा कि उनुका साहित्य के कवनो ज्ञाने नइखे। फिल्मी गीतन के लाइन पकड़ले सतही गीत लिख रहन बाड़न जवना में सिरिफ तुकबाजी बा। अउर साँच पूछी तऽ कैसेट निर्माता, संगीतकार, गीतकार अउर गायक में प्रमुख भूमिका गीतकारे के बा। गीतकार चहिहन त गीतन के स्तर ना गिर पाई। एह से हम रचनाकार गीतकार भाइयन से निहोरा करबि कि उ लोग भोजपुरिया संस्कृति के पहिचान करावत आ आपन माटी के महक के सुरक्षित राखत स्वस्थ, श्लील आ शालीन गीत लिखसु। पइसा आ लोकप्रियता के कीमत प आपन कला–संस्कृति सउदा मत करसु। आपन गीतन के स्तर के साथ कवनो प्रकार के समझवता मत करसु।

दोसर बात इ कि सिनेमा के गंदा आ सेक्स भड़काउ पोस्टरन के बायकाट कइल जाव। प्रायः देखे में आवेला कि फिल्मी पोस्टरन में औरतन के माँसल–कोमल अंगन के कामुक उभार रहेला जवना से लड़िकन के काँच–कुआँर दिल–दिमाग प बहुत बुरा प्रभाव पड़ेला। नयका पीढ़ी के लइकन स, खास क के स्कूलिया आ कवलजिया लइका पोस्टरन में छपल अभिनेत्रियन के नंगा आ उत्तेजक तस्वीर देखि के पिक्चर देखे जालन। एह संबंध में ब्लू आ एडल्ट फिल्मन के आकर्षण के भूमिका विशेष रूप रेखांकित करे जोग बा। जवन ब्लू आ एडल्ट फिल्म किशोर वय क यानी कम उमिर के लइकन खातिर वर्जित बा ओकरा के देखे वाला अब कमसीन लइका–लइकी बाड़न। लइकी भले हुल्लड़बाजी आ छेड़खानी के घटना के चलते भा तंग आके सिनेमा हॉल में जाये के साहस नइखी जुटा पावत मगर लइकन का बारे में त कुछ नइखे पुछे के। साँच पूछीं त एह तरह के सेक्स प्रधान फिल्मन के पइसा लइकने से असूल होत बा। चुम्बन, आलिंगन के गरम दृश्यन से भरल, बेडरूम आ रेप दृश्यन से सजल अइसन कामुकता पूर्ण फिल्म के आकर्षन मे इहे नयका गुमराह पीढ़ी बा।

तीसर बात हम ई कहल चाहबि कि स्कूल–कॉलेज के पढ़ाई–लिखाई में नैतिक, आध्यात्मिक आ योग संबंधी शिक्षो के स्थान देहल जाव। सुन्दर स्वच्छ संस्कार गढ़े में, चरित्र निर्माण में आ संस्कृति के बचाव में उपरोक्त शिक्षा कारगर हथियार साबित होखे साथ ही बाप मतारी के भी चाहीं कि आपन संतान के शुरू में से अपने महापुरूषन के जीवनी से, रामायन महाभारत के ज्ञान के द्वारा आपन सांस्कृतिक आ ऐतिहसकि गौरव अउर विरासत से परिचित करावल जाय।

आ अंतिम बात इ कि हमनी के भोजपुरी लोक गीतन के बहुत सुन्दर स्वस्थ आ लमहर परम्पर बा, जवना के शब्द–शब्द में भोजपुरिया संस्कृति के असली रूप आ गुन गौरव झाँकते रहेला। बाकिर दुख के बात वा कि ई परम्परा धीरे–धीरे समाप्ति के कगार प जा रहल बा। एह लोकगीतन के ज्यादातर संपदा मौखिक आ अलिखित बा, बहुमूल्य धरोहर के बचावे के चाहत बा। विलोपित होखत संस्कार गीतन के सहेजे संगोरे के जरूरत बा। ●●

❑ द्वारा-श्री पूर्णेन्दु वर्मा, नीलकंठपुरम,
अवलेशपुर, वाराणसी-221006

समय के फेर

निशा राय

घर में नया सामान के अइला से पुरनका के पूछ घट जाला। कबो–कबो त खतमो हो जाला, कमोवेस घर परिवार आ हितइयो के ईहे हाल होला। जइसे जीजा के अइला पर फूफा के पूछ कम हो जाला, बेटी के होते बहिन के पूछ घट जाला, नात–नतकुर के होते, आजा–आजी पर 'फोकस' कम हो जाला, ठीक अइसहीं अनदेखी क सिकार बेचारी घरे क 'बोरसी' देवी भइल बाड़ी। 'हीटर' आ 'ब्लोवर' के अइला से बोरसी देवी घर से बाहर क दीहल गइली, एकाध जनी बँचलो बाड़ी त गाँव के पुरनका घर में बूढ़ पुरनिया नियर केनियो कोना में परल–परल भखड़त बाड़ी।

एगो समय रहे कि बोरसी देवी के सेवा सत्कार में बिसेस तरह के 'ट्रेंड' लोग लगल रहस। बोरसी भरलो एगो कला रहे। जहाँ एक 'घूर' भा 'घूरा' पुरुष समाज के ताप–तपवनी के परिचायक रहे, ओइजे मेहरारू जमात के 'बोरसी' अगुआनी करस। सँझलौका क बेरा जहाँ दुआरे पर घूर अगराय–अगराय के जरे त अँगना में 'बोरसी' लजाय–लजाय के चोन्हाय।

साँझ क बेरा बोरसी लइकन खातिर कहानी क अड्डा रहली त राते में ननद भउजाई के हँसी–ठिठोली के बहाना, आ सुतला राती के बुढ़िया आजी के डाँड़ दरद के इलाज।

ओइसे बोरसी समाचार प्रसारणो के एगो जरियो रहली, बोरसी तापत के बेरा जे कवनों काकी, चाची आके बइठ जास त पट्टी भर के हाल एके दरी बइठल–बइठल मिल जाव। सास–पतोह के झगरा, मरद–मेहरारू के नोंक–झोंक, खेत–खरिहान के हिस्सा–बखरा सबके खबर बोरसी के लगे रहे। बोरसी मेहरारू समाज के सुख–दुख के साझेदार रहली। बोरसी के दुनिया बहुत छोट रहे ओकरा घूर पर के राजनीति से कवनो मतलब ना रहे, ना आल इंडिया रेडियो के कवनों समाचार से। ऊ तऽ अपना सोहर, खेलवना, झूमर, सहाना में गुम रहे। बोरसी के तपाई में नया–नया सुइटर के डिजाइन खोजाव, तऽ कबो कबो परदा पर रेसम के धागा से 'वेलकम' लिखाव।

सरदी में बोरसी एक साथे तीन पीढ़ी के बान्हे वाला एगो डोरि रहली बाकिर बिकास के अँगुरी धइले बनल–ठनल, अगरात अपना लाव लस्कर के साथे बिजली कुमारी जब गाँव में पहुँचली त पूरा गाँव उनका स्वागत में हाथ–गोड़ जोड़ के खड़ा हो गइल। दालान से चुहान ले उनहीं के राज–काज आ चलती हो गइल।

नया समय के साथे पुरान बोरसी अड्जस्ट ना कर पवली आ गौरइया चिरई नियर इहो बिलुप्त होखे के कटेगरी में चहुँप गइली, अब आसमान में गौरइया के जगे पीजा के डीलिवरी करत ड्रोन बा, आ घर में बोरसी के जगही पर 'ब्लोवर'। इनकर पहुँच त बिछावन आ रजाई में ले बा, बाकिर इनहूँ के 'रिप्लेस' करे वाला कबो न कबो, केहू न केहू त अइबे करी तब ईहो ताकल करिहें कोना में बइठल टुकुर–टुकुर... बोरसी नियर। इहे समय के फेर कहाला, कबो जेकर भाव रहे, आज ऊ बेभाव बा। ●●

❑ द्वारा महेश राय, मकान नं०-841/022/515704, रामअवधनगर कालोनी,
सेन्ट जोसफ स्कूल के पीछे, जंगल सिकरी, पो० जंगल चौरी, खोराबार, गोरखपुर-273010

चार गो गीत

मिथिलेश गहमरी

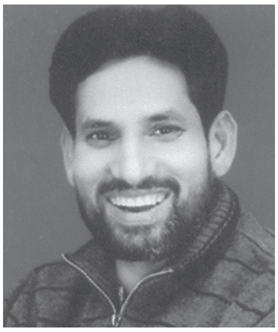

(एक)

सबका अँखियन के सपना सयान होखे।
सबका जिनगी में सोनहुल बिहान होखे।

साँसत के आन्ही के सोझा,
बुते ना कवनो दियना
तप-बल के झिलमिल उजास से
भरल रहे घर-अँगना
केहु क असरा ना कबहीं जियान होखे।

टूटे ना बिसवास के माला
मेल-मिलाप हो अइसन,
इरिखा के पत्थर से चटके
कबो ना मन के दरपन,
अपना करनी प' सबका गुमान होखे।।

लैनू में जस घीव रहेला
दिल में रहे बनाव
गंगा मइया जइसन निर्मल
सबकर बने सोभाव,
माथा चमके कि जस हिमवान होखे।

मानव से ओकर मानवता
होये न कबहूँ दूर
चमक बिखेरत रहे हमेसा
नाता कऽ कोहिनूर
साँचलि नेहिया, ना कहियो बेजान होखे।।

(दू)

इन्द्र जी से, मुँह सटवले कन्हाई
आजु के, ई गोबर्धन उठाई।।

पीठि सबका, समय के बा साटा
टभके गोरखुल-मतिन दुख के काँटा
गाढ़ दिनवाँ अब कइसे कटाई।

अब, अन्हरिया बोवेले पुर्नवासी
भइले छलिया जे रहले बिसवासी
दूध में पड़ गइल बा खटाई।

नेह के भूँइ प' उपजल बा खटका
घात, जइसे कसाई के झटका
प्रान पाखी त' गइले झुराई।

गाँव निहँसल दुखी राजधानी
फिरि गइल सउँसे सपना प' पानी
केकरा बूते समर अब ठनाई।। ••

❑ बाबूराव मोहल्ला, गहमर, गाजीपुर

✍ शशि प्रेमदेव

(एक)

जनमें से रहि गइल पखारत
सबकर मइलू नदी!

उजर गइल सज्जी सुघराई
कइसन रोग लगल!
लउके ना सुधि लेबे वाला
केहुए अगल-बगल!
-रहे कबो चन्नन, अब तऽ
लागे मँगरइल, नदी!!

कवन पाप, नाजे कइलसि
जे किसमत फूटि गइल!
नइहर से दुत्कार मिलल
आ, ससुरो छूटि गइल!
-टिकुली, सेनूर, चूड़ी अछइत
विधवा भइल नदी!!

ईहे हाल रही तऽ, आगा
करी भलाई केऽ?
परोपकार का हवन-कुंड में
हाथ जराई केऽ?
-दुनिया का पाछा अमृत से
विष हो गइल नदी!!

(दू)

ए भाई! सज्जी कसूर सरकारे कऽ बाटे!

का आन्ही-तूफान, भगत-
का गरमी, का सरदी!
हर बीपत-बलाइ का पाछा
ऊहे बे-दरदी!
-ओकरे कारन चटकत जीभि, इनारे कऽ बाटे!
ओकरे चलते भीड़-भड़क्का
मइलू भइल गंगा!
ऊहे बिया नचावत
नारी-अस्मत के नंगा!
-हमनी खातिर ऊहे बोझ कपारे कऽ बाटे!
सरकारे का डरे परइलन्
देवर-भउजाई!
अउर गबन में जेहल गइलन्
जुम्मन कऽ भाई!
-सरकारे नूँ बैरी, गाँव-जवारे कऽ बाटे!
सूध दूध कऽ धोवल
परम-पवित्तर हम जनता!
चिक्कन-चाकन
शालिग्राम कऽ पत्थर हम जनता!
- कद, हमहन से ऊँच इहाँ, अवतारे कऽ बाटे!
सज्जी कसूर सरकारे कऽ बाटे! ••

❑ प्रवक्ता अंग्रेजी, कु.सिं.इ.का., बलिया

दू गो गीत

भालचन्द्र त्रिपाठी

(एक)

जवना बगिया के दिन बीतल
जिनगानी से नाता टूटल
ओकरा खातिर मस्त बयारि कोइलिया कारी का होई
जब कुछ सुझते ना बा, अन्हियारी उजियारी का होई ।

जिनिगी में जब रंग रहे त हरदम फागुन लागे
बाकिर दिन दुख के होखे त गुनवो अवगुन लागे
जेकरा माँगि से सेनुर छूटल
जेकरा जिनिगी से सुख रूसल
ओकरा खातिर अब देवर के मीठी गारी का होई ।
जब कुछ सुझते...........

बेटवा के आँखिन में पुतरी अस राखें महतारी
ओकरा सुख खातिर दे देलीं आपन जिनिगी सारी
जेकर लाल भूखि से मरिहैं
ऊ माई सुख ले, का करिहैं
ओकरा खातिर छप्पनभोग से साजलि थारी का होई ।
जब कुछ सुझते.........

आपन पेट काटि के बाबा बेटी के घर भरिहैं
बाकिर धन के लोभी सीता के का आदर करिहैं
कंचन काया माटी होइहैं
गउरा अस तप कइ का पइहैं
जिनिगी बोझ बनी त होली, दिया-दियारी का होई ।
जब कुछ सुझते ना बा अन्हियारी-उजियारी का होई !

(दू)

कइसे अइसन से वइसन रँगाइल छिन में ।
का से का ई जिनिगिया बुझाइल छिन में ।
कुछ पवला पे केहु इतराइल केहु गँम्हीर लागेला
केहु में खुलि के केहु में दबि के ई गरूर जागेला
हमहूँ सोचली जरूर
नाहीं होब मगरूर
बाकिर सोचल सोचाइल कुल्हि भुलाइल छिन में !
का से का ई जिनिगिया........

मन एतना अपने मन के बा नीक बेकार न बूझे
कहियो ठेस लगे त खाली छिन भर खातिर सूझे
बाकिर लति बा खराब
एकर अइसन हिसाब
ई त अटपट बाति पे लोभाइल छिन में !
का से का ई जिनिगिया.......

सब अपने-अपने में अरुझल केहु के केहु ना चीन्हे
अपने बिखि से अपुने मातल दुसरो के ऊ बीन्हे
जिउ के अजबे झमेल
हँसी झूठ, प्रेम खेल
कइसों हँसियो जे आइल त हेराइल छिन में !
का से का ई जिनिगिया बुझाइल छिन में ••

❑ ग्राम-पो० : गौरी, आजमगढ़, ऊ०पी०

पं. गणेश चौबे : भोजपुरी लोक के सौन्दर्यशास्त्री

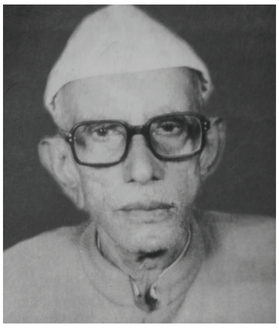

पं. गणेश चौबे

डॉ. ब्रजभूषण मिश्र

जन्म तिथि : 05 दिसम्बर, 1912
पुण्यतिथि : 29 अक्तूबर, 1997

"....चउबे जी भोजपुरी का आन्दोलन शुरू करे खातिर पहिले–पहिल आगे अइलें। ओकर अगुआ बनलें। ओह दिन से भोजपुरी आन्दोलन... ओकरे साथ रहले ओकर अगुआई करत चललें।" – डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त, भोजपुरी लोक, वर्ष : 4, अंक : 9–10 (दिस.–जन. 1992–93, पृ.–45)

पं. गणेश चौबे जी भोजपुरी भाषा–साहित्य–संस्कृति के आन्दोलन के शुरूआत करे वाला गिनल–चुनल पुरोधा लोगन में एगो रहीं। भोजपुरी भाषा–साहित्य–संस्कृति के सरूप के दुनिया के सोझा ले आवे आ ओकरा गुण–धर्म आ विशेषता के परिचय अंग्रेजी–हिन्दी–भोजपुरी, तीनों भाषा के माध्यम से करावे के काम उहाँ का आजीवन कइलीं। आज के भोजपुरी लिखवइया लोग आ छोट–बड़ संस्था बना के आन्दोलन के नाटक करे वाला लोग या त चौबे जी के अवदान के भुलाये लागल बा या त जानते नइखे। चौबे जी जेतना पढ़लीं, जेतना लिखलीं आ जेतना संग्रह कइलीं, ओकर आकलन आ विश्लेषण, मूल्यांकन सही ढंग से आज तक नइखे हो सकल। चौबेजी के पुण्य–तिथि आ जन्म तिथि के बीच के अवधि में 'पाती' के निकले वाला अंक के जरिये चौबेजी के द्वारा भोजपुरी भाषा–साहित्य–संस्कृति, खास करके भोजपुरी लोक साहित्य के क्षेत्र में जवन अवदान बा, ओकर संक्षेप में इहाँ चर्चा कइल जा रहल बा। एह से वर्तमान आ भावी दूनों पीढ़ी का प्रेरणा मिली।

डॉ. ब्रजभूषण मिश्र

भोजपुरी भाषा के प्रति जिज्ञासा उहाँ का पाँचवें में पढ़त खानी भइल, जबकि भोजपुरी लोकसाहित्य के प्रति नउँवा में पढ़त खानी। सन् 1929 ई. में उहाँ का एह बात के समझ दृढ़ हो गइल कि भोजपुरी भाषा के स्वतंत्र अस्तित्व बा, जब उहाँ का 'सुधा' नाम के पत्रिका में श्री रासबिहारी राय शर्मा के भोजपुरी के ऊपर एगो लेख पढ़नी। भोजपुरी लोक साहित्य के अध्ययन आ ओकरा संग्रह के रूचि उहाँ का शरच्चन्द्र राय के 'फॉकटेल्स ऑफ बेंगाल' के पढ़के भइल। उहाँ का अइसन अउर कई किताब पढ़नीं। ई काम नउवें में पढ़त खानी भइल। तबसे लेके, आजीवन भोजपुरी भाषा, लोक–साहित्य आ शिष्ट साहित्य के अध्ययन, संग्रह आ खोज अनवरत चलत रहल। एह बीच 1932 में मैट्रिक पास करके शॉर्टहैंड के ट्रेनिंग लिहला के बाद, मोतिहारी में क्लर्की करत उहाँ का जिला कलक्टरी के लाइब्रेरी के पुस्तकन आ गजेटियर के पूरा अध्ययन कइनी।

चौबेजी के जुड़ाव आ झुकाव पं. बनारसी दास चतुर्वेदी, डॉ. बासुदेव शरण अग्रवाल आ महापंडित राहुल सांकृत्यायन के जनपदीय आन्दोलन के ओर भइल। चौबेजी डॉ. बासुदेवशरण अग्रवाल के मत के अनुसार आपन काम आगे बढ़वलीं। सन् 1941 ई. में हिन्दी भाषा के माध्यम से भोजपुरी लोक साहित्य के अनुशीलन आ मूल्यांकन आरंभ कइनी, भोजपुरी लोकसंस्कृति के अध्ययन शुरू गइलीं। 1945

ई. से अंग्रेजी में आ 1948 ई. से भोजपुरियो में लिखे शुरू कइलीं। उहाँ का 'भोजपुरी लोक' पत्रिका खातिर हरिश्चन्द्र साहित्यालंकार के बतवले बानी कि भोजपुरी में तब जम के 1960 ई. के बाद लिखे शुरू कइनी जब बिहार में भाषाई कुचक्र शुरू भइल आ राजनीति ओह कुचक्र के हवा देवे लागल। उहाँ का आगे बतवले बानी– **"जनपदीय आन्दोलन के विरोधी वे ही लोग थे, जो हिन्दी के प्रबल समर्थक और महाविद्यालयों में हिन्दी विभागध्यक्ष थे। इन लोगों का ख्याल था कि जनपदों की सत्ता स्वीकार कर लेने पर केन्द्रीय हिन्दी संस्थाएँ कमजोर पड़ जायेंगी।** लोकभाषाओं में रचना की ओर साहित्यकारों का ध्यान जाने पर हिन्दी की प्रगति धीमी पड़ जायेगी। प्रोफेसर वर्ग इस बात से सशंकित था कि भोजपुरी में अध्यापन की स्थिति में भोजपुरी की जानकारी के अभाव में उन्हें कठिनाइयाँ होंगी। राजनीति वालों के मन में ऐसी आशंका थी कि जनपदीय संगठनों के मजबूत होने पर अलग प्रांत की माँग जोर पकड़ सकती है। इस प्रकार जो लोग जनपदीय आन्दोलन के विरोधी थे, वे स्वतः भोजपुरी विरोधी हो गए।" (भोजपुरी लोक दिस.–जन., 1992–93, पृ0–18)

अब हिन्दी वाला लोग के भोजपुरी विरोध खुल के करे आ गइल बा आ हिन्दी बचाओ मंच के जरिये भोजपुरी जइसन भाषा के आगे बढ़े से रोकल जा रहल बा। चौबेजी का एकर अनुभव आज से कई दशक पहिले हो चुकल रहे।

चौबे जी हिन्दी, भोजपुरी आ अंग्रेजी भाषा के जरिये भोजपुरी लोकसंस्कृति, साहित्य आ शब्द संपदा के विशेषता, ओकरा विशाल भांडार आ ओकरा शक्ति से दुनिया के परिचित करावत रहलीं। ओह समय के नामी अखबार, पत्रिका, जर्नल वगैरह में उहाँ के रचना सैकड़न में छपल। उहाँ के लेखन के कई प्रकार बा– लोक साहित्य संबंधी, लोकभाषा कोश संबंधी, लोकवार्त्ता संबंधी, जनपदीय आन्दोलन संबंधी, भोजपुरी भाषा आ साहित्य संबंधी, हिन्दी भाषा आ साहित्य संबंधी, ऐतिहासिक, अवशिष्ट, जीवन–परिचय आ संस्मरण संबंधी, साहित्य के समीक्षा संबंधी, पुस्तक भूमिका वगैरह। एकरा अलावे अध्यक्षीय भाषण, साक्षात्कार, पुस्तकन के भूमिका, अंग्रेजी पत्रिका के स्तम्भ लेखन सब महत्त्वपूर्ण बा। एह में सबसे बेसी उहाँ का भोजपुरी लोकगीतन पर लिखले बानी। हिन्दी में पचासन आलेख भोजपुरी लोकगीत पर बा। 'भोजपुरी लोकगीतों का अलंकरण', 'भोजपुरी लोकगीतों में नारी', 'भोजपुरी लोकगीतों में गृह निर्माण कला', 'भोजपुरी लोकगीतों में शरद शोभा', 'भोजपुरी लोकगीतों में रामकथा' जइसन आलेख उनकी कलम से निकलल बा। 'भोजपुरी लोकगीतों के अलंकरण' से एक उदाहरण इहाँ प्रस्तुत करेके चाहत बानी जवन 'लोगीतों में 'अऽ वर्णन के उपमान' उपशीर्षक में उहाँ का लिख रहल बानी–

"लोकगीतों में पौराणिक विभूतियों, नवजात शिशु, वर–कन्या, प्रेमी–प्रेमिकाओं एवं ग्रामीण नायिकाओं के सौन्दर्य–वर्णन तथा विवाह के अवसर पर गाई जाने वाली 'गालियों' में स्त्रियों के अंग वर्णन के प्रसंग में उपमानों का व्यवहार किया गया है। शिष्ट साहित्य की उपमाएँ अपनी पुरानी लीक पर हिचकोले खाती रहने वाली बैलगाड़ी के समान है, किन्तु लोकसाहित्य की उपमाएँ नदी की उद्दाम धारा सी हैं जो कूल किनारों को तोड़कर अपने लिए नया मार्ग बना लेती हैं। लोक–गीतों में यत्र–तत्र बड़ी खूबी से अंग विशेष के वर्णन उपस्थित किये गए हैं, परन्तु उनमें नख–शिख वर्णन का अभाव–सा है। यह कहना अनुपयुक्त नहीं होगा कि भोजपुरी लोकगीतों के अपने संग्रह के मंथन के पश्चात् मुझे केवल एक ही ऐसा गीत मिला है जिसे नख–शिख वर्णन की कोटि में रखा जा सकता है। यह विवाह का गीत है, जो 'उबटौनी' के अवसर पर गाया जाता है–

"मुँहवा तोरा बखानिला कउन बेटी,
जइसन दुतिया के चंद रे।
मनमानिक हिअरा, मैं तो लाजे ना बोलूँ
दोना आङ होइहें मिलाय रे।।
हथवा तोर बखानिला कउन बेटी
जइसन सोबरन के साट रे। मनमानिक...
पीठिया तोर बखानिला कउन बेटी
जइसन धोबिया के पाट रे। मनमानिक...
पेटवा तोर बखानिला कउन बेटी
जइसन पुरइन के पात रे। मनमानिक...
जँघिया तोर बखानिला कउन बेटी
जइसन केदली के थम्ह रे। मनमानिक...
नकिया तोर बखानिला कउन बेटी
जइसन सुगवा के ठोर रे। मनमानिक...
अँखिया तोरा बखानिला कउन बेटी
जइसन अमवाँ के फाँक रे। मनमानिक...
दँतवा तोरा बखानिला कउन बेटी
जइसन चमकइत बिजूरि रे। मनमानिक...

ई उदाहरण चौबे जी के अनुशीलन शक्ति के

आ शोधात्मक वृत्ति के परिचय करावत बा। लोकसाहित्य आ साहित्य के कवनो विषय के विश्लेषण के क्रम में उहाँ का तुलनो के पद्धति अपनवले बानी। जवना विषय के का स्थिति बा, दोसरा भाषा में ओह विषय के का स्थिति बा, चौबेजी बतवले बानी। 'हिरामन सुग्गा के कथा आ जायसी के पद्मावत' उहाँ के लिखल भोजपुरी आलेख बा, जवना में पूरा के पूरा तुलना पद्धति अपनावल गइल बा। लोकसाहित्य भा साहित्य के व्याख्या–विश्लेषण–मूल्यांकन के क्रम में उहाँ का सहृदयता आ सूत्रात्मकता के ध्यान रखले बानी। विवेचना के क्रम में कहीं उहाँ के असहमति बा त जिज्ञासु रूप में ओह सवाल के उठवले बानी। 'भोजपुरी प्रकाशन के सइ बरिस' में उहाँ के सूत्रात्मक आलोचना–वृत्ति के दर्शन होता बा। कवनो पुस्तक के व्यौरा देत में एक–दू वाक्य में उहाँ का विशेषतो के उल्लेख कर देत बानी।

चौबेजी कई पुस्तकन के लेखन–संपादन से जुड़ल रहल बानी। फुटकर रूप से तीनों भाषा में लेखन के बावजूद ओह सैकड़न लेख के पुस्तककार प्रकाशन के अभाव बा। एह फुटकर लेखन में से आठ गो भोजपुरी के निबंध 'भोजपुरी : कुछ समस्या आ समाधान' शीर्षक से पुस्तकाकार छपल बा। 'भोजपुरी प्रकाशन के सइ बरिस' उहाँ के बड़ा महत्त्वपूर्ण लिखित–संपादित पुस्तक बा, जवना में छपल भोजपुरी किताबन के सइ बरिस के व्यौरा प्रस्तुत बा। चौबेजी 'भोजपुरी–हिन्दी कोश' के प्रधान संपादक रहीं, जवना में लगभग 20 के 22 हजार भोजपुरी का लौकिक शब्दन के हिन्दी पर्याय भा अर्थ बतावल गइल बा। व्याकरणिक कोटि आ व्युत्पतिओ बतावे के भरसक प्रयास उहाँ के रहल बा। चौबेजी लोकसाहित्य पर केन्द्रित अंग्रेजी पुस्तक 'बिहार इन फॉकलोर स्टडीज' के सम्पादन कइले बानी। समतल बिहार से संबंधित लोकसाहित्य संबंधी आलेखन के संपादन चौबेजी द्वारा भइल बा। बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर में जब भोजपुरी भाषा–साहित्य के अध्ययन–अध्यापन के काम शुरू भइल त चौबेजी 'विश्वविद्यालय भोजपुरी पद्य–संग्रह' आ 'विश्वविद्यालय भोजपुरी गद्य संग्रह' के संपादक मंडल में रहीं।

चौबेजी कई हिन्दी–अंग्रेजी–भोजपुरी के पत्र–पत्रिकन के संपादन से जुड़त रहली, जवना में 'फॉकलोर सोसायटी कलकता' के पत्रिका 'इंडियन फॉकलोर' महत्त्वपूर्ण बा जवना के लगभग 25 बरिस तक क्षेत्रीय संपादक के रूप में उहाँ के योगदान महत्त्वपूर्ण बा।

चौबेजी विशिष्ट एकेडेमिक कामन के जरिये भोजपुरी के आगे बढ़ावे में योगदान देत रहनी। कई रिसर्च सोसाइटी से उहाँ के जुड़ल रहीं। 'बिहार रिसर्च सोसायटी', 'मिथिक सोसायटी', 'बंगलोर नागरी प्रचारिणी सभा', 'बिहार राष्ट्रभाषा परिषद', 'भोजपुरी अकादमी, पटना', 'बिहार विश्वविद्यालय पाठयक्रम समिति' के साथे–साथे लगभग छव बरिस तक उहाँ का यू.जी.सी. में लोकवार्त्ता विशेषज्ञ समिति के सदस्य रहलीं। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना द्वारा लोकसाहित्य के पुस्तकन पर दिहल जाए वाला पुरस्कारन के निर्णायक समिति में उहाँ का सदस्य रहत रहीं त आकाशवाणी, पटना द्वारा लोकगायकन के चुनाव खातिर स्वर परीक्षा समिति में लोकगीत विशेषज्ञ के रूप में तीन साल तक सदस्य रहलीं।

चौबेजी के इहाँ भोजपुरी लोकसाहित्य, संत साहित्य पर शोध करे वाला लोग का ढेर सामग्री मिल जात रहे। सरभंग संप्रदाय के संतन के परिचय आ रचना के उहाँ का खोज आ संग्रह कइले रहीं आ ओही सामग्री के आधार पर डॉ. धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री आपन शोध पूरा कइलीं। उहाँ के द्वारा खोजल दुर्लभ सात सौ ग्रंथन आ पाण्डुलिपियन के संग्रह बिहार राष्ट्रभाषा परिषद में 'चौबे संग्रहालय' के नाम से सुरक्षित बा। उहाँ का पुरातात्विक महत्व के सामग्रियन के पटना संग्रहालय के दे दिहलीं।

चौबेजी के भूमिका भोजपुरी आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण रहल बा। अइसे त उहाँ का 1947 से एह आन्दोलन से जुड़ल रहलीं। एह आन्दोलन उहाँ का सांगठनिको योगदान देत रहनी। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के गठन खातिर जवन तदर्थ समिति बनल रहे, ओह में रहीं। संगठन से आजीवन उहाँ के जुड़ाव रहल आ सम्मेलन के नउवाँ अध्यक्ष के पद उहाँ का सुशोभित कइलीं। अइसे उपाध्यक्ष भा प्रवर समिति में उहाँ का सामिल रहनी। भोजपुरी मंच पर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी आ आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा जइसन व्यक्ति लोग के ले आवे में उहाँ के अहम योगदान रहल। चौबेजी के जुड़ाव भोजपुरी अकादमी, पटना, अखिल भारतीय भोजपुरी भाषा सम्मेलन आ अखिल भारतीय भोजपुरी परिषद, उत्तर प्रदेश से रहल। जनपदीय आन्दोलन आ लोकभाषा –साहित्य संस्कृति से जुड़ल अनेक संस्थान से उहाँ के जुड़ल रहीं आ ओह सब मंच से भोजपुरी के अलख जगावत रहलीं।

चौबेजी के अनेक संस्था आ संगठन मान–आदर

देले रहे। एह संस्थन में बिहार राज्य भाषा विभाग, लोकसंस्कृति संस्थान, वाराणसी, सेतुन्यास, मुंबई प्रमुख बा। हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग विद्यावाचस्पति के उपाधि दिहलस। चौबेजी पर शोध निबंध आ शोध प्रबंध लिखाइल बा। 'इन्साइक्लोपीडिया ऑफ भोजपुरी' के रूप में प्रसिद्ध पं. गणेश चौबे के कृतित्व–व्यक्तित्व के एगो छोटहन लेख में समेटल संभव नइखे। उहाँ के लिखल आ छितराइल सामग्री कई–कई गो संग्रह आ शोध के अपेक्षा राखत बा। चौबेजी भोजपुरी भाषा–साहित्य–संस्कृति के विकास के एक–एक बात के सूचना एकत्र करे वाला जीव रहीं, एही से एहाँ के भोजपुरी के विश्वकोश मानल जात रहे। 1905 ई. में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के नउवाँ अध्यक्ष के रूप में अपना लिखित भाषण में भोजपुरी साहित्य के बढ़ंती से बड़ा प्रसन्न रहीं, उहे अंश के उद्धृत करत हम एह लेख के विराम दे रहल बानी–

"राष्ट्रीय आन्दोलन, क्षेत्रीय चेतना के जागृति आ जनपदीय आन्दोलन के फल ई भइल बाटे कि गत चालीस बरिस के अवधि में भोजपुरी में प्रबंधकाव्य, गीतिकाव्य, नाटक, कहानी, उपन्यास, ललित निबंध, समीक्षा, कोश, व्याकरण छंदशास्त्र, यात्रा साहित्य, पत्र साहित्य का हरेक विधा पर हजारो सुन्दर ग्रंथ आइल बाटे। भोजपुरी के साहित्यकार हिन्दी का गतिविधि के सतर्क दृष्टि से देखत रहत बाड़ें आ जवना ढंग के पुस्तक हिन्दी में निकलल बाटे, ओइसन ऊ भोजपुरी में ले आवे के प्रयास करत बाड़े। भोजपुरी साहित्य के जवना तेजी से विकास हो रहल बा, ओह से विश्वास कइल जा सकेला कि भोजपुरी के रागात्मक आ ललित साहित्य जल्दिए अउर अउर समृद्ध भारतीय भाषा का पाँति में बइठे लाएक हो जाई।" (पं. गणेश चौबे) ●●

❑ आदर्श ग्राम रोड-1,दादर कोल्हुवा, मुजफ्फरपुर-843108

दू गो गजल

गंगा प्रसाद अरुण

(एक)

का जाने ,का करिहें ऊ !
कहाँ फुलइहें -फरिहें ऊ ।

झूठ-फूस के जंगल में
धुरिये जेंवर बरिहें ऊ ।

लच्छन अइसन लागेला-
रकते-बीज पसरिहें ऊ ।

अपना करम -कमाई से
सात पुहुत के तरिहें ऊ ।

पुरबिज के गरहित, किर्ती
सबसे नीक उचरिहें ऊ ।

अनकर कान्हीं-लग्गी से
सबसे ऊँच फहरिहें ऊ ।

(दू)

कतनो हो गदबेर ढिठाई ना जाई ।
ढल गइलो पर ई अरुनाई ना जाई ।
कतनो आन्ही-पानी, गरमी धूर धरीं
बसियाई ना गीत, मिठाई ना जाई ।
आना-पाई, पाई पाव-छटंकी काहे जी,
कतनो जाई, सेर-सवाई ना जाई ।
हम हिम्मत के दउलत से मजबूत हईं
अपना मन के हातिमताई ना जाई ।
अपनइती के एवज में पाहुर अइसन,
इनका से जे आँट-लड़ाई ना जाई ।
बहुते माँजे के कइलीं उतजोग हमीं ,
उनका मन पर पसरल काई ना जाई ! ●●

❑ 21-बी,रोड-1,जोन-4,बिरसानगर,जमशेदपुर-831019

अनिल ओझा 'नीरद' के दू गो गीत

(एक)

दोसर का बूझी इहवाँ, दोसरा के बेमारी?
ऊ त बूझतारी चीलम, जेह पर चढ़ल बा अँगारी।।

देशवा के देखऽ अपना, आजु इहे हाल बा।
नेता लोग का करनी से, जनता बेहाल बा।।
मुट्ठी भरि भइले ई त, अंजुरिन्हि प' भारी।
बूझतारी चीलम, जेह पर चढ़ल बा अँगारी।।

आवेला चुनाव, इनिका ओठे परे फेफरी।
खोजे लागसु अबकी उद्धार हमार के करी?
जितला पर चमचनि के, भीड़ि लागे भारी।
बूझतारी चीलम, जेह पर चढ़ल बा अंगारी।।

एगो पारटी के शासन, अब त मोहाल बा।
मिलि-जुलि लूटें सभे, जनता के माल बा।।
घुरहू-कतवारूवो के, पाँव भइल भारी।
बूझतारी चीलम, जेह पर चढ़ल बा अँगारी।।

केकर बाटे राज, केकरा के गोहराईं?
बढ़ल ना कमाई, जेतना बढ़ल मंहगाई।।
पेटवे ले नइखे खाली, सइ गो बेमारी।
बूझतारी चीलम, जेह पर चढ़ल बा अंगारी।।

(दू)

किस्मति के हऽ खेल कि
हउवे समय के अइसन घानी।
जहवाँ जाली खेहोरानी, तहवाँ मिले आगि ना पानी।।

समय देखावे रंगई अइसन, बड़े-बड़े बहि जाले।
कुल्हिये अक्किलि कुल्हिये ताकत, कइल-धइल रहि जाले।
चतुर सुजान बनेले उजबुक, मति होई हलकानी।
जहवाँ जाली खेहोरानी, तहवां मिले आगि ना पानी।।

रावण आगे राम कबों, भीलन के आगे अर्जुन।
कबो कृष्ण रणछोड़ कहइले, समय के अइसन दुर्गुन।।
शक्ति नाहीं, समय हवे बलवान, इ रउआ मानीं।
जहवाँ जाली खेहोरानी, तहवां मिले आगि ना पानी।।

समय चलावे चक्र त तेजो तीर, कुंद होई जाला।
राजमहल के हरिश्चन्द्र, एक दिन फकीर होइ जाला।।
चोट सहे के हिम्मत चाहीं, लिखि जाई नया कहानी।
जहवाँ जाली खेहोरानी, तहवां मिले आगि ना पानी।।

मति समुझीं कमजोर इहाँ पर सब बाटे बलवान।।
तब काहें के हीन समझ, केहू के दूसत बानी।
जहवाँ जाली खेहोरानी, तहवां मिले आगि ना पानी।। ••

❑ हावड़ा, कोलकाता (पं० बंगाल)

यात्रा आ आस्था

आनन्द दुबे

अमेरिका के पत्रकार लिसा लिंग कहेले रहले की "उ अपना जीवन मे जवन सबसे बढ़िया सबसे उपयोगी शिक्षा पवले, उ यात्रा के दौरान रहल" (The best education I have ever received was through travel) हमहूँ ए बात से सहमत बानी, लेकिन कबो कबो अइसन शिक्षा लेबे खातिर बहुते झेले के परेला, बहुते बर्दास्त करेके परेला जइसे कि हम एने आपन दूगो यात्रा के दौरान बर्दास्त कइनी।

रेल के यात्रा होखे, टिकट कनफर्म होखे आ चाहे उ धार्मिक यात्रा होखे या श्रमिक होखे अउरू साथे में दुइ चारि गो साथी संघतिया रहसु त हुडदंगयई ना होखे ई बहुते अजीब से लागेला, ऊ अपने आप शुरू हो जाला केहुके बिना कहले, कइले। ई सब हमहूँ कइले बानी, रउओं कइले होखब अऽ लगभग सभे करेला। लेकिन ईसब आधार्मिक, अतार्किक, भयावह, कष्टकारक तब लागेला जब सामने वाला साथी यात्री के हमनी के अनदेखी करि के ई सब करेनी जा, ओकरा के कष्ट पहुँचा के करेनी जा, हमनी के पूरा के पूरा रेल अपने बुझेनिजा कारण ई रहेला की हमनी के बहुमत रहे । ऊ यात्रा के दौरान अइसन सोच अउरू अइसन काम हमरा बहुते शर्मनाक बुझाला। कम से कम हम अइसे नइखी कइले, चाहे हमरा साथे चारि गो लोग रहलन, भा चाहे हम कतने बाराती भी गइल बानी, हमरा ई बिल्कुल पसंद ना हऽ की सामने वाला के अनदेखी करिके हम मजा लूटीं, अउरू तब जब हम सार्वजनिक जगहि पर होखीं। हमरा इहो पसन्द ना ह कि हमरा सामने केहू अइसे करे, बहुते मिजाज गरमाला, बेचैनी ले लेला। मन करेला की मार के उनुकर थुथुन तूर दीं.....! लेकिन ओहि घरी कनाडा के एगो संगीतकार ड्रेक के बात याद आ जाला की जर्नी कबो कबो हमनी के आपन गन्तव्य के बारे में बहुते कुछ सिखावेला (Sometimes it's journey that teaches you a lot about your destination).

अइसन यात्रा के जब बात याद आवेला एगो दूगो घटना जरूर याद आवेला। पहिला यात्रा मुम्बई से दिल्ली स्वराज एक्सप्रेस के। समय रहे वैष्णोदेवी के दर्शन वाला, भक्तगण आपन पूरा भक्ति में रहन, ओकरा में बच्चा भक्त, जवान भक्त, बूढा भक्त, मेहरारू भक्त, मरद भक्त सभे रहे आ वो सब के बीच हम एगो सख्त रही। हमरा भक्त भइला से आपत्ति नइखे, नाहीं भक्त के भगवान दर्शन से आपत्ति बा, आपत्ति बस बा कि ऊ भक्त अउरू भगवान के यात्रा के बीचे भक्त के द्वारा आसपास के जीव जंतु के कष्ट पहुँचला पे अउरू कष्ट पहुँचवला पर। त हम रही स्वराज एक्सप्रेस में भक्त लोग के साथे अ शुरू भइल भक्त द्वारा सतरह किसिम के भक्ति के गीत, जवना में हिंदी से लेके भोजपुरी, गढवाली आ बीच बीच में आइटम भजन भी, उहो एक साथे । हमार त मथे चकराए लागल, हम त लगनी सोचे कि अब का होई तब वैष्णोदेवी के कृपा से हिम्मत जुटवनी आ कही देनी भक्त लोग से, कि ए भाई ई भजन कान में लगा के सुनी सभे, अतना काहें शोर करतानी सभे ? तबे एगो महिला भक्त के अवाज आइल की आजुकाल्हु के नवनकन के भजनों नइखे ठीक लागत, एगो तरफ से आवाज आइल की 'एयर फोन नही है'।

हम त चुपे रहल ठीक समझनी अ दु चार सइ भजन सुनत दु चार सऽ किलोमीटर तक पहुँचनी। फिर थोरे देर बाद देखत बानी की भजन में वजन कम होखे

लागल मतलब भजन में कुछ अउरू बाजे लागल, तब एक बार फिर हमरा ना रह गइल अ फेर कहनी की 'आँटी थोड़ा वॉल्यूम कम कर दीजिए' ओने से आवाज आइल की 'भलुमवा खराब है' लेकिन थोरही देरी बाद वैष्णोदेवी के कृपा से भजन अ कम वनज वाला भजन सब बंद हो गइल, हमरा त अतना सुकून मिलल की लागल कि हम दिल्ली उतर गइनी, लेकिन खिड़की से झँकनी त वड़ोदरा लिखल रहे।

हम ई नइखीं कहत कि भजन सुनल गलती हऽ चाहे सुनावल गलती हऽ, लेकिन सामने वाला जब ना चाहे त ई जबरदस्ती होई की ओकरा के हम भजन चाहे गाना सुनइबे करीं। ई बात के ख्याल हमनी के चाहे रेल में रहीं जा चाहे घरे चाहे मेट्रो में रहीं जा चाहे बस में रखे के चाही। आपना आवे वाला जनरेशनो के ए बात के समय समय पे अवगत करावत रहे के चाहीं जेकरा से ओकर आवे वाला समय सुकून से बीते अउरू एक दूसरा सुख दुख के ध्यान में रख के कउनो काम करे के चाहीं।

एगो दूसर यात्रा जवन कि एही महीना में कइनी आ ईहो मुम्बई दिल्ली के बीचे के रहे लेकिन अबकी बार गाड़ी गरीब रथ रहे अउरू हमरा साथे यात्रा करे वाला भक्त अजमेर शरीफ जात रहन लोग। हम कह सकत बानी कि अइसन यात्रा हम 18 साल के आपन यात्रा के दौरान कबो ना कइले रहीं हम बिस्वास करत बानी कि आगे भी ना करब। पिछला यात्रा अ एह यात्रा में इहे फरक रहे कि ओकरा में भजन बाजल आ ए यात्रा में अजमेर शरीफ के खुश करे खातिर कौवाली के ताल बाजत रहे।

गरीब रथ से अगर रउआ चलल होखब त जानत होखब कि एकरा में बाकी सब ट्रेनन से जादा सीट होला आ ई लालूजी के दिमाग रहे की गरीब लोग जादा बइठ सुत सकेला। वो में हमहूँ बइठ गइनी यात्रा शुरू भइल मुम्बई के बोरीवली से शुरूआत में ठीके लागल। आठ दस लोग में एक दु आदमी कौआली बजावें, बाकी लोग ईयर फोन में सुनत रहे तब कउनो खास दिक्कत ना भइल। दिकक्त भइल अहमदाबाद के बाद जब कान से ईयर फोन उतरे लागल अ किसिम किसिम के कौआली एक दूसरा के टकराए लागल कबो नुसरत फतेह अली खान के आबिद परवीन जवाब देत बाड़ी त कबो गुलाम सबरी के अल्ताफ राजा जवाब देत बाड़े। मतलब पूरा संसार के कौवाली गूंजे लागल, अइसन लागल हम गरीब रथ में ना हम कौवाल रथ में बइठल बानी अ ई रथ कहाँ जाई कवनो कहल ना जा सकेला। खैर कौआली सुने लगनी। सुनत सुनत राति हो गइल, खाना भइल, अब सुते के बेरा हो गइल तब हमरा रहि ना गइल आ कही देनी की 'भाई साब अब सोने का समय हो गया थोडा मोबाइल बंद करते तो अच्छा होता हमरा कहते सब लोग मुम्बई भासा में खूब हँसल, हमरा अजीब लागल, अजीब एह से लागल की ऊ सबलोग अच्छा घर के लागत रहे, संगे दुगो मेहरारू रही लोग, खूब खाना खाईल लोग, खूब हँसल लोग, खूब कौआली सुनल लोग हमहूँ खूब सुननी सुनत सुनत मिजाज लहक गइल, मक्का मदीना के बात सुननी, ईरान इराक के बात सुननी, सिया सुन्नी के बात सुननी, खूब बकबक कइल लोग, लेकिन ऊ लोग पूरा रात सुतल लोग ना, अउरू हमरो के सुते ना दिहल लोग।

हम सोचनी की एक दु हाली फेरू कहल जाउ लेकिन ओह लोग के हावभाव देख के हमरा हिम्मत ना भइल अ उत्तर पच्छिम रेलवे के उजरकी चादर मुँह पे डाल के रातभर अजमेर शरीफ के भक्त लोग के बतकही अउरू हुड़दंगई सुनत देखत रह गइनी, हद त पार तब कइलस जब बिहाने 5 बजे अजमेर आइल अ ऊलोग उतरे लागल अउरू हमरा से सलाह देके गइल कि ''भाई अब सो जा हमलोग जा रेला है'' मन त कइल की ई गरीब रथ के डब्बा जी 16 मे ए लोग के कब्र खोद के सुतादीं लेकिन ध्यान आइल की हम त अकेले बानी आ उ लोग 9 लोग बा। शायद एह से महटीआ के सूति गइनी लेकिन अब काहे के नींद आवे? तबतक देखत देखत जयपुर, अलवर, रेवाड़ी के बाद हमार स्टेशन गुरुग्राम आ गइल। ई त जानते होखब की ट्रेन के टाइम होला, इहो जान जाईं कि नींदो के टाइम होला, हाँ त अइसहीं बीतल हमार दूसर यात्रा। ओहि बीच एगो साथी के फोन आइल पूछे लगले की कवना गाड़ी में बाड़ऽ, बतवनी त तीन गो गारी दिहले कि काहे ई ट्रेन में टिकट लेल हऽ। कहले की अजमेर वाला रूट से कबो ना जाये के चाहीं, खैर हम त अब आ गइल बानी, दशहरा मनावत बानी, मेला घुमत–घुमावत बानी।

ई आपन यात्रा देखि के हम इहे कह सकत बानी ई भक्त अउरू भगवान के बात नइखे ई बात बा इंसान के तबियत, इंसान के रहन के, इंसान के आँगछ के कि ऊ जहाँ भी मजबूत रही, बहुमत में रही, सामने वाला के दबइबे करी, हाँ एमें हो सकेला की केहू कम केहू बेसी करेला, लेकिन करेला सभे। तब्बो इ जरूरे कहल चाहब कि हमनी जतना दूरी के यात्रा करीं जा ई जरूर खयाल रहे कि सामने वाला के हमरा से कष्ट मत पहुँचे। ●●

❑ आनन्द दुबे, 15ए, 63 योगीकृपा पीछे मनीषनगर
शापिंग सेंटर, चार बंगला, अन्धेरी वेस्ट, मुम्बई-400053

सुघर सरद चलि आइल

✍ आद्या प्रसाद द्विवेदी

भारतवर्ष ऋतुवन के त्यौहार वाला देस हवे। इहवाँ बारहो महीना प्रकृति रानी आपन रूप बदलत, धरती पर, आपन मनभावन सुघराई समय–समय पर बिखरेत रहेलीं। प्रकृति के अँगनइयाँ में ऋतु परिवर्तन के परदा उठत रहेला आ एक के बाद दूसर बारी–बारी से छः ऋतु, वर्ष भर आपन मोहिनी सूरत देखनिहारन के ललचावे बदे छिटकावत रहेली। बरखा के बहार खतम होत अबहिन देर नाहीं भइल रहे कि प्रकृति में सरद रितु के लोही अकास में झलके लागेले। रितु के अगुवानी करे बदे प्रकृति रानी अजगुत ढंग से आपन सिंगार कके तइयार हो जालीं। सुघ्घर सरद के लोही लगते नदी–तलाब के किनारे काँस–कसौजा ठठाइ के हँसि उठेला, तलइयन में कुइयाँ के फूल अकास के जोन्ही माफिक खिलि उठेला। बादर से खाली भइल निझुरक अकास में छितराइल अँजोरिया अपने भाग्य पर मचल उठेले, खिड़रिच चिरई, जवना के खंजन भी कहल जाला अँगना–दुआर पर ढुरि–ढुरि के सभकर मन गुदुरावे लागेलें। पाँक–काँदो आ पानी के उठान खतम हो जाला, जहँवा देखीं तहँवा प्रकृति के आँचर आपन गमक बिखेरत लहरत रहेला। कुछ लोग कहेलें कि अगर बसन्त रितुवन के राजा हवे त सरद रितुवन के रानी हवे। अइसने मनोरम सरद रितु के रूप–बखान से साहित्य भरल बा। महाकवि कालिदास अपने 'रितुसंहार' काव्य में सरद रितु के बड़ रसगर चित्र उरेहले हवे। उनके चित्र में सरद रितु कवनो नवही दुलहिन के माफिक दिखाई देति बा। खिलल काँस के फूल नवोढ़ा के उज्जर, धप–धप साड़ी हवे, तलाव में खिलल कमल के फूल ओकर सुघ्घर मुँह हवे, हंसन के कलरव सरदरूपी दुलहिन के पाँच में पहिनल पायल के रुनझुन हवे अवर धान के पाकल–पाकल बाली नायिका के देहि कऽ सुघराई बा। कालिदास के उरेहल चित्र देखीं–

काशां शुका विकच पद्ममनोजवक्ता,

सान्मद हंस नूपुर नाद रम्या

आपक्वशालि रुचिरा तनु गात्र यष्टि,

प्राप्ता शरन्नव बधूरिव रूप रम्या।

प्रकृति में सुघर सरद रितु अइले के संगे लोक में मनभावन त्यौहारन के धूम मचि जाले। धरती पर पानी के देश से सगरो गंदगी बहि गइल रहेला। कीच–काँच सूखि गइले से राह–बाट साफ हो जाला, नदियन के जवानी के उफान उतरि गइल रहेला,। जल शान्त अवर निरमल देखाई देबे लागेला, रितु में विजय के त्यौहार बिजयादशमी अउर रोशनी खुशहाली के तिउहार दीवाली के परब लोक मानस में उछाह भर देला। अपने बेंवत के मोताबिक सभे त्यौहार मनावेला। मांगलिक परोजन के सुरूआतो एही मौसम से होखे लागेला।

जब धरती पर रितु के बिछावन पसरेला तब प्रकृति के बदलल रूप के नजारा

के रूप में दिखाई देला– काँस के उज्जर–उज्जर फूलन से लदराइल नदी के कछार, सफेद–सफेद कुइयाँ के फूलन से गमकत ताल–तलइया, साँझ–सबेर के बेरा में छितवन पेड़ के मताइल गमक से सगरे बाग–बगइचा, सरेह गमकत रहेलन, अइसन सरद रितु के सोभा के बखान करत रीतिकालीन कवि देव कहत हवे–

आस–पास पूरन प्रकाश के पराग सूझे
बनन अगार डीठि गली है निबरते
पारावार पारद अपार दसौं दिशि बूड़ें,
विधु ब्रह्माण्ड उतरात विधि वर ते।
शरद जुन्हाई जनु पूरण स्वरूप धाई
धाई सुधा सिन्धु नभ शुभ्र गिरिवर ते
उमड़ी परत ज्योति मंडल अखण्ड सुधा
मंडल मही में इन्दु मण्डल विवर ते।

रीतिकालीन कवि सेनापति के 'ऋतु–वरणन' में शरद रितु के प्रकृति के अँगनइयाँ में अइले पर प्रकृति के बदलत रूप–रंग के मनहर रूप परोसल हवे–

पावस निकास ताते पायो अकास, भयो
जोन्ह को प्रकास, सोभा ससि रमनीय को
विमल अकास, होत वारिज विकास
सेनापति फूले कास, हित हेसन के हिय को
छिति न गरद, मनो रगे है हरद सालि
सोहत जरद को मिलायो हरि पीय को
मत्त है द्विरद, मिट्यो खंजन दरद, रितु
आई है सरद, सुखदायी सब जीय को।

सरद रितु में पूनम के राति के बयान कुछ अलग ढंग के हवे। दूधिया चाननी के बस्त्र में लपटाइल सगरी धरती के सोझा सगरे आदमी के दिल दिमाग के मदहोस बना देला। अइसन चाननी में नहाइल ध ारती साहित्य के शुक्ला अभिसारिका नायिका के तरह लगेले। आज के रात चनरमा के किरन से अमरित कण के बरखा होला। ईश्वर के सात्विक भाव के सोगहग रूप चनरमा में होला। चनरमा से झर–झर झरत चाननी ही विराट के हृदय से निकरत भक्ति हवे। इहे धरती अकास के रोआँ–रोआँ के आपन शीतल–मीठ छुवन देले। अइसन मनभावन रितु के सोभा के बखान करत भोजुपरी के कवि अवर कथाकार विवेकी राय जी कहत हवें–

झूमि उठल मद भीनल बदरा खंजन नयन निहार रे,
आइल सरद बहार रे, आइल सरद बहार,
पहरा बीति गँइल पावस के, लोग भइल खुशहाल
ताल–ताल पर कलरव उतरल, धरती भइल निहाल
झलकति पूरब ओर भोर की, गोरिया दमकल भाल
चमकल पाँव पखारल मोती, गमकल मलल गुलाल।
आइल सरद बहार।

एह रितु में धान के खेतन में धान पकि गइले से सगरे खेत पर पियराहूँ रंग पसरि उठाला। धान से लहलहात खेतन देखि के किसानन के मन हुलसि उठाला। खरिहान में सगरे सरेह के लदिमी बहुरि के आ जालीं। किसानन के मन के उछाह के वरणन करत कवि कहत बा–

धनवाँ पर चढ़ल धनि सोनवाँ के पनियाँ
छबियो पर रसे–रसे अँइठे जवनियाँ
देखिके हँसेला मन, कतहूँ कटनियाँ,
कतहूँ लोभाला मन देखि खरिहनियाँ।।

धरती पर सुन्दर, सुखद सरद के पदार्पण से एक ओर किसान के मन जहँवा अपने पकल धान के कटले में मगन होला, वहीं अपने खेतन में रबी के बावग हेतु बाझि जाला। किसान के मन अपने खेत में फसल जल्दी बोवले के धुन सवार हो जाला। सरद रितु के आवग अवर खेत में बावग के चित्र खींचत भोजपुरी को कवि प्रभुनाथ मिश्र जी लिखले हवे–

बरखा बीति गइल,
धरती पर सुखद शरद चलि आइल
लउकल नीमन रितु के आवगब
खेत–खेत में छूटल बावग
बैलन का पाछा–पाछा, हरवार चलल अकुताइल
धरती पर सुखद शरद चलि आइल।

सरद रितु विरहिन खातिर अपना प्रिय से मिलन के सनेस लेके आवेला तबे त मैथिलीशरण गुप्त के 'साकेत' काव्य क विरहिन उर्मिला सरद के अवते कहति बिया–'देखि सखी! ये खंजन आये!' आगे उर्मिला कहति हवे कि अब सरद रितु को अइले के संगे हमार पति लक्ष्मण जी अयोध्या लवटे खातिर आपन दृष्टि

एहर घुमइहें। बरसात के मौसम में जवन वियोगिन अपने प्रिय के वियोग में तलफत रहले, सरद रितु के अवते अपने पिय के पाके हुलसि उठेले। अइसने एक संयोगिनी औरत के चित्र श्री रामनाथ पाठक 'प्रणयी' अपने एक कविता में उभरले हवे, जवन अपने पिया के अइले के उछाह में केतना मगन बा–

सरदवो लहँगा लहराइल

बज उठल केकर दू पायल, के दो मुसुकाइल।

बीति गइल बरखो के पहरा, सिहिरावन लागे भिनसहरा।

ताल–ताल के लाल उमिरियो, खिल–खिल इठलाइल।

साफ भइल आकास सुहावन, खँजरीक उतरल मनभावन।

रात–रात भर, पात–पात पर मोती छितराइल। सरद के लहँगा लहराइल।

आँगन–आँगन में अगुवानी, पूजा–दीप अरघ के पानी।

उड़ल चान के उड़ल खटोला, बलमा घर आइल। सरद के लहँगा लहराइल।

सरद रितु में पति के परदेस में टहरल बिरहिन नायिका खातिर कठोर पीड़ा अवर दाह उपजावे वाला होला। सूखल पाँक पर काँस कसौजा के खिलल देखिके, ताल में खिलल कमलन के बहार के अवसर, कमल बन के ऊपर भँवरा–भँवरी के गुंजार निरखत, अकास में खिलल चंदा के ओर चकोर के निहारल, ई सब दृश्य देखि के वियोगिनि नायिका के मन पिय मिलन बदे आतुर हो उठेला। देखीं, कवना एंग से श्रीराम सिंह उदय जी लोकशैली में सरद रितु के भावपूर्ण बरणन कइले हवे– /सखि! गइली बदरिया बिलाइ, बलमुआ विदेस हेराइल हो/सरदवा के दिन आइल हो!/

अइसन सरद में चँदा त अपने चाननी से अमरित के बरखा करबे करेला भोरहीं के बेरा में हरसिंगार के बेधक महक आ सँझैती के बेर में छितवन के दूर तक पसरल दाहक खुशबू अगर केहू के मन के बहका दे त कवनो अजगुत ना हवे। तबे त कवि बच्चन पाठक सलिल जी कहि रहल हवे–/चान चहकत बा त चहँक जाय द/रजनीगंधा के तूँ महक जाये द/ ई चाननी रात, आ हम तूँ रानी/मनवा जे बँहके, त बहँक जाये द। एही रूप में तारकेश्वर उपाध्याय के भी एक गीत 'सरद चलि आइल' के भी कुछ पंक्ति के नमूना देखल जा– /भागलि हँसति बयार, डगर मुसुकाइल/बादर लिहलसि चैन, सरद चलि आइल/ गावे लागल ताल, तलैया नाचलि/कोई कइके सिंगार नचावे लागलि/।

बारह महीना में कुआर आ कातिक महीना सरद रितु के भाँजा में पड़ेला, कातिक महीना में अमावस के दिया दियारी के तिउहार मनावल जाला। गाँव देहात आ शहर सब जगह दिवाली के धूम सब केहू के उछाह से भर देला। ये दिन दीपन के रोशनी में गाँव–नगर सब नहा उठेलें। नदियन के कगार पर बसल शहरन में दीपन के रोशनी अकास के लगायत नदी के निरमल पानी में आपन छाया बिखेरि के एक अद्भुत छटा के दृश्य खड़ा क देला। बहुत जगहा पर देखल जाला कि गंगा किनारे रहे वाली औरत लोग गंगा मइया के धार में दीप बहाके दीपदान के उत्सव मनावेली। कुछ लोग एह अवसर पर आकाशदीप के भी जलावेले जवना के मूल में भावना ई रहेले कि दो अकासदीप से हम अपने प्रिय लोगन के राह देखा रहल हईं, जे ब्यापार के सिलसिला में आपन नाव लेके महीना दिन खातिर दूर–दूर तक के यात्रा करत रहे। सैकड़न बरिस पूर्व हमार सगरे व्यापार नावन से होत रहे, काहें से तब माल ढ़ोवले के आधुनिक साधन नाहीं रहे।

सरद रितु के बरणन करत खा अगर भोजपुरी लोकगीतन के चरचा ना होखे त बात अधूरे रही। देखल जा, कालिदास के 'ऋतु संहार' में शरद वर्णन के चित्र से कवनो मामला में कमतर चित्र लोकगीत में नाहीं बा जवना में सरद के अइले के चित्र उकेरल गइल बा–

सरद सुघर चलि आइल, मन हरिआइल नु हो

तरई हँसे खोरी–खोरी, सनेहिया के ओरी

खींचत सुधि डोरी नु हो!

सखिया! दुधवा नहइली अँजोरिया, त चान अगराइल नु हो!

सखि! कली–कली चुभि के भँवरवा, चलल भँगुआइल नु हो!

जइसे ऋतुवन के राजा बसन्त के रात षड़ उन्मादी होले, अइसहीं सरद–रितु के भोरहरी के बेरा बड़ सुहावन होला। ए मौसम के भोर में किसान लोग अपने खेती किसानी बदे सेकराहे सरेह में निकरि जाले। प्रकृति में चहुँओर सगरे दिसा–अकास में हरसिंगार, केवड़ा आ छितवन के फूलन के तेज महक केवल वातावरन के महका देला बलुक सगरे सृष्टि के प्राणिन के दिल–दिमाग के एक सुहावन कल्पनालोक में पहुँचा

देला। सिहरा देबे वाली खुशबू से भरल मीठि–मीठि हवा, धरती के अँचरा के सुघराई अवर मचलत चाननी के मौन–निमंत्रण, ई कुल्हि मिला के सरद–सुन्दरी के लुभा लेवे वाली रवानी भोजपुरी कवि के बरबस अपनी ओर खींचि ले रहल बा–

बड़ा नीक लागेला, सरदवा के भोर
सिहके बयार, भिनुसहरा के पहरा, त सिहके
बदन पोरे–पोर....

अइसन सुहावन सरद रितु, सरद पूर्णिमा के डूबत चान के संगे एक बरिस खातिर अलविदा होले। एह मोका पर ताल–तलइया में ओस कन से नहाइल कुइयाँ के फूलन के देखि के अइसन लगेला जइसे तलाब के अनगिनत कुइयाँ अपने एक–एक पँखुरी पर आपन आँसू चुवा के अकास के ये उज्जर धप्–धप् अतिथि देव के साल भर खातिर बिदा क रहल होखे। एह अवसर पर कवि के कंठ से अनायास ई पंक्ति सभका सोझा फूटि पड़त बा–

पहरा बीति गइल पावस के, लोग भइल
खुशहाल।
ताल–ताल पर कलरव उतरल, धरती भइल
निहाल।। आइल सरद बहार.... ••

❑ 'मालती कुंज', तारामण्डल, गोरखपुर, उ.प्र.

लघुकथा

भूख

विनोद द्विवेदी

अइसे त भूख क कई गो रंग बा, बाकि एम्मे क्षुधा क भूखि सबले बरियार होले। इ जवन ना करावे। बुभुक्षित कवनो पाप से ना डेराय। कहलो जाला कि पेट के भूखि जवन ना करावे। अबोध आ नासमझ त एके सहिये ना पावेला। क्षुधा जुड़वावे बदे ओकरा त बस खाना लउकेला।

पच्छिम बंगाल के ओह गरीब परिवार में कुल ले–देके चारे गो परानी रहले। मरद–मेहरारू आ दू गो लड़िका। कर्त्ता–धर्त्ता मर्द जब खटिया ध' लेव आ बेमारी तनी लमहर हो जाव तऽ परिवार थरथरा जाला। ईहे भइल। बेचारा मरद बेमार परल आ एक दिन खटिया धइ लेलस। जमा–पूँजी दवाई–बीरो में चट हो गइल। हाल ई भइल के नून–रोटी ले दुलम हो गइल। भूख का चपेटा में बिलबिलात, परिवार पर बिपत्ति ओह दिन घहराइल, जहिया परिवार चलावे वाला मरद के मृत्यु हो गइल। गाँव वालन का सहायता–सहयोग से दाह–कर्म भइल। भलमानुस लोगन का मदद से घर में कुछ दिन खातिर खर्चियो जुट गइल। बाकिर मदद क राशन केतना दिन आड़ित भूखि के? मेहरारू गाँव में, घूमि–घूमि मजूरी क काम करे लागल। गाड़ी अभी ठीक से डगरबो ना कइल कि लड़िको बेमार परि गइल। जवन जुरल–ऑटल इलाजो करवलस मेहरारू।

बिधवा औरत, केतना करित? दइबो बड़ा कठकरेज हवे। बेमार बेटा के लगे, छोट बेटी के छोड़के ऊ दू चार–घर काम करे त रोटी मिले। जब बेटा क हालत ढेर बिगरे लागल तऽ काम–धंधा छोड़ के घरहीं बइठि गइल। लकड़ी जराइ के पानी गरम कइल, क्षुधा जुड़ावे बदे एकाध गो रोटी पकावल आधा–तिहा खाइल–खियावल.... एक दिन अइसनो आइल कि उपासे सुते के परल। बेमार लड़िका के कँहरत छोड़ि के पड़ोसिहा किहाँ आटा माँगे गइल त ऊ आपन दुख रोवे लागल। खाली हाथ बदहवास घरे लवटल त, लड़िकी सूखल ओठ चाटत बोलल, 'माई पेटवा अँइठत बा।' मेहरारू कपारे हाथ धइके, कहँरत बेटा का लगे चुपचाप बइठ गइल। अब ओकर कँहरल बन्न हो गइल रहे, ओकर आँखि मुना गइल रहे। मेहरारू का आँखि से आँसु झरे लागल। ऊ अचेत लड़िका का कपार पर हाथ फेरलस, लगहीं बइठल छोटकी, माई का कान का लगे फुसफुसाइल, 'भाई मरी का माई?'

–'चुप, पागल! अइसन कुबोल कइसे कढ़वले तूँ? मेहरारू ओके झँपिलावत पुछलस। अबोध लड़िकी डेराते–डेराते, रोवत बोलल, 'अइसहीं जब बाबू मरल रहलन त सब लोगन किहाँ से बहुत–बहुत आटा–चाउर आ खाना मिलल रहे।'

मेहरारू हुचुकत बेटी के घींचि के कोरा में दबवलस आ खुद फफके लागल। ••

❑ आर.के. पुरम, न्यू ककरमत्ता कालोनी, वाराणसी

खदेरू बचन

आनन्द संधिदूत

हम खदेरू वल्द पँवारू
लिहले हाथे बीड़ी-सलाई अग्नि
कहीं जो झूठ
साथ में कन्हई इहे गवाह!
कइलीं पल्लेदारी
हम जिनगी भर निहुरल-निहुरल
लदले पीठी, अउर पकड़ले
कुन्तल भर बोरा के दूनों खूँट
दउरलीं हम गोदाम से गोला
गोला से गाड़ी तक
नाँव पड़ गइल 'निहुरे'
बाकी पवलीं पइसा नीमन
लेकिन अँगरेजन का राज में।
होत चवन्नी जब चाँदी के रहुए खालिस
तब हमहूँ नवहा रहलीं
आ नारा रटलीं
एक चवन्नी चाँदी की
जय बोल महतमा गाँधी की
लेकिन एह नारा के लगते
रजत चवन्नी गिलट होखल।
मेहनत ओतने कइलीं
लेकिन मजदूरी में
चाँदी का बजाय गिलटी के सिक्का पवलीं
तवनो पर नारा गावल ना छोड़लीं
अउर जोर हुंकार लगवलीं
जय बोलो महतमा गाँधी की।

हमरो उमिर कम नइखे ए बाबू
जवना साल विक्टोरिया मुअलि
ओही साल हम पैदा भइलीं
तबसे अब तक मोदी राज तक
हम जीयत बानी आ देखत बानी
तरह-तरह के नोट-करेन्सी
टिकठ-लिफाफा
आली-जाली रँगहा सिक्का
चुम्मक जाँचल
अउर छपल स्टाम्प के पेपर
फीस बढ़ावल चलल कचहरी अउर कोर्ट के
जेतना जनता के चुसलस अँगरेज
ओह से अधिक चूस के
सिट्ठी कइलस
देसियवा गवरमेन्ट!

कर्ज-अनुदान आयात-निर्यात के
मों ना जानो भाषा
अपढ़ सतजुगिया
मगर एतना लउकत बा
रोज बहाना नया बना के
सब धन जात बिदेस
रुपइया भागल जाता
भारी होखल डालर जाता
हलुक होखल रुपिया जाता
एह खेला के नाँव पड़ल मंहगाई बाटे!

कहत साँच हम बानीं
बइठल मरनसेज पर
जब बोरा पर मिले चवन्नी
तब हमार मेहरारू दाल घीवे से छँवके
अब लइका लोग ढेर कमाता
लेकिन तेलो से छँवकल मुश्किल बाटे।

लोग कहल कि होखल देस आजाद आज
मलपुआ बनावऽ दिया जरावऽ
हमरो घरनी दिया जरवलसि पुआ बनवलसि
बाकिर कुछ ना बदलल
सिर्फ रंग-डिजाइन बा झंडा के बदलल

सबसे अधिका बिसवसनियता लज्जित होखलि
जवन काम के अँगरेजी शासन का बेरा
नेता लोग आलोचना कइलन
ओही काम के शासन-सत्ता में अइला पर
नेता लोगन के देसी सरकार
सहर्ष निपटवलसि।
जनता सोचति रहलि
कहला-कइला में ई फर्क कहाँ से
कहल-कइल में बनल फर्क
परिपाटी होखल
अब विपक्षी जवन काम के निन्दा कइलस
सत्ता में अइला पर उहे काम निपटवलस
कहिहऽ बाबू कहत होखों हम झूठ
त हमरा मूँड़ी पर
रउरा गोड़ के फाटो पनही!

भारत के नेता गण
आजादी का पहिले
स्टाम्प डिउटी का विरोध में बोलत रहलन
आजादी का बाद ई डिउटी
अउर बढ़ गइल
कोर्ट-कचहरी के लटखा
घर-घर तक फइलल
आजादी का पहिले शराबबन्दी आन्दोलन
आजादी का बाद आबकारी टैक्स बढ़ गइल
दारू का पियवइयन के
तकदीर चुसाइल
आजादी का पहिले देसी रजवाड़न के
राष्ट्र विलय क होय बिरोध, आलोचना होखे
आजादी का बाद पहिलका काम
'डलहौसी हड़पनीति' के लागू कइके
रजवाड़न के भारत देस में बिलयन होखल
कवनो नया काम ना होखल
होखत रहल जवन अबतक गोरा का राज में
ओही काम के पूरा कइल गइल ए बाबू!

काम भइल कि
हर जाति में खोल-खोज के
चागड़ के नेता बनववलन
लूटे खाये के तरकीब नया उपरवलन
बाकिर हम जइसन के तइसन
पीठी पर बोरा ढोवला के घट्ठा
लेकिन नाहीं पवलीं
हम पिन्सिन-अनुदान

हार के गइलीं
जोतिसी से तकदीर पढ़ावे
राजजोतिसी उगल हाथ घट्ठा सुहरवलन
कहलन ई सौभाग्य के परबत
देही भाग्य के खोल
अगर तू हई-हई अब रतन पहिर लऽ
दान-पुन्न में रुचि कुछ राखऽ।

मन होखत बागी, कहलस
ई सब झूठा बा
सारी दुनिया मूर्ख बनावे के चेष्टा बा
आत्मा कहलसि, सुनऽ खदेरू!
हाथ तोहार बोलत बा ओके बाँच सुनाईं
तोहके सही बात बतलाईं
अब जीवन में कबे न ढोइहऽ झण्डा
कबे न सुनिहऽ भासन
कबे न रटिहऽ नारा
अउर खदेरू चार अधेला कमे कमइहऽ
मुँह मचले त दारू पीहऽ
अपना बेटी आ पतोह के
भद्दी-भद्दी गारी दीहऽ
लेकिन गाँधी-जयप्रकाश केहू का कहि दिहला से
कबहीं जिन सरकार से लड़िहऽ
कबहीं जिन सरकार से लड़िहऽ! ••

❑ पदारथ लाल की गली, वासलीगंज, मिर्जापुर

दूबि

विजय मिश्र

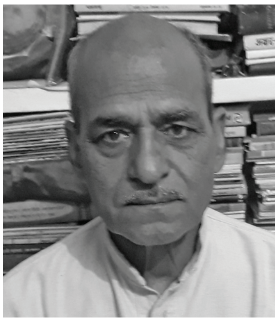

कुछु लोग, जेके समुझल
एगो अदना घास
ओकरा नरम-सुकुवार
देहिं पर रख के पैर
बुझलस अपना के श्रेष्ठ
ओकर मिट गइल अस्तित्व।

दबाइल-कुँचाइल, लथराइल
दूबि/ना मिटल,
बनि गइल परती-परास क पहिचान
सिवान का डाँड़-मेंड़ के निसान
खेत-खरिहान, राह-घाट क गवाह
जोताइल, कोड़ाइल, छिलाइल
आ गर्‌हाइल कतने बेर
फूँकि के तपइबो कइल
बाकि ना गइल जमीन छोड़ि के
गुजर गइल समय का प्रवाह में
कतने पीढ़ी
ना मिटल 'दूबि'।

जतने रहे सहनशील ओतने जुझारू
समय का सँग उगल-पनकल
लहलहा गइल
ओकरा भीतर के संचित हरियरी।
पशुअन के/चरे-अघाये का अनुकूल बनल
पलाये-पोसाये के मूल बनल
कुआँ-बावड़ी नदी-कूल के
बनल शोभा-सिंगार
धन्य, धन्य दूबि के जिजीविषा
धीरता, जीवट आ सहनशीलता
'लोक' ओकर नमन कइल
फूल सँग ओकरो जतन कइल
फेरू देवता पर चढ़ावे लागल
हर शुभ-सगुन में/लगावे लागल। ●●

❑ ग्रा०-टड़वाँ, पो०-बकवाँ, बलिया

पसेन्जर ट्रेन के नेता

अशोक द्विवेदी

नेता जब अपना रौ में होखे त भला कहाँ माने वाला? धक्काड़ किसिम के पकठाइल–खियाइल कामरेड नेता त अउरी जुझारू कहाला, ऊ केहु के ना सुने, बस अपने जोतेला। ओह दिन ट्रेन का डिब्बा में अइसने नेताजी हिनहिनात चढ़लन त लोग खुदे उनके जगह देत चल गइल। पाछा से उनकर चार गो नवहा चेला हा–हा, ही–ही करत धकियावत आगा बढ़त रहले सऽ।

नेताजी, दू जाना के घुसुकाइ के पहिले बइठलन, फेरु तनी अउर घुसुक के बगल में एगो चेला के अठन्नी–भर जगह देत, बाकी दू जाना के सोझा का सीट प बइठे के हुकुम अइसे दिहलन, जइसे सोझा के सीट उनका घर के 'लान' होखे, "एही में तनी दब–दबाइ के बइठऽ जा भाई ! दू–चार स्टेशन के त बात बा!" फेर बायाँ अलँग का लोगन के ठेलत, कहलन, "अब गिराइये के मनबऽ जा का, हे बेचारा के!' 'हे', माने अठन्नी–भर जगह में तिरछा बइठल उनकर चेलवा।

हम खिड़िकी का ऊपर वाला सीट पर ओठँघल, एह दिलचस्प 'कैरेक्टर' में रुचि लेत, तिकवते रहनी कि देखनी, सेवक जी गोड़ ऊपर कइके पलथ्थी मारत, धिरहीं–धीरे अइसन लेवाड़ लिहलन कि उनका बायाँ अलंगे बइठल लोग किकुर गइल, 'बाबू हो, जान लऽ जा कि दूनो गोड़ अकड़ गइल बा!"

उनका एह हरकत पर चेला लोग एक–दुसरा का ओर कनखी से देखत चवनिया मुसुकी मारे लागल। एकदम लाल बुझक्कड़ लेखा। एक जाना उटकेरलन, "हँ तऽ गुरूजी ओहू यूनिभरसिटी के लोग बूझि गइल होई कि केहू से पाला परल बा!"

–" बूझि का गइल लोग? पनाह माँगे लागल होई लोग। सेवक जी एमे–ओमे के कामरेड थोरे हईं? इहाँ का पहुँचे का पहिले, उहाँ दिल्ली आ बनारस से लड़िका पहुँच चुकल रहले सऽ।" दुसरका चेला उझुकुन लगवलस।

– 'सेवक जी चल जासु आ आगि ना लागो? आरे जवन जिन्दाबाद, मुर्दाबाद मचल होई कि भी.सी. ससुर आपन कपार धऽ लेले होइहें!' तिसरका आहे पर गरई टोवलस

पहिलका जाना बतकही में अभी आगा पवँरसु, एकरा पहिलहीं सेवक जी के पालथी छुटल, दूनो गोड़ नीचे करत अँड़िचले, "आरे ई सब पूँजीवादी–सामन्ती पोंगा हउवन सऽ, इन्हन प हमला बोले का पहिले, घेरे के पड़ेला। लोह–लगाते हाथ जोरि दिहले भी.सी.। शान्ती–शान्ती जाप करे लगले। हमहूँ बूझत रहनी, ऊपर का नेता लोग क दबाब आ किचाइन, ओके अउर बेचैन कइले रहे। एने लड़का माहौल गरमवले रहले सऽ, हमहूँ लड़िकन के लेके हुमाच बान्हि दिहनी आ उहाँ से तब्बे उठनी, जबले पाटी का छात्र–नेतन के रिस्टिकेशन वापसी के घोषणा ना हो गइल।"

दहिने वाला चेला, सुर्ती मलि होंकि के सेवक जी का आगा जब हाथ बढ़वलस, सेवक जी का मुँहें ब्रेक लाग गइल। एक चुटुकी सुर्ती निचिला ओठ तर दबवले आ जीभि से घुसुकावत, दूनों गोड़ सामने का सीट का ओर पसारे चलले, तले उनकर एगो चेला बायें झटका से घुसुकिया मरलस आ ओकरा सटले अरियाँ बइठल अदिमी गिरत–गिरत बाँचल, "का भाई, चैन से बइठहूँ ना देबऽ जा का? जनाता कि मय सीट प' तहने लोग फइल जइबऽ!"

–"ना भाई जी, अइसे मत रोसियाईं, देखत नइखीं सेवक जी एही में आपन गोड़वा अचके घुसरलन हँ, इहाँ का गोड़वा में दरद बा नू!" एगो चेला सफाई दिहलस

–" तऽ तूँ गोड़वा अपना कोरा में ले लऽ, कि दोसरा के धसोरबऽ? उहो पिनपिना गइल। सेवक जी अनजान बनल भागत ट्रेन के खिड़िकी से बहरी के नजारा देखे में मशगूल हो गइल रहलन। हम अब ऊपर का सीट पर उठि के, – बइठ गइल रहनी। कथा में नाटकीय मोड़ आ चुकल रहे आ हमरो जिज्ञासा बढ़ गइल रहे। अरियाँ वाला नवहा रहे, ऊ चुप ना भइल। बुझला तनी ढेरे प्रतिक्रियावादी रहे, "ए कामरेड जी, का नाँव हऽ सेवक जी। आपन गोड़वा चुपचाप नीचे करीं आ सोझ होके बइठीं। ई पसेन्जर ट्रेन हऽ, इनवरसिटी ना हऽ!"

– 'अरे भइया, नराज काहें होत बानी? इहाँ का हमहन के नेता हईं। जननेता के तनिक सम्मान कइल जाला।' एगो चेला समझावे लगलन।

–'दुइये–तीन स्टेशन के बात रहल हा, आईं हेने बइठीं, हम घुसुक जात बानी।' दुसरका चेला मोलायमियत से कहलस, बाकि अरियाँ वाला काहे के मानो, ओकर प्रतिक्रिया उबाल मारत रहे, लागल जोर–जोर से हल्ला करे। डिब्बा अवँज हो गइल त पाँच–छव गो ओकर समर्थको मोका पर जुमि गइले सऽ, ट्रेनवो त 'जनता' के रहे, उहो पसेन्जर।

का हऽ, का भइल करत तनिके देर में ऊहो बिद्यार्थी परिषद वाला तेवर में आ गइले सऽ। कामरेड पकठाइल नेता रहले, बूझि गइले कि इन्हनी के खीसि लहकल तऽ देंहि लाले–लाल हो जाई। मोका के नजाकत समझि के सीट से उठि गइले, "छोड़ऽ भाई! का झगरा कइले बाड़ऽ जा? लऽ, हम उठि जात बानी। आवऽ जा अब अराम से बइठऽ जा!"

सेवक जी अकेलहीं दू अदिमी क जगह खाली कऽ दिहले। अइसहूँ, उनका सीट पर, उनुका लेके चारिये अदिमी रहे, जबकि सोझा का सीट पर छव गो। समाजवाद का नियम से एमदमे उल्टा। हमरा हँसी बरत रहे उनका रंग बदलला पर। ओने अरियाँ वाला नवहा के गोल, लात–मूक करे प' तइयार बुझात रहे। दू गो ओही जगह में दरेरत बइठि गइले सऽ। खैर, कामरेड का बुद्धी के दाद देबे के परी कि गरगद ना मचल, बेचारू लोह–लगाते, डहर ध लिहले। हमार स्टेशन निगिचा गइल रहे, हम आपन झोरा–झक्कड़ उठवले गेट का ओर बढ़ गइनी। ••

''पाती-कला-मंच''

के दिल्ली-आयोजन

15 सितम्बर 2018,

डा0 राजेन्द्र भवन आडिटोरियम,
दीनदयाल उपा0 मार्ग, आई0टी0ओ0,
नई दिल्ली के कुछ झलकी

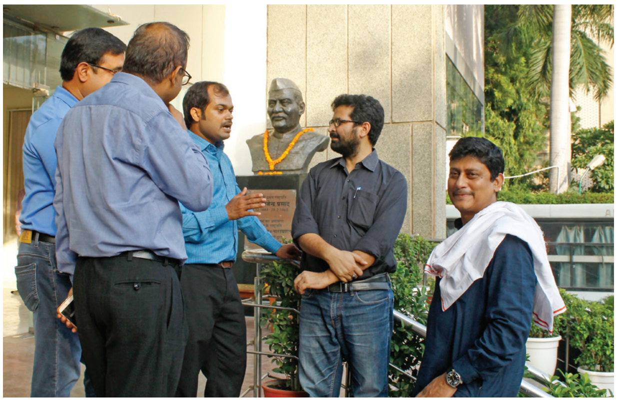

कला-मंच
एवम् भाषा के मान-सम्मान के लिए
एवम् श्री ओमप्रकाश

नैनू शुक्ल

गीत के''

नैनू शुक्ल

लोकरंजन एवम् भाषा के
गायक
नैनू शुक्ल एवम् श्री

(स्वस्थ लोकरंजन एवम् भाषा के मान-सम्मान के लिए
समर्पित नव गायक-कलाकारों का सांस्कृतिक-मंच)
“एगो साँझ : भोजपुरी गीत के”

‘पाती’ कला-मंच
गायक

व्यक्ति विशेष : रामजी पाण्डेय 'अकेला'

•• जन्म : 07 फरवरी 1939 ग्रा० – चुआड़, पो० – अटाँव,(डुमराँव), बक्सर में। माता 'श्रीमती शिवकुमारी देवी, पिता – स्व० जगन्नाथ पाण्डेय ।

•• शिक्षा : मैट्रिक (1956, बक्सर हाई स्कूल) फिर रेल में नोकरी के साथ बी०ए० आनर्स (जैन कॉलेज, आरा), एम० ए० (भूगोल, 1974 में मगध वि० वि० से)

•• प्रकाशित रचना-संकलन : भोजपुरी – 'लोढ़ा' हास्य-व्यंग कहानी संग्रह। गीत-गंध 2011, (हिन्दी में) – 'पशुचारा' हास्य-व्यंग – रूबाई, 'बेजोड़ बहक'।

•• संपादन : 'रेल हिन्दी' पत्रिका में सहयोगी संपादन एवं 'संभावनाओं से परे' (कविता संग्रह)

•• अनुवाद : "बच्चन के मधुशाला" (भोजपुरी, 2016)

•• सम्पर्क : चीनी मिल कालोनी, पो० गजाधर गंज, बक्सर (बिहार)

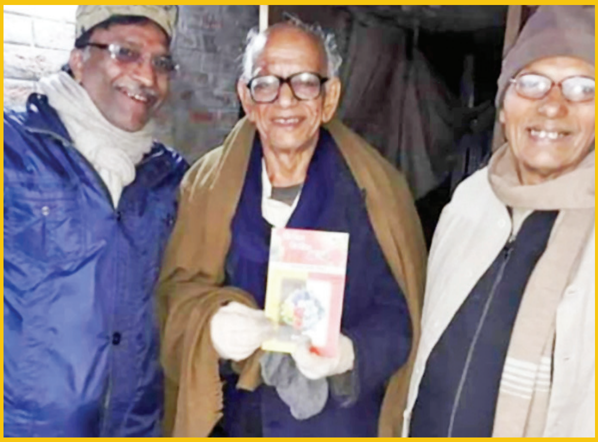

श्रीभगवान पाण्डेय, श्री रामबिलास मिश्र एवं अकेला जी

श्रीभगवान पाण्डेय के पुस्तक विमोचन समारोह में श्री रामजी पाण्डेय 'अकेला जी' के सम्मान करत डा० अशोक द्विवेदी

भोजपुरी के अलबेला : रामजी पाण्डेय अकेला

श्री भगवान पाण्डेय

अनुभूति आदमी के सबसे सहज, सुंदर आ अद्‌भुत गुण मानल जाला। आदमी के हृदय में अनुभूति के विकास आ ओकरा से उपजल भाव के प्रकट करे के सबसे बढ़िया माध्यम साहित्य होला। आदमी के मन में उपजल उदगार साहित्य के निश्छल धार में बहत चलेला। साहित्य के एही धार में सत्य, शिव आ सुंदर घुलल रहेला जवना के पान करेवाला के मन पवित्र हो जाला। साहित्य एहि तरे रचना के उद्‌गम से पाठक के मन, दिल, दिमाग तक के यात्रा पूरा क के जन जन तक पहुँचेला आ समष्टि में प्रेम, सद्‌भाव, भाईचारा, के भावना पैदा करेला। एहि से साहित्य के योजक कड़ी के रूप में देखल जाला।

आदमी सृष्टि के दूसरा जीव से एहि से भिन्न लउकेला कि ऊ अपना अंदर आ अपना बाहर के जीवन जगत के प्रति सम्वेदनशील होला। अपना बाहर के जगत के समस्या पर सोचेला आ ओके उजागर करेला भा समस्या के समाधान सुझावेला। ए काम खातिर साहित्य एगो बढ़िया माध्यम होला। जवना के सहारा लेके कई गो साहित्यकार आपन लोक आ परलोक बना लेले बा। जे आज भी हमनी के बीच जी रहल बा आ, अपना साहित्य से लोक जीवन के राह देखावत बा, ओइसने रचनाकार श्री राम जी पाण्डेय अकेला आज भी दम खम के साथे बिना कवनो यश कामना के अपना रचना धर्म के निभावत आज अशक्त हो गइल बानी।

श्री रामजी पाण्डेय "अकेला" देश के ओइसने साहित्यकार में से बानी जे कम लिख के अधिक यश पावेला। अकेला जी बक्सर जिला के डुमराँव अनुमण्डल अंतर्गत चुआड़ गांव के एगो प्रतिष्ठित ब्राह्मण परिवार में जनम लिहलीं। इहाँ के पिता के नाम स्व.जगरनाथ पाण्डेय आ माता के नाम शिव कुमारी देवी रहे। बचपन से गीत गवनई से इहाँ के प्रेम, लगाव रहे। रंगमंच पर चाहे नाटक हो भा गीत इहाँ के आपन प्रस्तुति देत रहनी। 1956 में बक्सर हाई स्कूल से मैट्रिक परीक्षा पास कइला के बाद आई.ए. करे खातिर धरिक्षणा कुंवर कॉलेज डुमरी (बक्सर) में इहाँ के नाम लिखाइल। दूनो जगह अकेला जी आपन प्रतिभा आ सांस्कृतिक अभिरुचि के देखा के सभ के प्रिय बनत चल गइनी। आई.ए. करत करत इहाँ के शादी हो गइल।

शादी के बाद अकेला जी रेल में तार बाबू के रूप में बहाल भइनी। एकरा कुछ समय बाद इहां के पत्नी के देहांत हो गइल। पत्नी के देहांत इहाँ के जीवन के एगो बड़ घटना रहे जवना के प्रभाव इहाँ के चिंतन पर पड़ल। बाकिर अकेला जी अब अपना नोकरी के साथे साथे आपन पढ़ाई आ संगे संगे

लिखे शुरू क दिहनी। हर प्रसाद दास जैन कॉलेज आरा में बी.ए.में इहाँ के नाम लिखवनी। दिन में कॉलेज आ रात के शिफ्ट में रेल के नोकरी। एहि बीच अकेला जी के दूसरी शादी हो गइल। सुखद ई रहे कि इहाँ के दूसरी पत्नी इहाँ खातिर रत्नावली बन के अइली। इनका मालूम हो गइल कि इनकर पतिदेव कविता कहानी लिखेलन। आम साहित्यकार के साथे अइसन ना होला। अधिकतर साहित्यकार के पत्नी खातिर कविता–कहानी सौत से कम ना होली सन। बाकिर अकेला जी के पत्नी साप्ताहिक मुलाकात में इहाँ से इहाँ के रचल नया कविता भा कहानी सुने के फरमाइश कर देत रहली। पारखी आ पत्नी के प्रोत्साहन से इहाँ के रचनाशीलता मुखर होखे लागल। 1962 में अकेला जी के हिंदी के एगो गीत ''जब तक मौजूद तिरंगा है'' जैन कॉलेज के प्रकाशित पत्रिका के मुख पृष्ठ पर छपल। ई इहाँ के बेजोड़ गीत कहल जाई।

जानकार भा विद्वान के आँख त अइसन होला कि ओकरा ''पूत के पाँव पालने'' से बुझाए लागेला कि आगे का सम्भावना बा। जैन कालेज आरा मगध विश्वविद्यालय के एगो प्रतिष्ठत कॉलेज रहे। एकरा में हिंदी–भोजपुरी–संस्कृत–अंग्रेजी के प्रकाण्ड विद्वान प्राध्यापक लोग रहे। अकेला जी में प्रतिभा रहे आ कॉलेज के प्राध्यापक कसौटी रहलें। अकेला जी के रचना योग्यतम काव्य पारखी के नजर के सोझा का आइल इहाँ के लेखनी सरपट दउरे लागल। सभे शिक्षक समुदाय, सहपाठी गण के सराहला से अकेला जी के उत्साह बढ़े लागल। साँचो कहल जाला कि कला भा सौंदर्य के सरहला से ओकर सुघराई बढ़ जाले। अइसन अकेला जी के साथे भईल, इ राउरा पाइब। रचनाकार के रचना के विषय में कहल गइल बा कि अरसिक के सोझा रचना सुनवला से रचनाकार थउसि जाला। काहें कि अरसिक के रचना के समझ ना होला ए से उ रचना के खाली चुपचाप सुनि ली। बाकिर एकरा से रचनाकार के उत्साह आ मनोबल गिरे लागेला एहीसे शायद महाकवि भवभूति कहले बानीं कि ''अरसिकेषु कवित्त निवेदन शिरसि मा लिख, मा लिख, मा लिख।'' मतलब कि हे विधाता अरसिक व्यक्ति के कविता सुनावे के रेखा हमरा लिलार पर मत लिखिहऽ जबकि यदि मरम के समझेवाला रचना श्रोता भा पाठक मिलेला त ऊ रचनाकार के सम्भावना के भी उकेरे ला जवना से रचनाशीलता के आँच बढ़े लागेला।

अइसने भइल भोजपुरी के चर्चित आ प्रतिष्ठित साहित्यकार श्री रामजी पाण्डेय अकेला के साथे। जैन कालेज के विद्वान प्राध्यापकन के प्रोत्साहन पा के इहाँ के रचना में निखार आवे लागल । अब इहाँ के आपन रचना पत्र पत्रिकन में भेजे लगनीं। रचना छपे लगली स, उत्साह बढ़े लागल, कल्पना उड़ान भरे लागल। देखते देखत अकेला जी हिंदी–भोजपुरी के पत्रिका रंग (बम्बई), लोकरंजन(कलकत्ता), अकेला(गोहाटी) सहित भोजपुरी कहानियाँ, भोजपुरी साहित्य, भोजपुरी माटी, जनमत, अभियान, जनहित परिवार सहित अनेकन पत्रिकन में छपे लगलीं स।

बाकिर खाली कविते रचला से साहित्यकार के रूप में स्थापना ना होला। कविता त साहित्य के संसार में प्रवेश करे वाला फाटक होला। केहू भी साहित्य के दुनिया में एकरे से होके गुजरेला। हालांकि कविता, गीत, रचल भी साधारण काम नइखे बाकिर एकरा के सृजन करे में कुछ सहूलियत बा। एकर आपन अनुशासन बा जवना के पालन कइला से कविता में लयबद्धता आ जाला आ कविता संगीतमय हो जाला जवना से श्रोता भा पाठक पर एकर प्रभाव पड़ेला। श्रोता खातिर सहज बोधगम्य हो जाला। जबकि गद्य रचना में कवनो अनुशासन ना होला, एकरा पास छंद के सहारा भी ना होला तबो एकरा लय आ संगीत पैदा करे के पड़ेला तबे पाठक भा श्रोता के प्रभावित कर पावेला। एहि से गद्य लिखल कठिन होला। शायद एही से महाकवि दण्डी कहले बानी ''गद्यम कवीनां निकषं वदन्ति''। माने कवि होखे के कसौटी गद्य होला।

अकेला जी साहित्य के दुनिया में कविता के सहारे प्रवेश क के अपना गद्य शैली के आधार पर श्रेष्ठ रचनाकार के रूप में तबे स्थापित भइनी जब इहाँ के भोजपुरी कहानी'' ''बिलायती कुकुर'' ''आ'' जीतन चाचा ''प्रकाशित भइल। आ एकर चर्चा भईल। बिलायती कुकुर के त हिंदी अनुवाद तिनसुकिया

से प्रकाशित होखेवाली हिंदी पत्रिका ''अकेला'' आ लोकरंजन (कलकत्ता) में प्रकाशित भइल। एकरा से इहाँ के खूब प्रशंसा आ यश मिलल। जवना से उत्साहित भइल स्वाभाविक रहे। साहित्य में कहानी के ऊँच पीढ़ा मिलल बा। ओकरो में जवन कहानीकार व्यंजना से भी आगे जाके व्यंग शैली में कथा रचि के समाज के राह देखावेला अइसन रचनाकार राम जी पाण्डेयअकेला जी के के ना माथे उठाई। अइसे त छिटपुट कहानी केहू कतहुँ पढ़ल भा नाहियों पढ़ल । एसे अकेला जी अपना घरे में अपरिचित रहले। बाकिर जब इहाँ के हास्य–व्यंग के पहिलकी कहानी संग्रह ''लोढ़ा'' 1982 में प्रकाशित होके आइल तब इहाँ के धमाकेदार स्थापना भइल। सही अर्थ में जे भी लोढ़ा के कहानियन के पढ़ल दांते अँगुरी काटल। लोढ़ा कहानी में कुल सोरह गो कहानी एक से बढ़ी के एक बाड़ी स। लोढ़ा पढ़ला से अकेला जी के कहानी मे व्यक्त सोच, चिंतन, भाषा के प्रौढ़ता से केहू परिचित हो सकी।

'लोढ़ा' के बाद अकेला जी के भोजपुरी में गीत संग्रह ''गीत गंध'' आ भोजपुरी गजल संग्रह ''गजल के गाँज'' (2011) प्रकाशित भइल। हिंदी के लोकप्रिय कवि हरिवंश राय बच्चन के मधुशाला से त अकेला जी अतना प्रभावित भइलन कि मधुशाला के तर्ज पर 1046 रुबाई के व्यंग संकलन''पशुचारा'' रचि दिहनी। एकरा अलावे अकेला जी के हिंदी में हास्य–व्यंग ''बेजोड़ बहक'', भोजपुरी के हास्य–व्यंग रुबाई संग्रह ''जालिम जब्बर पशुचारा'', बच्चन के मधुशाला के भोजपुरी अनुवाद प्रकाशित बा। इहाँ के कुछ पांडुलिपि त प्रकाशित होखे खातिर तैयार बा। जवना में मुकदमा (हिंदी कहानी संग्रह), मजदूर गीत (हिंदी), बिछुड़न (गीत संग्रह)।

अकेला जी के उत्साह बुढापो में कवनो नौजवान से अधिका रहल। इहाँ के रेल हिंदी पत्रिका के सम्पादन स्व. डॉ रमेश नील कमल जी के साथे मिल के कइले बानी। अकेला जी के व्यक्तित्व के सबसे आकर्षक आ प्रभावशाली पक्ष उहाँ के सरलता, उन्मुक्त हँसोड़ स्वभाव बा। मित्र मंडली में जब इहाँ के उपस्थित रहींले आ जब कवनो चर्चा में चाय के चुस्की के साथे इहाँ के बात शुरू करींले त धारा प्रवाह संस्मरण घण्टो सुनाइले। रेल में तार बाबू से स्टेशन मास्टर आ ओकरा बाद टीटीआई से सीटीआई तक के सफर क के सेवा निवृत्ति के बाद मित्र मंडली के हँसावत, लोट पोट करावत आपन संस्मरणात्मक यात्रा करावत रहींले। इहाँ के लगे बइठला पर ई बुझाई की पंच तंत्र के कहानी लेखा इहाँ के घटना से घटना आ कहानी से कहानी निकलले लागेला आ समय कब बीत जाला पता ना चले। अकेला जी में भोजपुरी खातिर समर्पण अइसन रहे कि इहाँ के महीना में एक सप्ताह डाकिया लेखा साइकिल पर भोजपुरी पत्रिका भोजपुरी माटी लेके साहित्यकार भा नियमित पाठक के पास पहुंचावत रहनी। उहाँ के कहींले की घरे घरे जा के पत्रिका बाँटे से फायदा दू गो होला। पहिलका कि जेकरा घरे जाइबि उ चाय पियाई आ ओकरा से कुछ गुफ्तगू भी हो जाई सबसे महत्वपूर्ण कि मिलला जुलला से सम्बंध कायम रहेला।

अकेला जी आज लगभग अस्सी बरिस के हो गइल बानीं। इहाँ के मधुमेह भइला के बाद साइकिल के सवारी करे लगली। पिछला लगभग तीन साल पहिले इहाँ के पक्षाघात के शिकार हो के अशक्त हो गइल बानीं। इहाँ के दुसरकी पत्नी लगभग 20 बरिस पहिले इहाँ के साथ छोड़ दिहली। बाकिर बेटा पतोह के सेवा से इहाँ के आपन दैनिक कर्म कर रहल बानी। पक्षाघात इहाँ से इहाँ के आवाज छीन लिहलस। पिछला तीन साल से इहाँ के अक्षर नइखी पहचान सकत, ना त बोल सकत बानी। ईशारा में कुछ कहींले जवन बुझाला ना। एगो सुखद बात ई बा कि मित्र भा निकट सम्बन्ध के लोगन के पहचान कर लिहींले।

मित्रन के देखते उहाँ के आँख से विवशता के लोर ढरे लागेला। कुछ देर के बाद कड़क आवाज में अपना बहू से तुरन्त चाय बनावे के इशारा करींले। बेटा भा बहू त संगे रहत रहत आवाज के इशारा समझ लेला लोग बाकिर संगे बइठल हमरा लेखा निकट के मित्र समझ ना पावेला। हमरा से उहाँ के ढेर बात बतावल चाहीला, भा अपना हिसाब से बताइले भी बाकी हमरा बुझा ना पावेला, ए से अकेला जी झुँझला जाइले।

अकेला जी अपना स्वस्थ सक्रिय जीवन में

साहित्यिक मित्रन के धधा के पकड़त रहनी हा। केहू के रेल से कहीं जाए के होखे बिना आलस कइले दिन भा रात कवनो बेरा स्टेसन जाके पहुँचावल भा कुटेम भइला पर अपना घरे ले आके आतिथ्य कइल इहाँ के आदत में शुमार रहल बा। मित्रन के समय कुसमय आर्थिक मदद करे खातिर हमेशा तैयार रहत रहनी। कवि सम्मेलन भा आकाशवाणी में कार्यक्रम में सङ्गे जाए में गाड़ी भाड़ा से लेके चाय भोजन तक के खर्च इहाँ के हमरा से ई कहते हुए करीं की रउरा हमरा से छोट बानी। अकेला जी से हमरा 1977 से कवि सम्मेलन के मंच से ही सम्बन्ध भइल। इहाँ के उत्साह आ जीवंतता हमरा के बहुत आकर्षित कइलसि। उम्र में इहाँ के हमरा से 15—17 साल बड़ रहनीं। बाकिर अकेला जी हमरा से अइसे मिलनी जइसे कवनो सहपाठी। हमरा झिझक के तूड के हमेसा उत्साहित कइनी। ई हमरे सङ्गे ना केहू के सङ्गे इहे बेवहार। बाकिर साहित्य सृजन में खास कर कविता लिखे के क्रम में यदि केहू मात्रा भा छंद के अनुशासन तोड़ देले बा त मंच भा गोष्ठी में भी ओकर खैर नइखे। उहाँ के अइसन बेबाक टिप्पणी से बहुत लोग नाराजो भइल। हम अकेले में कई बेर कहनी की रउरा अतना कड़ा काहें हो जाइले। तब एकरा पर उहाँ के कहनाम रहे कि पता ना मात्रा आ छंद के टूटल हमरा बर्दाश्त ना हो पावेला। अकेला जी के अइसन कठोर अनुशासन से हमरा लेखा आक्षरकट्टु के बड़ा लाभ भइल। भले आपन पीठ ठोके वाला और रचनाकार जवन सोचत होई। अतने ना उहाँ में अपना ज्ञान के अहंकार तनिको ना रहे। उहाँ से बहुत छोट उम्र के रचनाकारो के बहुत महत्व देत रहनी। बहुत प्रोत्साहित करत रहनी। एकरा से बहुत बनन्तू अपना के सिद्ध साहित्यकार समझे वाला खिन्न रहत रहे। लेकिन एकर असर इहाँ पर ना पड़ल । उहाँ के आपन रचना पर सुझाव माँगे में भी तनिको संकोच ना करीं। उहाँ के कहीं कि रचना केहू के देखवला से गलती के सुधार होला। आज के लिखनिहार त जवन लिख दिहले ऊ ब्रह्म रेख हो जाला। आगे अकेला जी हिंदी आ भोजपुरी साहित्य—कला के एगो संस्था ''ललित कला परिषद'' जवना के ए पंक्ति के लिखनिहार संस्थापक महासचिव बा ओकर अध्यक्ष बनावल गइल। इहाँ के अध्यक्षता में ललित कला परिषद बक्सर साहित्य आ कला खातिर बहुत काम कइलसि।।

अकेला जी अइसन बहरी भीतरी से एके दिखे वाला पारदर्शी व्यक्तित्व के निश्छल आ जीवन्त कर्म योगी के खटिपर भइला से बक्सर में सन्नाटा पसरल बा। हमेशा अपना आगा पाछा मेला लगावे वाला आजु अकेला पड़ल बा। अब हमनी के पासे त भगवान से गोहरवला के अलावा कवनो चारा नइखे। त आईंजा हमनी के भगवान से गोहराइंजा की भगवान अकेला जी के आवाज लौटा के स्वस्थ करीं ताकि सन्नाटा टूटे आ चहल पहल लौटे।

आज के समय हमरा नजर में दरिद्रता के दौर से गुजर रहल बा। आर्थिक समृद्धि में कमी नइखे । बाजार के जतने विस्तार हो रहल बा सोच ओतने संकुचित हो रहल बा। लोगन में भाव के अभाव लउकत बा आ एकरा से साहित्यकारो बाँच नइखन पावल। शब्द खातिर सम्पन्न साहित्यकार के पास कुशल क्षेम पूछे भा धन्यवाद —आभार खातिर शब्द नइखे। अइसन संवादहीनता के दौर में भोजपुरी के प्रतिष्ठित पत्रिका ''पाती'' के यशस्वी सम्पादक आ प्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ0 अशोक द्विवेदी के ध्यान फेस बुक के हमरा एगो पोस्ट पर का गइल उहाँ के बेचैनी में फोन कइनी आ अकेला जी के हाल चाल पुछनी। सङ्गे सङ्गे आदेश कइनी कि अकेला जी के साहित्यिक अवदान के समेटत उहाँ पर एगो आलेख तैयार क के भेजीं। इहाँ के कहनी कि अकेला जी के जीवन में उहाँ पर कुछ आवे के चाहीं।

हम उहाँ के उदारता, सदाशयता से भावुक हो गइनीं। जहां श्री अशोक द्विवेदी जी जइसन उदारमना यशस्वी साहित्य मनीषी आ सम्पादक बा, ओहिजा के ना त साहित्य मरी ना साहित्यकार। आदरणीय अग्रज श्री अशोक द्विवेदी के प्रति हमार विनम्र आभार। अकेला जी के सन्देश उहें के कलम से—

दुख के पहाड़ टूटल दुनिया दहल गइल
नयना के नीर देखि के पत्थर पिघल गइल।।

••

❑ रामबाग, पी.पी.रोड, बक्सर, 802101

अबूझ बुझउव्वल

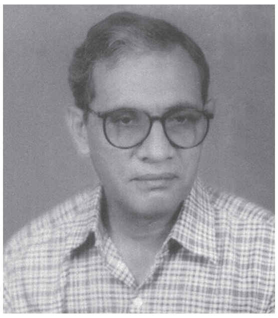

कृष्ण कुमार

रामडोर काका ललदहिया के सुखी–सम्पन्न गिरहत रहले। पाँच पीढ़ियन के गुजरला के बाद उनका पहिलवँठी बेटी पैदा भइल। उहो उनका बिआह के साल भीतरे। संयुक्त परिवार रहे। धरछना के बेटी जनमल। रामडोर काका आ काकी बड़ा खुश भइलें। पोती के पैदाइसी सुन दादा–दादी बहुत अगरइलें। टोला–पड़ोस के उहे हाल। सभे एह काम खातिर रामडोर काकी के बहाबही कइल। पूरा जिनिगी रूखा सोभाव आ परम्परावादी सोच के साथ जीये वाला दादा के ढेर दिनन से लालसा रहे कि कुल–खानदान में एगो बेटी पैदा होइत। नियति उनकर मनोकामना पूरा कइलस। ओकर नामो धराइल – 'लालसा'।

'लालसा' के बाद रामडोर काका के एगो बेटो भइलें रोसन। बेटा–बेटी भइला के बाद काका संतोष कइ लेहलें। काकी के देहिं–जाँगर कमजोर आ रोगी होखे के चलते, ऊ अपने नसबंदी करा लेहले। बाल–बचचन के पैदा भइला के बादो रामडोर काका के वैवाहिक जीवन में कवना कारण से अरूचि रहे, एकर जानकारी पूरा गाँव के केहू ना पता लगा पावल। बाकिर नियति कहल जाई कि उनकर आपन जीवन सुर–विहीन रहे। 'हमरा घरे अइसन होला' आ 'अइसन कबहूँ नइखे भइल, आ ना होई...!', ई उनकर प्रिय वाक्य रहे। ओह दूनों बेकत के जिनिगी चुपाइले बीतल रहे। जब ले सास–ससुर जिअलें, बिना माने–मतलब के तमाशा के डर से दबले जबान से घरनी विरोध करत रह गइली आ बाल–बचचन के सेयान भइला प ओहनिन के सोझा बहसबाजी टाले खातिर ऊ गूँगी साध लेत रही। छीछालेदर करे वाला ऊ मेहरारू ना रही। रोग बीतत समय के साथे देंहि के झुलरी बना देलस। गाँव के बतकही रहे। झोला छाप डॉक्टर से काका गाँवहीं में काकी के इलाज करावत रहन। काकी ना खेपि पवली। जिनिगी आ मउअत से झाकाझूमर करत, अचके में एक रात जिनिगी के लड़ाई हार गइली। सवाँग से भर मुँह बतिआवे वाली उनकर ई दिली इच्छो एही के साथे दफन हो गइल....।

घरनी के मुअते, घर–परिवार के पूरा जूआ–जुआठ काका के कान्हि प आ गइल। बाकिर ऊ ना हरलें। हिम्मत से काम लेहलें। घरनी से त ना, बाकिर बेटा–बेटी से ऊ बेइंतिहा प्रेम करत रहलन। मतारी के आँचर छिनइला के बादो बाल–बच्चन के एकर कमी ना महसूस होखे देहलें। गाँव के सरह मत बिगड़ों, एह खातिर बेटी 'लालसा' के गाँवहीं में पढ़ा के मैट्रिक पास करवलें। बाकिर बेटा के शहर में भेज के उच्च शिक्षा दिअवलें। बेटा रोसन पढ़–लिख के अफसर बन गइलें। बेटी के त ऊ अफसर ना बना पवलें। बाकिर टोपरा बई क के आ जूता तूरि के उनको खातिर अफसर दमाद खोज दिहलें। उनकर ससुर जी सरकारी अस्पताल में डॉक्टर रहलें...।

रोसन के नोकरी 'जोआइन' करते दुआर प अगुअन के धरम धक्का मच गइल। रामडोर काका सोचलें–घरनी गुजर गइली। बेटी 'लालसा' के बिआहि देनी। अब देरी कइला के काम नइखे। बेटा नोकरी करते बाड़ें। ई चूल्हा–चउका के काम में अब हाथ का जरावे के बा? बेटा के बिआह क दिहल जाउ। पतोह घर में आ जाई

त सभ दुःख किनारा लागि जाई...।

एही सोच के तहत ऊ तनिको देरी ना कइलें। दहेज के घनचक्कर में घेराइके अफसर के बैटी से बेटा बिअहलें। पढ़ल–लिखल आ सुख–सुविधन में पलाइल पतोहि गाँव में 'सेट' ना कर पवलस। बिआह के बाद पतोहि कुछ महीना ठीक–ठाक से ससुरा में रहल, बाकिर बीतत समय के साथे जलुआ करे लागलि– "सभ गति कइले रे अरजुनवा...।" ओकरो साथे मजबूरी रहे। शहरी लइकी, कतना दिनन तक गाँव में दाँति लगाओ...? एहि बीचे ओकर गरभो ठहर गइल। छुट्टी–छपाठि में जब कबो रोसन गाँवे आवसु ऊ लागे उनका के हुरपेटे, "हम रावा गाँव प ना रहबि। शहर में रउआ रहे खातिर सरकारी बँगला मिलल बा। जतना जल्दी हो सके, हमरा के ओइजा ले चलीं। एइजा हमरा ढेर तकलीफ होता। आ कान खोलि के सुन लीं, रउआ बाबूजी के सेवा हमरा से अब कबो पार लागे वाला नइखे....।"

ऊपर से गरम मसाला लेखा सास–ससुर, साला–साली के दबाव आ खोभसन। तब एक ओरे बाबूजी, गाँव के सँघतिआ, पूरा कुटुम्ब आ दोसरा ओरे घरनी आ ससुरारी वालन के जिद। एगो गोड़ एक नाइ पर आ दोसर गोड़ दोसरा पर। बड़ा फेरा में परि गइलें रोसन। ओलार ना ले पवलें। हारि गइले....।

केहु जनमजात हेहर–थेथर ना होला। परिस्थिति आदमी के अइसन बना देला। तब रोसन अपना के ना सम्हारि पवलें। बेलौस आवाज में ओह दिन पहिला हाली बाबूजी के सोझा ओकाइ के आपन मन हलुक कइलें, "इनकर दोसर देंहि बा। एइजा देहात में सही इलाज ना हो पाई। इनका के कुछ दिनन खातिर दिल्ली ले जा तानी। ओइजाँ निम्मन डॉक्टर से देखवाइ देबि। बाद में रउओ के ओइजाँ ले चलबि। घबड़ाइब मति। दिक्कत बुझाई त बेदमिआ के माई से खाएक–पानी बनवा लेबि....।"

चलत–उठत–मुसुकात जिनिगी कब, कहवाँ लेवाड़ मार दी, ई केहु के पता नइखे। फूंकि–फूंकि के डेर बढ़वला के बादो गणित गड़बड़ा जाला आ आदमी हड़बड़ा जाला। ओहि में से केहु अन्हरिआ के फारि के सम्हरि जाला आ केहु मुँहकुरिये भहरा जाला। बेटा के बतकही सुन रामडोर काका के दिने में तरेंगन लउके लागल। देंहि सिहरि गइल। रोसन के आवाज में मौजूद डर उनका के खीसि के चटक रंग में चभोरि देलस। बाकिर परिस्थितिअन के सुरतेहाल सोचि, अपना के सम्हारि लिहलें रामडोर काका। लखाई ना देलें। उनका कठेया मारदेलस। ऊ मुँह से 'हँ'–'ना' कुछुओ ना कहलें। मेजी हिला के थथमि गइलें। होत पराते अपना घरनी के साथे दिल्ली खातिर उड़ि गइलें बेटा रोसन....।

बेटा–पतोहि से अलम टूटला के बाद टूटि गइलें रामडोर काका। बेटी 'लालसा' पहिलहीं ससुरइतिन हो गइल रही। बिन घरनी घर भूत के डेरा। तब छाता थाम्हे वाला केहु घर में ना बाँचल। दिने–राति माया के झोंझ के व्याख्या मने–मन करे लगलें। बुढ़ारी के अवस्था। मन करे त कबो खाएक बनावसु ना त उपासे सुत जात रहलन। एक त गउरा अपने गोर, दोसरे अइली कम्मरि ओढ़ि। ना थाम्हि पवलें। चउथापन में देंहि अलस्त हो गइल। अवसाद से खराब रोग एह दुनिआ में कवनो दोसर, ना होला। लगलाहे 'सुरार–बी.पी.' दुनहूँ के चपेटा में, चपेता गइलें। उठ–बइठ सभ बंद। टोला–पड़ोसिया कुछ दिन दहिने–बाँये कइलें, रामडोर काका के, बाकिर दोसर कतना दिन सेवादार बनी दोसरा खातिर। आखिर दाव में उबिया के लोग उनका बेटा–बेटी लगे खबर कइलें। बाबूजी के हालत सुन बेटी लालसा नंगे गोड़े देवर के साथे नइहर जुमि अइली। बेटी देखली–दुमुँहा में पुरनका पलँगरी प माई वाला झिरकुटनी करिअवा कम्मरी में मुँह लुकववले बाबूजी कँहरत रहनी। पलँगरी के नीचे ढिमिलाइल पितरिअवा लोटा आ खरकटल स्टील के छीपा प भनभनात माछिन के रेला देखि, बिना टोल–पड़ोस के बतवले अपना बाबूजी के हाल समाचार जान गइली लालसा। दबले गोड़े बाबूजी के मुँह ओरे के कमरी उघरली। बदबू के भभका से मन तिंताइ गइल। बेटी प नजर पड़ते फफकि परले रामडोर काका, "हम अब ना बाँचबि। तोहरा के देखे के बड़ा मन करत रहे। बड़ा निम्मन कइलू हा। समय से चलि अइलू। भेंट हो गइल...।"

जबाब में सिसिकत लालसा कहली, "अब रावाँ तनिको मत घबड़ाईं। हम आ गइनी। बेटा–बेटी में कवनो फरक ना होला। रउआ अब एइजा नइखे रहे के! हम अपना सात–ससुर से रउवा बारे में बतिआ के आइल बानी। हमरा साथे रउआ चले के बा....।" आ ततलबजे बाबूजी के सेवा–सतकार में भिड़ि गइली।

हपता बीतत–बीतत बेटा रोसन अइलें, "बाबूजी, रउआ ई का हो गइल? हमरा त अइसन उमेदे ना रहे। चलीं, हम राउर 'रिजरभेसन' करा के आइल बानी। काल्हु साँझि वाली 'ट्रेन' हमनिन के पकड़ि लेबे के बा। मन में धीरज राखीं। दिल्ली में एक से एक अस्पताल बा। तेज–तर्रार डॉक्टर बाड़ें। रउआ एकदम ठीक हो जाइबि...।"

होत पराते रामडोर काका किहाँ गदर मचि गइल। बेटी आपन, आ बेटा अपना बतकही के हफन ६ ुन देलें। लालसा कहली, "रोसन बाबूजी के हमरा साथे

जाये द। इनका कवनो दिक्कत ना होई। हमार ससुर डॉक्टर बाड़े। सभ काम घरहीं हो जाई। तोहरा घरनी के देंहि दोसर बा। ऊ अपना के सम्हरिहें कि बाबूजी के...? तू हमरा के मत रोकऽ! बाबूजी के हमरा साथे जाये दऽ....।"

जबाब में नहला प दहला फेंकत रोसन कहलें, "तू तनिकी बात बूझे के कोशिश कर, दीदी...! टोल–पड़ोस, गाँव–पटीदार आ हीत–नाता एह बात के निम्मन ना कहिहें। बेटा अछइत, बेटी के घरे बाप गइले। तनि घर के इज्जत–हुरमत के खेआल करऽ। तोहरा ससुर से तेज–तर्रार डॉक्टर दिल्ली में बाड़ें। हमार बँगला दाई–नोकर से भरल–पूरल बा। इनका इचिको तकलीफ ना होई। हम अपना साथे बाबूजी के ले जाइबि...।"

पुरुष प्रधान समाज में रोसन जीत गइलें। आ तब रामडोर काका के साथे लेले दिल्ली जाये खातिर पेयान कइलें। बाकिर गइला के बाद दिन–हपता के का कहल जाउ, महीनवन बीत गइल, बाकिर रामडोर काका के कवनो हुलिआ, आह–अँटकर केहु के कुछुओ नाम ना मिलल। बेटी 'लालसा' से लेले हीत–प्रेमी सभे रोसन का लगे फोन कइल। बाकिर हरदम बस एके जबाब, "जिस नम्बर से आप सम्पर्क करना चाहते है, वो अभी स्वीच ऑफ है। कृपया कुछ देर बाद डायल करें....।" – तब सभे थिराइ गइल।

बीतत समय के साथे रोसन के एगो बड़ा सुन्नर बेटा भइल। बाकिर टेढ़–बाँगुच। दवा–बीरो ढेर करवलें। बाकिर बेटा राह प ना आइल। आजिज आके आखिरी दाव में एम्स के डॉक्टर से बेटा के देखवलें। जाँच–पड़ताल क के डॉक्टर लोग बतवलें, "ई लइका 'मार्कक्यू एमपीएस–4' बेमारी से ग्रस्त बा। पूरा देश में कतहीं एह रोग के इलाज सम्भव नइखे। एकर इलाज विदेशे में हो सकऽता। एह रोग के एक बरीस के दवाई के खरचा डेढ़ कड़ोर से अधिके लागी। अगर एकर इलाज समय से नइखीं करावत त चउदह–पनरह के उमिर होत–होत एह लइका के जिनिगी खतम हो जाई...।"

'उगलत–निगलत केरी, भई गति सांप–छुछुनर केरी....।' डॉक्टर लोग के सुन रोसन के गोड़ के नीचे धरती धसकत बुझाइल। कठया मार देसल। उनका अइसन लागल, जइसे केहू बरफ के छुरी करेजा में भोंकि देहल। लोहा के छड़ आग में लाल क के गतरे–गतरे दाग देलस। तले अचके में उनका बपहंस टोपरा के इयाद आइल। तब ऊ तनिको देरी ना कइलें। परिवार के साथे होत पराते गाँवे लवटे खातिर ट्रेन पकड़ि लेलें।

गाँव के लोग से रामडोर काका के बारे में बतवलें, "अचके में बाबूजी गुजर गइनीं। दूर–दराज के ममिला रहे, एह से हम केहु के खबर ना कइनी। ओइजे ऊहाँ के दाह–संस्कार कइके फूल–भसम हरिद्वार में प्रवाह क देनी। बाकि करमठ करे खातिर गाँवे आइल बानी...।"

पीठिआठोक अपना बेटा के जनम आ ओकरा रोग–दुख से लोगन के वाकिफ करवलें। 'लालसा' ससुरा रही। ओइजा खबर दिआइल। बाबूजी के मउअत के खबर के सदमा ऊ ना बरदास कर पवली। "आहि हो, बाबूजी" कहि के उनका मुरछा आ गइल आ दवरे प ऊ 'जै हरि' हो गइली...।

तब बाप–बेटी के मउअत पूरा गाँव खातिर अबूझ बुझउअल बन गइल। जतना मुँह ओतना बतकहीं। एह हाथ के कंकरी नौ हाथ के बीया। केहु कुछ कहल, केहु कुछ–

"जे जहंवाँ रहत आ गइल बा, ओकरा ओइजे निम्मन लागेला। गाँव–देहात के रहे वाला रामडोर काका के दिल्ली के हवा–पानी सेट ना कइलस....। "

"रामडोर काका के चुपचाप लालसवा के साथे ओकरा ससुरा उनका भेज देबे के चाहत रहे। बाकिर घरनी के कहला में परि के काका के गींजन कइ देहलें रोसन...।"

"शहरी पतोहि से रोसन के बिअहलें। ऊ ना ओलार ले पवलस रामडोर काका के। उनका तीमारदारी, सेवा–सतकार में कोताही कर देहलस....।"

"बाप के साथे अइसन ना कइल चाहत रहे, रोसन के। रामडोर काका उनका के पढ़ा–लिखा के अफसर बना दिहलें बाकिर उनका खातिर ऊ बुढ़ारी के लाठी ना बनलें....।"

"बाढ़े पूत पिता के धरमे। एह बात के तनिको ना तजबिजलें रोसन। एही से उनका विकलांग बेटा जनमल हा....।" केहुली फूआ कइली, "एके साथे, एके घर में दू–दू गो मउअत। एह पाप के मोटरी केकरा कपारे फूटी। ई दइब जानसु, रे दादा....।"

ललदहिया के लाल बुझक्कड़ कहलें, "रामडोर काका दिल्ली ना पहुँचले। बीच राह में बेटा रोसन उनका के छोड़ि के दबले गोड़े रेलगाड़ी से उतरि गइलें...।" रामडोर काका आजु नइखन। बाकिर काका 'कइसे मुअलें?', 'के मुआवल?' ई एगो अबूझ बुझउअल बनि के ललदहिया गाँव के लोगन के आजुओ आपुस में अझुरवले बा। ●●

❑ महावीर स्थान के निकट, करमन टोला, आरा, बिहार

रिश्ता

विजय शंकर पाण्डेय

बनारस कैण्ट स्टेशन से 'गंगा–कावेरी' गाड़ी बहुत दूर तक चल गइल तबो सोनू प्लेटफार्म पर खड़ा होके हाथ हिलावत रहल। आ नेहा ट्रेन के डिब्बा का गेट पर खड़ी होके। ओकर माताजी बार–बार बुलावत रहलिन, "नेहा बेटा अन्दर आओ गेट पर मत खड़ी रहो।" गाड़ी जब आँखी से ओझल हो गइल तब सोनू के मुँह से निकल उठल– "परदेशियों से ना नैना मिलानाऽ। परदेसियों को है, एक दिन जानाऽऽ।"

आज जंगमबाड़ी धरमशाला जगमग हो गइल। चित्रदुर्गा–बंगलोर से पचासन यात्री आ गइलन। अबहीं शिवरात क दिन में चार दिन बाकी हौ। ए लोगन खातिर धरमशाला चार दिन पहिले से बुक हौ। पाँच टाँगा से पूरा यात्री आयल रहलन। ओनके साथे दू पण्डा मोटर साइकिल से पीछे लगल रहलन। जइसैं टाँगा इंगिलिसिया मोड़ पर पहुँचल ओके जाम क सामना करे के पड़ल। यात्री लोगन में कंचन माँ नाँव के महिला आ दू गो पुरुष लोग हिन्दी समझत रहलन, टूटी–फूटी हिन्दी बोलबो करैं। पण्डा अउर टाँगा वाले एनकर भाषा समझेलन। इहाँ क जाम देख के यात्री लोगन के मजा आवत रहल, काहें से कि अपने तरफ ओनके अइसन देखे के ना मिलत।

एक–एक तरफ से चार–चार लाइन कार, आटो, बाइक, रिक्सा, साइकिल, ठेला, बैलगाड़ी सब अगले–बगले घुसवले बाड़न। ओही में केहू पान के पीक थूकत पसीना पोंछ के कहत बा, "का गुरू आगे बढ़इबैं कि एही ठईं बाटी–चोखा लागी"? आगे वाला आपन काला चश्मा उतार के जबाब देस, "अगवाँ देखत ना हउवा, उड़ के जाबै का?" कइसों दूइ घण्टा बाद टाँगा जंगमबाड़ी धरमशाला पहुँचल।

रंजना माँ क उमिर पैसठ बरिस क हो गयल रहल भले ओनके घरे से बहरे निकले क पहिला मोका रहल। पहिली बार गाड़ियो में चढ़ल रहलिन। बनारस कैण्ट स्टेशन पर उतरतै ओन इहाँ के हालत के मुँह बाय के निहारतै रह गइलिन। जइसे दूसरे दुनियाँ में आ गइल होयँ। यात्रियन क दउड़–भाग लाउस्पीकर क अवाज, केला वाला, सेवा वाला, खिलौना वाला, पानी वाले छोट–छोट लइका, लाल–लाल कुरता पहिनले कुली, ओही में गोड़ घसीटत भीखमंगा, नंग–धिडंग चर–चर, पँच–पैच लइका–लइकी लेहले बँगलादेशी मेहरारू, आटो वाले, होटल वाले, चन्दन टीका लगवले धोती कुरता गमछा कान्ही पर, मोट–मोट चुण्डी गठियवले, पण्डन क ठेलम–ठेला देखि के यात्र के अचरजी दुनियाँ के अँखियन से पीयत जात रहलिन। इहाँ का अजब–गजब नजारा उनके भकुवा देत रहल। पता ना का–का सोचे लागें।

ओनके समझ में न आवै कि धोती–कुरता पहिनले कंधे पर रामनामी रखले ई अदमी हम लोगन से का बतियावत हौ? कुछ देर बाद कंचन माँ, राजेश्वर राव, सब लोगन के इसारा कइलन, सब लोग एनके साथे चल दिहलन। सब यात्री महिला चाहे पुरुष एक विशेष प्रकार क पीला कैप लगवले रहे। जवने से गोल क सब पहिचान में आवत रहैं। इहाँ जाम कऽ हाल देख के, उनका दिमाक में स्टेशन क सीन घूमे लगल।

ओन अपने में मस्त रहलिन, चाहे इहाँ क भाषा समझ में आवत रहल चाहे नाहीं, अपसें में कड़बड़–सड़बड़ लगाये रहलिन।

पण्डा लोग ब्लैक कमाण्डो के तरह यात्रियन के साथे लगल रहलन। पाँचो ताँगा धरमशाला पर आके खड़ा हो गयल, यात्री लोग आपन सामान उतारे लगलन। धरमशाला क व्यवस्थापक, मंदिर क पुजारी, सोनू सब लोग गेट पर आके खड़ा हो गइलन। पाँच ठे कमरा खोल दिहल गयल। यात्रियन के समझा–समझा के सोनू सब लोगन के कमरा में पहुँचावे लगल। नेहा आ सोनू क आँख एही समय मिल गइल। अब तऽ सोनू एन लोगन के छोड़ के कहीं जाबें न करै। जवने के कहल जाला 'लव ऐट फर्स्ट साइट' तवनै घटना हो गइल।

सब यात्री नहा–धोइके ए मठ में कावेरी नदी से ले आयल, आपन–आपन शिव–पिण्ड मठ में अर्पित कइलन। साँझ के फिर पण्डा लोग अइलन। गंगा आरती देखाइ के, मन्दिर में दरशन कराके खिया–पिया के ध ारमशाला पहुँचा दिहलन। नेहा के पता नाहीं काहें इहाँ क मलइयो बहुत पसन्द आयल। सोनू से पुछलिन, "ये कौन सा मीठा है?" अइसन मिठाई ऊ अबहीं नाहीं देखले रहल। छत्तातले के चाट, ठठैरी बजार क रसमलाई, कृष्ण भोग ओकरे खातिर गूँगा क मिठाई हो गयल। कुछ लोग गौदौलिया चौराहा पर जलजोग में कचौड़ी आ रबड़ियो खा लिहलन फेरू रात दस बजे धरम–शाला में डोसा खा लिहलन।

रात के दू बजे ओइ–ओइ क अवाज आवे लगल। सोनू दउड़ के अपने ऊपर वाले कमरा से नीचे आयल, "कहीं नेहा क तबियत तऽ नाहीं खराब हो गयल। राघवेन्दर दास जी, मन्दिर क पुजारी, चौकीदार सब कोई अँगना में जुट गयल। देखलन कि चार–पाँच लोगन क हालत बहुत खराब हौ चुकल हौं। पण्डितजी सोनू से कहलन, "जल्दी से चार–पाँच आटो लाओ, इन सबको मारवाड़ी अस्पताल ले चलो।" सोनू सब लोगन के मारवाड़ी अस्पताल में भर्ती करा दिहलन। उहाँ सोनू नेहा, कंचन मा, राजेश्वर राव, अस्पताल में नीचे–ऊपर दउड़त–दउड़त थक के चूर हो गइलन। सोनू के प्रयास से आ ओकरे मीठ व्यवहार से कंचन माँ बहुत प्रसन्न भइलिन। विशेष कइके ई देख के कि नेहा आ सोनू में बहुत अच्छा ताल–मेल देखाई देत रहल। भोले बाबा के किरपा से कवनो यात्रियान क "रामनाम सत हौ" बनारस में नाहीं भयल। तीसरे दिन सुबह सब लोगन के अस्पताल से छुट्टी मिल गयल।

कंचन माँ अब सोनू पर लट्टू हो गइल रहलीं। मनहीं–मन ओके नेहा के पति जइसन मान लिहलिन। मन में विचार कइलिन कि– "लड़के के लिए बेरोजगारी की कोई समस्या नहीं है। हमको भी इसी के बहाने काशी में आने का मौका मिलेगा"। रात में सोवत के कंचन माँ, नेहा से पूछलिन–

"नेहा यह लड़का कैसा है?"

समझले के बादो, नेहा बोलल, "कौन सा लड़का माँ?"

"अरे यही सोनू जो हम लोगों के साथ अस्पताल में रहा।"

"अच्छा तुम सोनू की बात कर रही हो"

"हाँ सोनू की"

"ठीक लड़का है। लेकिन यह प्रश्न क्यों कर रही हो?, ठीक है– नहीं ठीक है। चार दिन में हम लोग अपने घर चले जाएगें, बस बात खत्म।"

"सोनू क हालत एसे उल्टा रहल, ऊ रात भर नेहा के सपना में देखत रहल रह–रह के बुद बुदा उठै, "हाँ तुम बिल्कुल वैसी हो जैसा मैंने सोचा था।"

"तो मुझसे क्या पूछती हो, जो तुम्हारी मर्जी हो करो।"

दूसरे दिन कंचन माँ पं0 राघवेन्दर दास से नेहा के शादी क बात सोनू से कहरे क चलौलिन। ओन प्रसन्नतापूर्वक झट से स्वीकार कर लिहलन। कहलन, "इससे अच्छी बात क्या हो सकती है?" बतौलन कि "मार्च के बाद शुभ मुहुर्त हौ। कवनो दिन देख के शुभ मुहुर्त में शादी हो जाई"। तब तक सब इन्तजाम कर लेवल जाय।

आज मंगलवार क दिन हौ। संकटमोचन, दुर्गा मन्दिर, सारनाथ दरशन करेके यात्री लोगन क योजना बनल। 5–6 टाँगा सुबहै आ गइलन। संकट–मोचन मन्दिर पर पीला पीला टोपी वाले बरसाती मेढक नियर पूरा मन्दिर परिसर में छितरा गइलन। मन्दिर में खूब गहमा–गरमी बा। बगल के राज जानकी मन्दिर में बहुत मनोहारी ढोलक–झाल के ताल पर सुन्दर काण्ड क पाठ होत रहल। यात्रियन के समझ में तऽ नाहीं आवत हौ, मुला उहाँ के कर्ण प्रिय संगीत क आनन्द उठावत हयन। कुछ लोग संकट–मोचन क दरशन करे बदे परसाद लेके लाइन में लगल हयन। मन्दिर के बरमदा में पण्डित लोग चन्दन लगा के मोटी चुटिया बन्हले रामनामी ओढ़ के चटाई पर बइठल सुमिरनी लेके बुदबुदात हयन। मन्दिर के चारो तरफ परिक्रमा करे वाले एनके आगे सीधा चाहे कुछ रुपया रख के प्रणाम करत हयन। कवनो–कवनो लोग रामायण लेके पाठ करत हयन, काई–कोई लाल–लाल कलम से राम–राम

रजिस्टर पर लिखत हयन। ई लोग कवनो यजमानन से संकल्प कराये रहलन ओनके तरफ से ई काम करत हयन। ओकरे बदे एनके दक्षिणा मिलेला। इहाँ क यात्री लोग ओनके दक्षिणा दे के अशीर्वाद पउलन।

मन्दिर से बहरे अइले पर पचासन ठे बन्दर रास्ता छेंक के खड़ा रहलन ओनके कुछ परसाद देवे के पड़ल। एक नयी नवेली दुलहिन क साड़ी एक मोट के बन्दर पकड़ के मुँह देखे लगल, दुलहिन डर के मारे आपन कुल परसाद ओके थमा दिहलस। चारो तरफ बन्दरन क उत्पात देख के यात्रियन के बड़ा मजा आयल। ओनसे पिण्ड छुटल तऽ बहरे अइलन, कुष्ट आश्रम के सामने भिखमंगन क लम्बी लाइन लगल रहल। कोढ़ी, लँगड़ा, हाथ कटल, पैर कटल, अन्धा, बँगलादेशी मेहरारू, ओनके साथे ओनकर छोट–छोट बच्चा, कुछ सड़क पर कुछ बन्दरी के बच्चा के तरह ओनकर छेमी चिचोरत, कवनो–कवनो कुतिया के तरह झिलँगीं पर सुतल ओनके ऊपर पिल्लन के तरह दू ठे लइका चढ़ल। बाबू, दाता, दानी, चिल्लात रहलन। आपन आपन कटोरा सड़क पर पटकत रहलन। “ए बाबू हमहूँ के, ए माई हमहूँ के। तू राजा हो जाबै, खूब बढ़ोत्तरी होई, ए रानी तोहार अहिबात अमर हो जाई, खूब फरा–फूला। दक्षिण भारतीय दान–दक्षिणा खूब देलन। ओनके इहाँ के भिखमंगो पहिचानेलन।”

दुर्गा जी क दरसन कइले के बाद, सब लोगन आटो से सारनाथ क रस्ता पकड़लेस। उहाँ से घूम–घाम के सब लोगन धरमशाला पर आ गयल। अब आपन–आपन अनुभव सब लोग एक–दूसरे के सुनावत बा। नेहा कवनो बिचार में मगन रहलि। ओकर मन नीचले गगन में पंछी के तरह उड़त रहल। मन में का–का रंगीला विचार उठत रहल। भविष्य क सपना कितना–सुहाना होला। आज शिव–रात क दिन आ गयल। रात के एक बजे से सब यात्री लाइन में लग गइलन। सरकार के तरफ से बहुत बढ़िया व्यवस्था भइल हौ। चारो तरफ से सड़क पर बैरिकेटिंग कइल गयल हौ, चप्पे–चप्पे पर पुलिस लगल हौ। जगह–जगह डाक्टर एम्बुलेंस, फायर बिग्रेड क गाड़ी खड़ी हौ। ‘भूले–बिसरे कैम्प’ से लाउस्पीकर से प्रसारण होत रहल। राष्ट्रीय स्वयम् सेवक संघ क जवान काली टोपी लगा के पानी अउर चाय के व्यवस्था दर्शनार्थियन के देत रहलन। कवनो प्रकार क कोई गड़बड़ी न हो, एह बदे पुलिस के सहयोग में लगल रहलन।

कंचन माँ अपने साथे एक छः साल क पोती लेहले बाड़िन ऊ आवत समय नाहीं मनलेस, ओकर मतारी जबरी भेज दिहलेस। एह भीड़ में ओकरे कारण नेहा के बहुत परेशानी होत रहल। दिन के आठ बजे एन लोगन के विश्वनाथ जी के मन्दिर में जाये क मोका मिलल। विश्वनाथ जी के मन्दिर में बचिया कंचन माँ से हाथ छोड़ाइके अलग हो गइल, एतहूँ क आ नेहा क धियान कुछ एहर–ओहर बँट गयल। एतनै में बचिया पता नाहीं कब–कइसे मन्दिर से बहरे निकल गइल। बकना के एहर–ओहर भागत–भागत दूसरे गली में चल गइल। रोवत–रोवत ओकर आँख, नाक, मुँह एक हो गयल। एहर कंचन माँ, नेहा, सोनू, राजेश्वर राव चारो तरफ दउड़े–भागे लगलन। नेहा आ कंचन माँ क बुरा हाल रहल। सोनू दउड़ के भले–बिसरे कैम्प पर सूचना दी आयल। ओकरे हुलिया क प्रसारण होवे लगल। बहुत देर बाद भोले बाबा के किरपा से कंचन माँ कइसों ओही गली में पहुँच गइलिन। देखें तऽ एक बूढ़ी माई बचिया के गोदी में बइठा के खियावत रहली। कंचन माँ के क चेहरा खिल उठल, सब दुःख बिसर गयल। जाके उहाँ खड़ी हो गइलिन, बचिया देखतें ओनके ऊपर कूद पड़ल। बूढ़ी माई समझ गइलिन कि एनहीं क बचिया हौ। कहलिन “मैं समझ गयी यह आप की बच्ची है, ले जाइए”। कंचन माँ ओनकर पैर छू के प्रणाम कइलिन, ओनके कुछ देबे क प्रयत्न कइलिन, जवन बूढ़ी माई हँस के इनकार कर दिहलिन।

फिर भूले–बिसरे कैम्प पर जाके बचिया के मिल जाये क सूचना सोनू दे अइलन। ई प्रसारण भयल कि “चित्र दुर्गा से आये हुए तीर्थ यात्री अपने धर्मशाला पर वापस चले जाँय, खोई हुई बच्ची मिल गई है” फिर अँगरेजी में दुहरावल गयल। “द पिलग्रिम आफ चित्रदुर्गा में गो बैक टू देयर धर्मशाला, विकाज दी बेबी हैज कम टू हर ग्रैण्ड मदर”!

फिर यात्रियन में खुशी के वातावरण बन गयल। सब दुःख बिसर गयल। नेहा बचिया से पुछलिन, “बूढ़ी माँ के हाथ की मिठाई कैसी लग रही थी” बचिया हँसे लगल।

बिदाई के घड़ी आ गइल। सोनू नेहा के आ नेहा सोनू के टुकुर–टुकुर निहारत रहलन। फिर सोनू के मुँह से निकल उठल–

“परदेशियों से ना नैना मिलाना। परदेसियों को है एक दिन जानाऽऽ....”

पता ना एह संयोगन, बनल रिश्ता के का कहल जाई; बाकिर एक बात जरूर कहल जाई कि ई इन्सान के वास्तविक रिश्ता कहाई। ●●

❑ नारायणी विहार, चित्तईपुर,
वाराणसी, सुन्दरपुर, वाराणसी

दाँव-पेंच

गौरी शंकर तिवारी

रामजी प्रसाद अपना गाँव के नया परधान चुनाइल रहन। उनका दुआर पऽ बधाई देबे वालन के भीड़ लागल रहे। ओही गाँव के बाबू बसावन सिंह के छोट माई राघो सिंह के बनारस से गाँवें पहुँचे खातिर रात भर रेलगाड़ी के सवारी डिब्बा में एगो कोन धऽके ओढ़ले किंकुरल रहले। जाड़ के मारे एको गति बाकी ना रहल। देह पर खाली एगो सुइटर आ मफलर डलले रहलन। चदरो ना रहे एसे हाथ–पाँव कठुआ गइल रहे। बाकिर धुन के पक्का, राघो परधान के बधाई देवे खातिर एकदम तड़के हाजिर हो गइलन। उनका के देखते परधान जी खाड़ होके उनकर अगवानी करत गोड़ छू के आसिरबाद लिहले। परधान के दुअरा अपना छोट भाई के अतना सत्कार, बसावन के तनिको ना सोहाइल। ऊ अपना चंडाल–चौकड़ी के संगे उठि के चल दिहले। कुसल छेम पुछला का बाद रामजी, राघो के झोला–झंटा, खूँटी पर टाँग देलन अउर घर में जाके चाह बनावे खातिर कहि अइले। भीड़ तनी फाँफर भइल तऽ परधान सवाल दगले–

– कहिया के आइल बानी, बाबू साहब? ओटवा का दिने, ना देखाई रहीं। तबीयत ठीक रहऽता नूं?

– मति पूछीं परधान जी। कमजोरे पर भगवानों नू जोर अजमावेले। समुझीं कि दरद जबसे डाँड़, धइले ले बा, तबले चले–फिर में बड़ा परेशानी बा। राउर जीति सुनि के हम अपना के रोकि ना पवनी हँ। आ कसहूँ–कसहूँ एह खुशी का मोका पर बधाई देबे रउवा कीहां आ गइल बानी।

– पहिले रावाँ दतुअन–कुल्ला कऽके चाह पीहीं। तेकरा बाद आसिरबाद के हाथ हमरा माथ पर धरीं। बुजुर्ग लोग से हमरा बधाई ना, उनकर आसिरबाद चाहीं।

– ए बबुआ, भगवान तहरा के नीके–सूखे बनवले राखस। तहरा हाथे दुखियन के बेड़ा पार होखे।

– भगवान चहिहें तऽ एह माने में हमरा ओरि से केहू के कवनो सिकाइति के मोका ना मिली (अतने में चाह आ गइल। चाह के चुस्की लेते फिर कहलन) 'आछा। एह बेरि रावाँ ढेर दिन पऽ लवटल बानी। बुझाता कि गाँवें तजि देले बानी।'

– ना ए बाबू! हम गाँव नइखीं तेजले, सौंसे गाँव हमरे के तजि देले बा।

– ई का कहऽ तानी बाबू साहेब? भला केकर हिमति बा कि रउआ अस सरीफ अदिमी के तेजि के आपन परलोक बिगारी।

–तूँ तऽ जनते बाड़ हमार राम कहानी कि नसीब हमार सँगे कवन खेलवाड़ कइले बा। जनम देबे वाला हमार बाप, परिवार के सम्पत्ति बढ़ावे खातिर हमार बलि दे देले बाड़े आ गोदनामा के चलते हमार वल्दिअते बदलि गइल बाटे। हमरा बाप के नाँव, शम्भू से बदलि के राम नरायन हो गइल बा। एकर कागज छोड़िके हमरा लगे का बा?

– अइसन कवन बात हो गइल, जवन रउआ के एह घरी अतना अधीर कऽ देले बा?

— बबुआ हो, दुनियां में भाई से बढ़ि के हीत भा दुसमन दोसर केहू ना होला। जे कबो केहू से ना हारे, ऊ अपना खूनें से हारि जाला।

अतना कहत कहत राघो के आँखि डबडबा गइल। ऊ एकदम भावुक हो गइलन। एकरा आगा कुछ बोलस, एसे पहिले थरिया में परोसल खानो आ गइल। दूनों जाना भोजन करे लागल। खा–पी लेला के बाद रामजी, बाबू साहेब से आराम करे के निहोरा कइलन आ गाँव के ओरि चल देलन। उनकर बात मानि के राघो ओही खाटी पर घामा में पलरि गइले। राति भरि ट्रेन में जगला के चलते तुरते उनकर आँखि मुना गइल। थोरहीं बेर में ऊ सपन लोक में घूमे लगले। जइसे दुःख के राति जल्दी ना ओराले, ओइसहीं दुःख के सपनवों ना ओराला। एक के बाद एक नीमन–बाउर कुल्हि बीतल बात सिनेमा लेखा आवत जात रहे। उनकर तन्द्रा तब टूटल जब चारि घंटा बितला के बाद परधान जी वापस अइले आ जगावे खातिर आवाज दिहले। आवाज सुनि के राघो आँखि मुँह धोके बनारस लौटे के तेयार होखे लगलन।

— आधा राति खां बनारस पहुँचि के का करब रउआ? आजु एहिजे रहीं। बिहान मलिकारो से भेंट–मुलकात हो जाई, तऽ जाइबि।

— सुनऽ रामजी बाबू! मलिकार के तनिकी भर झलक दिखाइल हा तऽ हम अतना बेचैन हो गइल बानी। उनका किहाँ ठहरला पर जाने कवन गति के चहुँप जाइबि।

— उनका कीहाँ, का माने? राउर ना हवे इहाँ किछु?

— हवे ना, ए बबुआ, रहे।

— रहे तऽ आजु कहाँ चलि गइल राउर हिसवा?

— हमार हिस्सा रहित, तऽ हमरा ई ना नू सूने के मिलित कि 'आपन रासन कीन के ले आवऽ आ रोड पर बनावऽ आ खा!'

— के रावाँ से एँ तरी बतिआवल हा जी?

— वसावने भाई नू मालिक मुखतियार बाड़े एहिजा। उनका छोड़ि दोसर के कही।

— ऊहाँ का जदी अइसन बतियावऽ तानी, तऽ रउआ आपन घर समुझि के जब ले मन करे एहि जे रहीं। हम बतिआइबि उहाँ से।

— केहू पर भार बनि के रहल का उचित कहाई?

— एह गाँव के सम्पत्ति पऽ तऽ राउर गोदनामा भइल बाटे। तबो बसावन सिंह एह तरी काहे बतिआवत बाड़े। रावा पूछनीं हाँ ना उनका से?

— पूछले रहली हाँ। तबे नू पूठा पर हाथ नइखन धरे देत।

— गोदनामा के बात पर उनकर का कहनाम बा?

— उनकर कहनाम बा कि गोदनामा गइल चूल्हे भाड़ में। जे गोद लिहले–दिहले रहे, जाके ओकरे से पूछऽ। हमरा से ढेर कानून जनि डगरावऽ!

— ए साहेब, ई तऽ ऊहे कहाउति भइल कि जबरा मारे आ रोवहूँ ना देव। अइसे कइसे चली?

— हँ ए परधान जी, हीत–मीत गाँव–घर में हमार दरद सुने के केहू तइयार नइखे। हमरा खातिर त तूँहीं भगवान राम बाड़ऽ।

— बाबू साहब, रउआ निफिकिर होके जाईं। ई काम हमरा जिम्मे छोड़ि दीहीं। जइसन होखी हम रावाँ के खबर करबि।

राघो ओही घरी स्टेशन चलि दिहले आ राति के गाड़ी से बनारस लवटि अइले। ओने बसावन के अपना छोट भाई के सँगे एह दुर्व्यवहार के खबरि सौंसे गाँव में लूती लेखा फइल गइल बाकिर उनका दबंगई के सोझा केकरा हिमति रहे कि केहू कुछ कहि सके। अइसन बुझात रहे कि धन आ जोर के बूता पर गाँव के सभे लोग उनका हाथे बिका गइल होखे।

बनारस में राघो अपना बेटी–दमाद कींहाँ रहि के दिन काटत रहलन। तबो अपना स्वाभिमान से कभी समझौता ना कइलन। मेहरारू तऽ पहिलहीं मर चुकल रही। छोटकी बेटी ननिउरा में रहति रहे। ऊहो जब से बिआह जोग भऽ गइल तब से राघो के चिन्ता बढ़ि गइल रहे। पेंशन के पइसा तऽ बाँचे के कवनो सवाले ना रहे। बेटी के बिआह खातिर ऊ चाहत रहन कि गाँव के जमीन रेहन धऽ के कुछ पइसा मिल जाई तऽ छोटकियो के हाथ पियर कऽ के डोली पर चढ़ा दिहतीं। बाकिर एह मंसूबो पर पानी फिरत जनाये लागल।

लगभग पाँच महीना का बाद गांव के परधान रामजी के फोन आइल। दैनिक जागरण अखबार में निकलल समाचार के बारे में ऊ राघो के सूचित कइलन। अखबार के पहिलके पेज पर निकलल रहे कि–

"तहसील स्तर पर ऐतिहासिक धाँधली"

भोजपुर जिला के जगदीशपुर तहसील में हुई धाँधली का एक बड़ा मामला प्रकाश में आया है। उसी गांव के एक दबंग व्यक्ति बसावन सिंह ने तहसील के भ्रष्ट कर्मचारियों, काले कोट वालों और पुलिस विभाग से साँठ–गाँठ करके अपने छोटे भाई राघो सिंह, जो रेल विभाग के पेंशनर हैं, की सारी जमीन अपने नाम

करा ली है। जिलाधिकारी के स्तर से जाँच कराये जाने पर पता चला है कि ऐसा करने के लिए राघो को मृतक और नावल्द करार दिया गया है। जाँच में दोषी पाये गये सभी कर्मचारियों तथा अधिकारियों को निलम्बित करते हुए बसावन सिंह और उनके छोटे पुत्र बिगारन सिंह को जेल भेज दिया गया है।

ई समाचार राघो खातिर संजीवन मिलल। एसे ऊ तुरूतले परधान जी के फोन से धन्यवाद दिहलन आ दीर्घायु होखे के कामनो कइलन। अतने ले ना, बाबा भोलेनाथ आ संकटमोचन जी के मंदिर में जाके माथा टेकले आ परसादियो चढ़वले।

बाकिर ई का? फेर ढाक के तीन पात भऽ गइल। समाचार छपला का एके हफ्ता के भीतर जिलाधिकारी के कार्यालय से राघो के नाँवें एगो रजिस्टरी मिलल जवना में लिखल रहे कि, "यदि वे चाहें तो अपनी सम्पत्ति वापस पाने के लिए अदालत में अपना मुकदमा दायर कर सकते हैं।" ई चिट्ठी पढ़ते राघो के खुसी पर पानी फिरि गइल। उनुका लगे मुकदिमा लड़े के पइसा आ देह में बूते रहित, तऽ खेलिये काहें बिगरित! ••

❑ गोकुल नगर, डी०एल०डब्ल्यू०, वाराणसी।

लघुकथा

जबरा मारे, रोवे न देव

✍ **हीरालाल 'हीरा'**

बाबू राम सिंह के घर–दुआर आ नीमन खेतीबारी के अलावा गाँव का बहरी सड़को पर एगो मकान रहे, जवना में बैंक चलत रहे। चट्टी बड़हन रहे जहवाँ इन्टर कालेज अउरी कइ गो विभागन के आफिस रहे। बाबू साहब दबंग आ मस्त मिजाज के रहलन। खाये खिआवे में कबे ओज ना करसु, जइसन कि बबुआन के गुन होला, उनहूँ में रहे। उनका संग–साथ के खाये–पीये वाला लोग उनका के मलिकार कहे। रातो–दिन ऊ चट्टिए वाला मकान पर रहसु। कबो–कभार भोजन करे गाँव वाला घरे जासु, जवन गाँव का भितरी रहे। बेर–बागर कबो उनका टीबुल पर, पोखरा पर भा बैंक के लगे स्पेशल पार्टी होते रहे। प्रोग्राम बनत कहीं कि मछरी, मीट भा मुर्गा के इन्तजाम होत देरी ना लागे। खाये–बनावे वाला उनकर चेलो हुँसियार रहले सऽ।

एक दिन साँझि के बेरा चट्टी पर बइठकी भइल रहे। ओही बीचे चकबन्दी वाला बाबू कहलन– "मलिकार, जीव आन–मान कइले ढेर दिन हो गइल। कुछु होखे के चाहीं।"

– "ई कवन बड़ बाति बा। अजुये साँझि के बेवस्था हो जाई।"

मलिकार कहि देसु आ इन्तजाम ना होखे। चेला–चपाटी उनका इशारा पर जोगाड़ में भिड़ गइले सऽ। घंटा–डेढ़ घंटा बाद कुल्हि सरजाम जुटि गइल। लकड़ी, गोंइठा, स्टोप, आटा, चाउर आ खँसी के टटका मीट।

राति के सभ खाये बइठते रहे, कि एही बीचे बगले भरटोली के एगो आदमी गँवे–गँवे ओइजा पहुँचल। बाबू साहेब के सलामी दगलस। बाबू साहेब चवनिया मुसुकी मरले– "आवऽ आवऽ भगेलू, तुहूँ जूने से आ गइलऽ। हमनी के परोसऽ, खिआवऽ फेरू खाइ के जइहऽ। हई मुँह का लटकवले बाड़ऽ।"

– "का कहीं मलिकार! दुपहरिए से हमार खँसिउवा हेराइल बा। बड़ा खोजलीं हा बाकि, अब ले ना मिलल।" भगेलू उदासले आपन ब्यथा कहलन।

– "छोड़ऽ, अब मूड मत खराब करऽ। सरेहि में कहीं भुलाइल होई। फजीर ले मिलिये जाई। एनिए कहीं खेत–बधार में चरत होई। अब जवन सोझा बा, तेवना के आनन्द लऽ। चलऽ होने हाथ बटावऽ।" मलिकार कहलन। भगेलू सभके खाना परोसववला का बाद अपनहूँ पत्तल लेके बइठि गइले। मुँह में मीट डालते बात निकलल– "मलिकार बड़ा नीक बनल बा।"

– "काँहे ना बनी? जब मन से नीमन समान जुटी आ मन से बनावल जाई।"

सभे छकि के भोजन कइल। भगेलुओ हीक भर खइले।

राह में लवटत समय भगेलू के उदासी आ चिन्ता फेरू उपरिआइल। भितरी तनी अँजोर लउकल, त मन परल– "लइकिया बतावत रहे कि खँसिउवा एनिये बाबू साहेब के टिबुलिए का ओर चरे आइल रहे। कहीं ऊहे ना नू.... आजु के एह भोज में बाबू साहेब के कामे आ गइल। बाकिर अब करीं त का करीं? खइले त हमहूँ बानी। अब ओकरा बारे में सोचिये के का करब? बड़का लोग हऽ, के अझुराई?" ••

❑ बुलापुर, बलिया-277001

हेडमास्टर जी

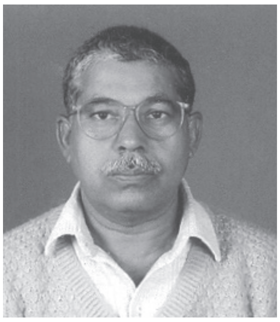

डॉ. अयोध्या प्रसाद उपाध्याय

बाप के मुअते माई के कपार पऽ दुख के पहाड़ टूट परल। परिवार में कतहूँ केहु ना। सुभगिया अकेल। दुख–दरिद्दर के मार सहत, रोहित के पलली–पोसली। धीरे–धीरे रोहित तनिकी सरेख भइलें। सुभगिया कहली– "तूँ तऽ बड़ अभागा बाड़ऽ बबुआ, जनमते टुअर हो गइलऽ। तोहरा पर एही उमिर में बहुते भार आ गइल। अब हमरा नाइ के खेवइया, तोहरा छोड़ के दोसर के बा?"

"निफिकिर रहु माई। घबराये के कवनो बात नइखे। बाबूजी नइखन तऽ हम बानी नू। तोहरा इचिको चिन्ता करे के जरूरत नइखे" रोहित कहले। बबुआ के जबाब से माई के थोरिकी दम मिलल। जब रोहित स्कूल जाये लायक भइले तऽ गाँव के स्कूल में नाम लिखाइल आ पढ़े जाये लगले। मन लागे लागल। तेज विद्यार्थियन में गिनासु। पढ़े के साथ–साथ खेलो–कूद में भाग लेबे लगले। आज माई के उदास देख के बेचैन हो गइले, पुछलें– "कवना बात से उदास बाडू माई!" "ना ना कवनो बात से हम उदास नइखीं। हम सोचत रहीं कि स्कूल से अइबऽ तऽ का खइब?" "एह में सोचे के का बा। जवन रही, उहे नू खाइब, ना रही ना खाइब"– रोहित कहले। सुभगिया के आँखि डबडबा गइल। आँचर से आँस गँवेसे पोंछ लेहली, "अइसन मत कहऽ बबुआ। तूँ हमार आँख के तारा आ जिनिगी के सहारा बाड़ऽ।" रोहित ई सुनते माई के गरदन पकड़ के झूल गइले आ कहले– "माई चबेनी बा।" "हँ बबुआ"– कहि के घर में से चबेनी ले अइली। चबेनी फाँकत ऊ खेले चल गइले। जब खेल–कूद के अइले तऽ माई–माई बोलले। तबले सँझवत देखावत माई पर नजर पड़ गइल। एकरा बाद हाथ–गोड़ धो–धाइके चउकी पर बइठ के कहले– "माई! पानी पीअब।" "अच्छा बबुआ" कह के माई गुड़ आ पानी दिहली। पानी पीके पढ़े बइठ गइले।

एक बेर, एक हफ्ता रोहित स्कूल ना गइले। विनम्र आ तेज होखे के कारण इनका के सब केहु मानत–जानत रहे। लेकिन इ स्कूल ना आवे के कारन केहु के मालूम ना रहे। हफ्ता भर बाद जब स्कूल अइले तब हेडमास्टर साहेब पुछले– "कहँवा गइल रहऽ? काहे स्कूल ना आवत रहऽ?" थोड़े देर खातिर रोहित सकपका गइले। कुछ कहले ना। बाकिर आँख से लोर छलक गइल।

"तोहार तबीयत खराब रहे का....? कि कवनो तरह के फेरा में पड़ गइल रहऽ? बतावऽ, डेराये के कवनो बात नइखे।" – हेडमास्टर साहेब कहलीं। तब रोहित आपबीती सुनवले "जनमते बाप के टुअर हो गइलीं। कवनो सहारा नइखे। माई बिआ। ओकर भोजन, पानी, दवा–दारू के इंतजाम करे के हम संकल्प कइले बानी।" एह सब के कारन हमरा मजदूरी करे जाये के पड़ला। एही से कबो–कबो स्कूल ना आईला। रोहित के कहानी सुन के हेडमास्टर साहेब चकित हो गइले। कुछ देर तक रोहित आ उनका भविष्य के बारे में सोचत रह गइले। जेब से सौ

रुपया के एगो नोट निकाल के रोहित के देबे लगले। ओह नोट के रोहित एकटकिये देखत रह गइले, बाकिर राइयो भर टस से मस ना भइले। हेडमास्टर साहेब कतनो समझवले–बुझवले बाकिर रोहित के हाथ ना बढ़ल। कहले– "रउआ हमार गुरू आ अभिभावक दुनों बानी। हमार बात के खराब मत मानब, एह सौ गो रुपया से हमार जिनिगी के गरीबी दूर ना होई। हमरा के अइसन सीख दीहीं कि हम आपन जिनिगी के नाव खेवे लायक बन जाईं।"

"बेटा रोहित! एकदिन तूँ हमरो से बड़ होइबऽ। तोहरा पीठि कबो धूर ना लागी।" –पीठ थपथपावत हेडमास्टर जी कहलें। रोहित के गइला के बाद सोचे लगले– "स्वाभिमानी आ दृढ़निश्चयी रोहित में आत्मविश्वास भरल बा। एक दिन जरूर परिवार, समाज के रूप बदल दी। ई त 'होनहार बिरवा के होत चिकने पात' कहावत के चरितार्थ करे वाला बा।"

एह बात के ऊ अपना घरे, पार्वती से कहले। सौ गो रुपया सुन के खिसिआ गइली– "राम! राम! ओइसन टुअर–टापर लइका के सौ गो रुपया देत रहीं। दु–चार हजार नू देबे के चाहत रहे।" पार्वती के बात सुन के हेडमास्टर साहेब के अफसोस होखे लागल। संकल्प कइले कि रोहित के पढ़ाई में कतनो रुपया लागी, हम लगाइब।

रोहित फेर स्कूल आइल बन्द कर दिहले। दु'तीन दिन के बाद पता लगावे खातिर हेडमास्टर साहेब रोहित के घरे गइले। दुआर प ताला लटकल रहे। आस–पड़ोस से मालूम भइल मतारी–बेटा कतहूँ चल गइले। ऊ बहुत दुःखी भइले।

रोहित के गाँव छोड़ला कई महीना हो गइल। जीविका के कवनो स्थायी समाधान ना भइल। रहि–रहि के रोहित के मन में हेडमास्टर साहेब के बात याद आवे– "जा तोहरा पीठि कबो धूर ना लागी।" साँचहूँ पीठि धूर त ना लागल, बाकिर धूर फाँके के त जरूरे मिलल। ऊ कलकत्ता में एगो कपड़ा दुकान में काम करे लगले। पाँच सौ रुपया दरमाहा मिलत रहे। सुबह–साँझ चाहो पानी मिल जाय। महँगाई के मोताबिक दरमाहा कमे रहे, बाकिर जीये के एगो साधन तऽ मिलिये गइल। सुभगियो बीड़ी बनावे के काम करे लगली। रोहित दुकनदारन के पहुँचावे लगले। एह से आमदनी थोरिकी बढ़ गइल। काम चले लागल। मेहनती आ लगनशील रोहित दिन में काम करस आ देर रात तक पढ़स। अइसे करत–करत एक दिन मैट्रिक पास हो गइले। उनका में शिक्षा आ शिक्षक के प्रति लगाव रहे। उनकरा शिक्षक बने के चाह रहे। लइकन के पढ़ावे में मन लागत रहे। एह बात के जानकारी उनका रहे कि शिक्षक बने खातिर ओकर प्रारंभिक योग्यता पावल जरूरी बा।

एक दिन सेन साहेब आ रोहित के बतकही से सेन साहेब के मालूम हो गइल कि रोहित मैट्रिक पास बाड़े। कहले, "हमरा अंकित के पढ़ावऽ। चउथा में पढ़ेले। पढ़वला खातिर, अलगा से रुपया देब।" रोहित कहले, "ठीक बा पढ़ाइब। बाकिर हमरो इन्टर के तइयारी करे के बा।" सेन जबाब देहले– "कवनो बात नइखे। तुहूँ आपन तइयारी करत रहऽ।" ई बात ऊ माई के बतवले। माई सलाह देली– "मालिक के बात मान के अंकित के पढ़ावऽ। एह से तोहार मान–मरजाद बढ़ जाई।"

रोहित, अंकित के पढ़ावे लगले। ऊ परीक्षा में बढ़िया नम्बर से पास भइले। घर भर खुश भइल। मिठाई बँटाइल आ रोहित के खूब बड़ाई भइल। धीरे–धीरे रोहित सेन परिवार के सदस्य बन गइले। इनकरा कवनो तरह के अब पाबन्दी ना रहे। पढ़े के समय मिले लागल। पाँचवों क्लास में अंकित सब लइकन से ज्यादा नम्बर से पास भइले। अब त रोहित, सेन परिवार के खास आ विश्वासपात्र हो गइले। कपड़ा दुकान पर गइल बन्द हो गइल। मलकिनी उनका के घरेलू बना लिहली। इन्टर पास कइला का बाद रोहित टीचर्स ट्रेनिंग स्कूल में दाखिला लिहले। सच्चा लगन फलदाई होला। समय के साथ ट्रेनिंग पूरा हो गइल तऽ उनका बुझाइल कि हमहूँ आज ना त काल्ह, शिक्षक बन जाइब। दिनन के बाद शिक्षक बहाली के, विज्ञापन अखबर में आइल रहे। सेन साहेब खुदे विज्ञापन के जानकारी रोहित के दिहले– "रोहित! प्राइमरी सेक्शन में, शिक्षक खातिर विज्ञापन आइल बा। जे आई0ए0 ट्रेन्ड होखी, उहे आवेदन कर सकत बा।"

रोहित के आवेदन जमा हो गइल। कुछ दिन के बाद इन्टरव्यू के सूचना मिलल। 'इन्टरव्यू' के बाद रोहित संतुष्ट रहन। सब सवालन के जबाब नीमन से देले रहलन। महीना भर बाद रिजल्ट आइल। रोहित के नाम लिस्ट में सबसे ऊपर रहे। एक सप्ताह के बाद, सर्टिफिकेट के साथ ज्वाइन करे के रहे। संयोग के बात रोहित ओही स्कूल में ज्वाइन कइले, जवना में अंकित पढ़त रहलन। अब का पूछे के? सेन परिवार के साथ अउरू–घुले मिले के बहाना मिलल। सुभगियो के सेन साहेब के मेहरारू गाहे–बेगाहे घरे बोलावे लगली।

नजदीकी बढ़ते गइल। रोहित के साथ अब नोकर वाला बात–व्यहार ना रहि गइल। रोहित निश्ंिचत हो गइले। उनका भीतर आत्म विश्वास जागल। कुछेदिन में ऊ एगो शिक्षण संस्थान से बी0ए0 कइले आ आपन योग्यता बढ़वले। अइसना में भागियो क साथ मिल जाय त फिर क्या पूछे के? ऊहो दिन आइल कि ऊ एक दिन परमोशन पवले आ हेडमास्टर हो गइले। ऊ एगो कुशल शिक्षक पहिलहीं से रहले, अब हेडमास्टरो के रूप में प्रसिद्ध हो गइले। नतीजा भइल कि एक से एक लोग आपन–आपन लइकन के ओही स्कूल में नाम लिखावे खातिर टूट परले।

एक रात रोहित के मन में अपना हेडमास्टर साहेब के सपना आइल। माई से कहले, "राते हेडमास्टर साहेब के सपना देखले रहलीं। हमरा उनका बातोचीत भइल। हमरा हेडमास्टर भइला से खूब खुश भइले आ आसिरबादो दिहले।"

माई कहली– "दुर्गा पूजा के छुट्टी में गाँवे चलल जाई त हेडमास्टर साहेब से भेंट कइल जाई।" "हँ माई!" रोहित मूँड़ी हिला के कहले। अबहीं दुर्गा पूजा के छुट्टी होखे में, तीन दिन बाकी रहे। एक दिन देबी दर्शन खातिर रोहित तइयार होखे लगले तबले एकाएक सुभगिया कहली– "बबुआ जब हमनी के काल्हुए गाँवे जाये के बा तऽ हेडमास्टर साहेब के पाँव–पूजी खातिर कपड़ा–लत्ता खरीद लिआवऽ। गुरू उपरोहित के आसीरवाद से बढंती होखेला।"

– "हँ रे माई अब एह से बढ़िया का होई?" रोहित खुशी जाहिर कइले।

रात के ट्रेन सुबह सात बजे बक्सर स्टेशन पहुँचल। गाँवे पहुँचत–पहुँचत दिन के दस बज गइल। माटी के घर ढहल–ढिमिलाइल, उदास लागत रहे। बाकि जइसे तइसे रहे। सगरो घास–पात जामल रहे। छोट–मोट जंगल–झाड़ी भइला से डेरावत लागे। दुआरी के ताला मुरूचाइ गइल रहे। कतनो चाभी घुमावल जाव, खुलबे ना करे। अन्त में ओकरा के तूरल गइल। दिन भर में ओकर साफ–सफाई भइल। अगल–बगल के लोगो आ गइल। हाल–चाल भइल। लोगन के बतकही से रोहित के बुझाइल कि गाँव अब पहिले वाला गाँव ना रहि गइल।

रोहित के पुरान सहपाठी नरेश बतवले– "रोहित भाई आपन गाँव जे पहिले रहे, ऊ नइखे। इहवाँ बात–बात पर लूट–मार, चोरी–डकैती, बलात्कार–हत्या, अपहरण करे में लोगन के तनिको संकोच नइखे। बहुते बिगड़ि गइल बा गाँव। आतंकियन के संगठन से एक–दू लोगन के साँठ–गाँठ हो गइल बा। एह से गाँव–जवार में दहशत बा। केकरो साँस लेबे के बेंवत नइखे। कवनो तरह से दिन–रात बीत रहल बा। नरेश से अइसन समाचार सुन के रोहित चकचिहाइ गइलें।" मूँड़ी हिला के कहले– "गाँव के बारे में त सब केहू के सोचे के चाहीं। एहसे निजात पावे, खातिर कवनो उपाय करे के चाहीं।" अच्छा नरेश भाई हेडमास्टर साहेब के हाल बतावऽ। नाम सुनते नरेश के चेहरा उदास हो गइल। कहले, "अब तोहरा के का बताईं? कुछ कहलो नइखे बनत। एक दिन, उनका के दिन–दहाड़े रंगदारी लेबे खातिर स्कूलवे में गोली मार दिहले सन।" रोहित के करेजा काँपि गइल। एह बात पर उनका विश्वासे ना होखे। अपना के बहुत समझवलन, तबो सामान्य ना भइले। चिहात कहले– "हत्या? आयँ हत्या! अइसन सोझिया हेडमास्टर साहेब के हत्या!" ऊ क्षोभ से तिलमिलाइ कइले। पाँव पूजे के अरमान धूल में मिल गइल। सोचे लगले– "जवना गाँव में कबो कवनो भेदेभाव ना रहे। कवनो ईर्ष्या–द्वेष ना रहे, आज उहे गाँव, कुछ सिरफिरन के चलते मसान अइसन भयावन भइल बा। हम तऽ रोजी–रोटी खातिर गाँव छोड़ के गइल रहीं। केहु हमरा के भगवले तऽ ना रहे। ई त ठीक उलटा हो गइल बा। एह गाँव के आबरू कइसे बाँची?"

फेरु तुरन्ते ऊ नरेश आ अपना माई का सँग हेडमास्टर साहब का घरे जाइ के उनका पत्नी से मिलले। सोझहीं देवाल पर हेडमास्टर साहेब के फोटो देख के रोहित भावुक हो गइले। उनका बुझाय जइसे हेडमास्टर साहेब पूछत होखीं– "का हो? एतना दिन से कहँवाँ गइल रहलऽ? हमरा के एही खातिर छोड़ गइल रहलऽ। देखऽ कइसन जहर फइलल बा। अदिमी पागल हो गइल बा।" तबो हम बार–बार आसीरबाद देत बानी– "तोहार बाल बाँका ना होखी।"

रोहित बइठि के भर हीक रोवले। भीतर के दरद कुछ कम त भइल, बाकिर हूक ओइसहीं उठत रहे। मने–मन ऊ गाँव के हालत बदले खातिर गँवही रहि के, कुछ करे के जइसे संकल्प करत होखस, नरेश के हाथ पकड़ले आ बहरा निकल गइले। ●●

❑ 'साकेत' भगवती स्टील वर्क्स के बगल वाली गली,
डी० एम० कोठी के निकट, आरा-802301 बिहार

दू गो गीत

गुरुविन्द्र सिंह

(एक) देश गीत

दुनियाँ जहान में जे बाटे महान हो।
फहरेला ओकर तिरंगा निसान हो!

धरती आ गइया जहाँ मइया कहाली
तुलसी क बेदी अँगनवाँ पुजाली
निमिया आ पिपरा बा, देव-असथान हो ।

घरवा में हरवा-कुदरियो पुजाला
अनूजा पर गोबर बढ़ावन धराला
उपराजल लागे रतन-धन खान हो।

कोटि-चौरासी देवि-देवता क पहरा
जागेले जोति जहाँ नित भिनुसहरा
जहवाँ के मटियो बा देवता समान हो।
लहरे अकसवा तिरंगा निसान हो!

(दू) गँउवे में अँटकल परनवाँ

खेतिये में अब तूँ लगावऽ पिया मनवाँ
माटिये में हमनी के सुखवा-सपनवाँ।

कठिन शहरिया में होई परेसानी
किनले के दूध-दही, किनले के पानी
सड़के दुआर बाटे पारक-अँगनवाँ।

हीत-मीत छूटि जइहें घर पलिवरवा
जिउवा तरस जाई तीज-तिउहरवा
रही उहाँ, गँउवे में अँटकल परनवाँ।

शहरन के अजबे बा आपन कहानी
लोगवा बतावेला, खिस्सा-जबानी
अतमा बिकाइ जाई, सूखि जाई तनवाँ।
खेतिये में अब तूँ लगावऽ पिया मनवाँ।

••

❑ आर० के० पुरम, नई दिल्ली

अंक के खास कवि:
योगेंद्र नाथ शर्मा

(योगेंद्र नाथ शर्मा चम्पारण के वयोवृद्ध कवि हईं।इनकार जन्म 20 सितंबर 1932 में पूर्वी चंपारण, बिहार के बारा चकिया में भइल।1950 में इनकर पहिला हिंदी कविता वाराणसी से प्रकाशित पत्र ''सन्मार्ग'' में प्रकाशित भइल।1950 से पत्रकारिता से जुड़ गइलें।कलकत्ता से प्रकाशित होखे वाला सप्ताहित पत्र विस्मित,नवभारत टाइम्स,भारत मेल,प्रदीप,दैनिक जागरण आ आज अखबार से जुड़ के पत्रकारिता कइलें।1958 में आकाशवाणी से जुड़ाव भइल। एहू उमिर में शर्मा जी लगातार लिख पढ़ रहल बाड़ें।)

(एक)

इहवाँ कहीं पनाह के जगह न आस- पास बा
जगाव जनि कि आज मन बहुत उदास बा !

किरिन किरिन अँजोर ऊँच गाछ पर अँटक गइल
चरन-चरन अन्हार में परन बुला भटक गइल
दिसा-दिसा डरल -डरल
कि आँख बा भरल-भरल
गुहार के सुने इहाँ ? सभे बहुत हतास बा !
कि मन बहुत उदास बा !

जनम-जनम के चिन्हार अनचिन्हार लागि रहल
आपन परछाँही बा अपने से भागि रहल
इहे गली इहे डगर
कि गाँव-घर इहे सगर
तोख के खदान रहे आज खुद निरास बा !
कि मन बहुत उदास बा !

हवा-हवा बरूद. बा कि साँस. बा जहर-जहर
लपट-लपट धुँआ-धुँआ. इहाँ मउत. उहाँ कहर
बिला गइल. दया - धरम
न. टूटि रहल. बा भरम
दिया-दिया बुता रहल जमीन लास - लास बा !
कि मन बहुत उदास बा !

XXX

(दू)

हम बतकही करीं का, सुर के सुभाव के
हमरा मिलल जनमते अँचरा अभाव के

सौ-सौ पहर अन्हरिया पल भर अँजोर ला
अनुपात ई रहल बा अब ले लगाव के

कइसे निकल गइल दिन कब साँझ हो गइल
पथ में मिलल न कतहूँ पलखत पड़ाव के

जोड़त-जुगुत करत सजी जिनिगी सिरा गइल
हर बेर हाथ लागल हासिल घटाव के

ई समय के समुन्दर लाँघल पहाड़ बा
सँगे नसीब में बा कागज के नाव के

गइलीं शरन खातिर धकिया दिहल गइल
ढाढस मिलल न अब ले तनिको बनाव के

भादों -भरम-भरोसा मिलि के मुआ रहल
ई उमिर पर बा चीन्हा चौंसठ गो घाव के

XXX

(तीन)

कुछ के लिहलीं काट अउर कुछ ढोअत बीती
हम का जानीं, कइसे जिनिगी जीयल जाला ?

फुलहा छीपा बाजल रहे जनम पर हमरो
लूगा- झूला-गहना मिलल रहे डगरिन के
बुढ़ऊ बाबा डाँरा दिहलें पहुँचारी - ला
नेग-जोग भी मिलल पँवरिआ के 'खोजिन के
बदल दूध के चाम चटा के पोसल गइलीं
अब माहुर के इमरित कहि के पीयल जाला!

तनिक छेटहर भइलीं मन के अँखुआ मरकल
लागल दुनिया छोट बहुत बा हमरा खातिर
हँसी-खुसी कुछ लोग बाँटि लिहलें आपस में
हमरा हक में पड़ल उदासी सबका साँतिर

ठाँव-ठाँव पर ठेल पिछाडी कइलस दुनिया
अब बिरोध में खुलल ओठ के सीयल जाला ।

काना-फूसी भइल कि लइका बा उठान. पर
जवने रस्ता चलीं लोग सब दीठ गड़ावें
पढ़ल-गुनल के बीच सराहल गइलीं जइसे
जरि गइलें कुछ लोग कि लगलें टाँग अड़ावे
नीमन-बाउर हम ना जनलीं अल्हड़ रहलीं
अब हमार परछाहीं, हमरे के छल जाला ।

हम ना जनलीं कइसन होला भरल जवानी
दुनिया मरलस टोना असमय मन मुरुझाइल
रहि गइलीं घुरिआ के बित्ता भर में अब ले
कुछ करतीं ओकरा पहिले ही तन झुरिआइल
केकर करीं गोहार ? सुने वाला ना केहू
आपन सबद कान केअब अपने खल जाला ।

XXX

(चार)

का रचीं गीत, पत्थल हिया हो गइल,
हर खुशी के लहर मरसिया हो गइल !

बात होला बराबर सभे लोग बा
एक जइसन इहाँ नेग बा , जोग बा,
बा न अइसन, मगर बात के बात ई,
कािल्ह कै रात जइसन न बा रात ई,
दिन न सबके बराबर उजाला दिहल,
जे रहल,रह गइल, जे लिहल से लिहल,
कहीं देखल न केहू अन्हरिया, कहीं ----
जोत दिहले बिना गुल दिया हो गइल !

झूठ के आँच में जर गइल साँच बा,
जौन बाहन बन्हल, डोर ऊ काँच बा,
बात अइसन बहुत दिन चली ना अउर,
नाग के माथ पर ना रही अब मउर ,
आग बारूद से जा रहल सटल ,
बेबसी बा कि ज्वालामुखी ना फटल,
ऊ फटी तो न परलय रुकी रोकले,
आह जमकल त बिख के बिया बन गइल!

XXX

(पाँच)

छड़ी कइसे झटक लिहलस न एकर खोज बा कउनो
पताका जे उड़ा दिहलस जबाना जय कही उनके !

इहे दस्तूर दुनिया के कमाई से न खा पाई
बना के महल जे निकसी न ओमें घुस कबो पाई
मगर जे हुकुम दी बइठल, चलाई साहबी सब पर
गिनाई आदमी ऊहे जबाना जय कही उनके !

बिधाता एक सन गढ़लें जबाना बाँटि के राखल
अकिल के मोल बा इहँवा सभे विदवान ई भाखल
मगर जे डर गइल भगवान से ऊ मर गइल. भूखे
इहाँ ईमान जे बेंचल जबाना जय कही उनके !

रुपइया में बड़ा गुन बा बड़ा बल बड़ाई बा
रुपइया के बिना सब कुछ अकारथ राख-छाई बा
इहाँ जे आदमीयत के दुहाई दी बिला जाई
जुटा के जे रखी सोना जबाना जय कही उनके !

••

लायक बेटी

आशारानी लाल

बहुते दिन से हमरा मन मे एके बतिया बदरी नियर उमड़–घुमड़ के आवत रहत रहे। कबो ओह बदरी के कवनो दूसर बिचार क हवा–बयार उड़ा देत रहे, तऽ कबो अपनहीं ऊ बिलल्ल बन के केनियो बिला जात रहे। फेरू हम ओके भुलाइयो जात रहीं। थोरहीं दिन बाद फेर जब सावन भादो के करिकी बदरिया बन के आ गइल तब ओके भुलाइल आसान ना लागल, ओके कवनो हवा उड़ाइयो ना पवलस। ऊ लागल मँडराए–गरजे तरजे आ एगो फोन के बिजुरी अइसन आवाज के गरमी पाके लागल बरसे। बरीस–दू बरीस बाद ऊ हमके फोन कइले रहन, एहिसे पनरह चाहे बीस मिनट ले बतियवते रह गइलन।

कहलन कि का बताईजी हम एगो बड़ा बाउर बात 'सर' के बारे में सुनले रहीं। तबे हमार मन बेचैन भ गइल रहे। लगलीं राउर फोन नम्बर लोगिन से पूछे आ जाने। बड़ा मुस्किल से ई नम्बर हम पवनी हँऽ। रउवा कइसे बानी ? सर का करऽ तानी। ऊहाँ के तबियत अब कइसन रहता?

जब हमसे सब बात क पता उनके ठीक से भऽ गइल तब उनका इत्मिनान हो गइल। लगलन कहे कि एह दुनिया में कइसन–कइसन लोग होला–ए–जी। ओह लोगिन क जबान पर लगाम ना होला। केहूक बारे में लोग कुछो बोल देला। 'सर' क बारे में एतना बाउर बात ओह लोगिन के ना–नऽ कहे के चांही। हम तऽ सुनके बेचैन भऽ गइल रहीं। कइसे ओह लोगिन के मुँह से ओइसन बात निकसल रहे।

–जायेदीं। एह सब बात से तऽ रउरा 'सर' क उमिर अवरी बढ़बे करी घटी ना। कहे दीं लोगिन के। रउरा दुखी मत होई।

–अब बताई, हमरा मकान–मालिक का घर क के हाल चाल बा ?

–अरे। ओह घर क बारे में हम का बताई। इहे रउरा बोलीं कि हम कहँवाँ से ओकर कहनी शुरू करीं।

–अच्छा! इहे बताई कि उनकर बड़का बेटा कइसन बाड़न, ऊ आजकाल कहँवाँ रहऽ तानऽ।

आहि बाल! डनका गइले तऽ डेढ़–दू बरीस भऽ गइल होई। रउवा ना सुनलीं हँ–का। उनकर एगो बेटा बानऽ, जे अब इन्जिनियर बानऽ आ एगो बड़ कम्पनी में काम करतानऽ। ऊ अपना परिवार साथे उहें कहीं रह तानऽ।

हम सुनले रही कि ऊ पढ़े में तेज रहन। अच्छा भइल। तब अब एह घरवा में के रहता? मालिक क बड़की पतोह तऽ उनका बेटी के सेवा में लाग गइल रही। इहवाँ अब के बा?

अइसे तऽ ओह मकान के घर कहल ठीक नइखे लागत, काहे कि जब हम उहाँ रहत रहीं, तब इहे सोचल करीं कि एतना बड़हन घर के बनववले होई। ऊ घर ना रहे। ओके हम का कहीं इहो ना बुझात रहे। छोट रहीं त कहनी सुनले

रहीं कि राजा लोग महल में रहत रहे। इहो सुनले रहीं कि अँग्रेज लोग कोठी में रहेला। फेरू कहीं–कहीं बॅगला आ हवेलियो क नाँव सुनले रहीं। तब हम ओह घर के का कहीं, इहे ना बुझाय। ओह एगो घर में उपर से नीचे ले कइगो घर रहे, जेमें कइगो किरायेदारो रहत रहन। बहरा से देखला पर तऽ ऊ एकेगो घर लउकत रहे, तबे सोचीं कि एके का कहल जाई? ई महल कहाई कि कोठी, चाहे बँगला कि हवेली। ई कुल बात सोच के मन बौंड़ियाए लागत रहे।

ओह घर क ऊपरी चोटी पर ओकर नाँव लिखल रहे–''विलास–भवन''। ई विलासभवन बड़ा सुन्दर बनल रहे। एकरा हर अंग पर कँगूरा रचि–रचि के उकेरल गइल रहे। बहरा से लोग कहे कि कवनो राजा–महाराजा के ई महल बा। कुछ दिन बाद हमरा जानकारी भइल कि 'विलास लाल' मकान मालिक क बाप–दादा में से केहू क नाँव रहे। ऊ बहुते बड़ जमिन्दार ओह गाँव–जवार के रहन। उनही क पइसा से मकान–मालिक क बाप एह भवन के बनवलन आ ओकर नाँव 'विलास–भवन' रखलन। ओमें रहेवाला मकान–मालिक के देख के त हमनी क कबो ना कह सकत रहीं कि ऊ एतना बड़ महल बनवले होइहन। हँऽ ऊ अपना बात ले मिलल धन–दउलत क रखवाला रहन, ओके सँचत रहन, एको पइसा जल्दी खरच ना करत रहन। एकलौता रहन, एहिसे सगरो धन–दउलत क मालिक ऊहे कहात रहन। बाकिर मालिक कँजूस तऽ एतना रहन कि अपना बालो बच्चा के पढ़ाई लिखाई पर खरच ना कइल चाहत रहन। इहो उनका फजूल खरचिए बुझात रहे। बड़ बेटा पढ़े में अच्छा रहन तबो दसवाँ ले पढ़ाके उनके आगे ना पढ़े देलन आ गाँव से घर ले के एब जायदाद क रखवाला उनके बना दिहलन। ऊ अइसन एह से कइलन कि बाहर से कवनो दूसर आदमी एह काम खातिर न रखे के परो। दूसरा के रखतन तब ओके रूपिया पइसा एह काम खातिर देबे के परित।

बेटा का बाद उनके एगो बेटी रही। बेटियो स्कूल क फीस माफ कराके दसवाँ ले तऽ पढ़ लेली। आगे क पढाई क राह जब उनकरो बन्द हो गइल, तब रो–गाके भूखे–पियासे रहिके आ घरे में अनसन करिके बाप से कुछ फीस क पइसा पवली आ आज्ञा लेके आगे के पढ़ाई में लाग गइली। बाप–बेटी क पढ़ाई पर एह से पइसा ना खरच कइल चाहत रहन, कि पढ़–लिख के तऽ ऊ दूसरे के बन के दूसरे के घरे न चल जइहन तब उनका पर खरच कइल बेकार हो जाई। एही घड़ी का जाने बेटी के मन में का आइल कि ऊ अपना मने में परन क लेली कि ऊन–तऊ बियाह करिहंन न ऊ दूसरा घरे जइहन। पता न चलल कि ई सोच उनका मन के चाह रहे कि उनकर मजबूरी रहे जेके ऊ आजीवन निभइबो कइली।

अब अइसन भइल कि बड़की–बेटी पढ़ली–लिखली आ कालेज में नोकरियो पा गइली। नोकरी क–के ऊ अपना सब छोट भाई–बहिन के पढ़ा–लिखाके लायक बना देली। अपना भइए–बहिन के खाली डाक्टर आ प्रोफेसर ना बनवली बलुक भतीजो–भतिजी के इन्जिनियर आ विद्वान बना देली। मकान मालिक के सब जनमवला के भार बेटी अपना कान्हा पर उठा लेली। ई कुल देखके मालिक उनसे बड़ा खुश रहे लगलन। बेटी क जिम्मेवारी ओह घड़ी अउरी बढ़ गइल जबकि अपना बापो–मतारी क देख–रेख आ दवा–बीरो क सब भार अपने कपार पर उठा लिहली।

मकान मालिक अब अपना बेटा–बेटी क शादी–बियाह आ कवनो काजो–परोजन बड़की बेटिए से पूछ–पूछ के करे लगलन। बेटी क सोझा अपना बड़का बेटा के तऽ ऊ बुरबके बूझत रहन। उनकरा अवरी छोट कइगो लइका लइकी रहे बाकी ओह लोगिन के ऊ रेजगारी (फुटकर पइसा) बूझत रहन। ओह लइकन के कबो कहीं उनका मन आ दिमाग में कहीं जगही मिलबे ना कइल। उहो लोग इहे बूझे के संतोख क लेत रहे कि एह घर में त बड़का–बड़का बहल जाता–तब गदहा पूछे कि केतना पानी। बाप क सोझा परते ऊ लोग कगरिया जात रहे।

असल में मालिक तऽ एगो बड़हन जायदाद, का बड़हन हवेली क मालिक रहन। ओह भवन का चारो ओरी ऊँच–ऊँच चहदिवारी बनल रहे। कइगो किरायेदारो ओहिमें रहत रहन। एगो मलेरिया आफिसो ओह हवेली क निचला हिस्सा में चलत रहे। चार–पाँच गोले परजा पवनियो ओही चहर दिवारी का भितर बसल रहे। एतना सब ओही से भरल ऊ घर रहे, तबे न मालिक बिलास कइल छोड़के कवनो काम ना करत रहन। इहे कुल बात रहे कि दउड–धूप का वसूली करे खातिर अपना बड़का बेटा क ऊ तइयार क लेले रहन। बड़की–बेटी तऊ अपना हूनर से उनका जनमवलन क भार अपना कान्हा पर उठा लिहली। ऊ अपन करतब बूझके ई भार उठवले रही, एहि से कुछ दिनले ओह विलास भवन क चमक चमचमात रह गइल। ऊ धूमिल

ना भइल। बाकी कहिया ले ई भवन अपना विलास में डूबत–उतरात लउकित। भोगो–विलास के तऽ एक समय बुढापा अइबे करेला।

हम त ओह घर के ना घर कहब ना भवन, घर छोटहन होला जवन बालू–सिमेंट लकडी–बाँस, नरिया–थपुआ का माटी से बनल रहेला आ भवन ऊ कहाला जहाँ देवी–देवता क बास होला। भवन में भक्तन क भींड लागल रहेला। तऽ नऽ तऽ ई घर कहाई नऽ भवन। रहल बात महल–अटारी कोठी–हवेली आ बॅगला के तऽ उहो कुल ओके ना कहल जाई, काहे कि ओमें रहेवाला लोगवा ओइसन ना लउकत रहे। ऊ बनल तऽ रहे ओही महल क तौर तरीका से, जवन देखे में बड़ा सुन्दर दिखे। जे ओके देखे ऊ देखते रह जाइल करे। ओमे रहेवाला सब लोगके के बड़घर में रहला क बड़ा गुमान भरल रहत रहे।

ई कुल बात सोचला के बादो इहे कहल जाई कि ऊ घर मकान मालिक का कंजूस भइला क चलते बड़ा उदास रहत रहे। बाहरी लोगिन क कवन बात कहल जाई जब कि उनकर बालो बच्चा चाहे उनकर मेहरारूवो केहू उनसे खुश ना रहत रहे। एक दिन एगो कवनो जानकार आदमी उहाँ आइल रहे तब ऊ ओह घरवा के देख के बतवलस कि ई घरवा तऽ मू रहल बा। एहमें रहेवाला केहू आगे ना बढ़ी। केहू उन्नति तऽ करबे ना करी। हमनी के तऽ उहाँ किराएदार रहिंजा, बाकी ई बात ओह घर के लोग के सोचे के चाहत रहे। ऊ लोग एह बिचार के सुनबे ना कइल। असल में महल में रहेवाला लोग के इके कुछ बुझबे ना करे।

आज बहुत दिन बाद जब उँहे रहेवाला एगो किराएदार के फोन आइल तब हम ऊहाँ से, अपना पुरनका मकान–मालिक क हाल–चाल पूछ बइठली। उहो जमके लगलन बतावे। कहलन कि जानते बानी कि मकान–मालिक आ मलकिनी तऽ पहिलहीं चल बसल रहे लोग। उनकर बड़का बेटो अब एह दुनिया क छोड़ देलन।

एतना सुनते हम उनके आगे बोले ना दिहनी। हमरा मुँह से निकसल कि बाप–रे! ऊ तऽ कबो नीक कपड़ा लत्ता आ खयेका अपना जिनगी में नऽ पहिनलन, नऽ खइलन। हँ विलास भवन में रहिके मालिक क बड़का बेटा कहात रहन। हमरा बड़ा दुख भइल आ हमार मुँह उनकर मउवत सुनके खुलल के खुलल रह गइल। केतना सीधा ऊ रहन, तबे नऽ सब उनके बुरबके आ बकलोल बूझे। ओह घर में तऽ ऊ सबकर नोकरे बुझात रहन। तरो–तिहुआर में जब ऊ नया कपड़ों पावँस तब उहो मुड़ले चुड़ल लउके।। उनकरा पाँव में तऽ एगो मइल कुचइल हवाइए चपल सब देखल करें–का जाने उनका लगे जूता–सेंन्डिल रहे कि ना।

बड़की बेटी लगे रूपिया–पइसा रहत रहे–काहेकि ऊ कमात रही, तबे तऽ ऊ बड़ शहर में अपना नॉवें एगो नया डिजाइन क घर कीन लेले रही। बापो बड़ा खुश रहस कि बाद में उहो घरवा तऽ उनही के न हो जाई। बेटी के तऽ केहू अवरी बाना। बेटियो कह देली कि एह घरवा के हम का करब, इहे लोग एहमें रही।

मालिक के दूगो अवरी छोट बेटा रहन, तऽ एगो के बहिन डाक्टरी पढ़ा देले रही, बाकी देखे में कबो ना लगलन कि ऊ एगो देहातियो डाक्टर बा ना। कुछ दिन बाद ऊ जीवन–बीमा के डाक्टर बनलन तब कुछ पइसा पा जात रहन। अबे एह डाक्टर क जवानी केहू देखबे ना कइल, तले दूगो बेटा एह घर के देके बुढ़ापा क चदरा ओढ़ लेलन। बाद में त उनकर जिनगी अस्पताले में बीते लागल।

मालिक क छोटका बेटा उहें जिला बन गइला से कचहरी में कवनो नोकरी पा गइलन। बहुते पइसा कमइलन। पइसा से धनी तऽ बनलन बाकी कवनो बंस ना भइला से सोझा अन्हारे लउकत रह गइल। मालिक क दूगो पोता इन्जिनियर बन के अपना परिवार संगे बहरा रहे लागल लोग एह से ई भवन अब बहुत उदास रहे लागल रहे।

धीरे–धीरे विलास–भवनो के जब बुढ़ापा आ गइल तब एकर मरम्मतो करावे वाला केहू ना रहे। मरम्मत जइसन दवाई–बिरो ना मिलला से, भवन अब लटक गइल रहे। घर के एह लटकल बुढ़ापा के दुख के दुनियाबी रीति के चलते अब केहू एकर साथ देबे के तइयार ना भइल। सभे अपना–अपना ठेकाना पर घुसकत चल गइल लोग। तीनो बेटी लोग त पहिलहीं आपन घर बसा के चल देले रहे एहसे अब उहाँ केहू रहि ना गइल। बुढ़ापा के देखि के तऽ सब मुँह मोड़िये लेला इहे एह घरवो साथ भइल।

मकान मालिक अपना जियते जी तऽ कुछु कर ना पवलन। उनका सोझा उनकर कवनो बेटा जब लायक ना लउकल तब एह दुनिया से जाए घड़ी ऊ अपन पूरा जायदाद क वसीयत अपना बड़की बेटी क नावे कके चल गइलन। अब विलास–भवन क सब जायदाद मालिक बड़की बेटी बन गइली। जायदाद क मालिक बनते उनकर सब भाई–बहिन उनके टेढ़े–टेढ़े ताके

लागल लोग। जे उनका से सटे ओकरो इहे खटिस रहत रहे कि ऊ आपना घरवा ओही के लिख दीहन। लायक बेटी बनला से आ बाप क पूरा घर सम्मरला से उनका सोझा एह चउथापन के अवते समस्यन क जाल बिछ गइल रहे। ई जाल बड़ा घुरचियाइल रहे।

जहिया से हम ई बात सुनलीं चैन कबो ना पवलीं। हमरा मन में ई बतिया बेर–बेर बदरी बनके उमड़े–घुमड़े आ बवन्डर बनके उड़ियो जाव बिलास बाबा गाँव क माटी क घर छोड़ के एह हवेली के अपना बेटा–बेटी आ पोता–परपोता के मने–मने सउँपले हो इहन। ऊ ना जनलन कि एक्को पुश्त उनका हवेली मे रह पाई कि ना। एतना कड़हन हवेली कइसे हवा बन गइल, केहू क पता ना चलल।

एह घड़ी एह भवन में कवनो बेटा बेटी क बास नइखे। फोने पर ऊ बतवलन कि अब मकान मालिक का जगह एह घर में एगो बड़हन दैत्य मुकदमा क रूप धइके रह रहल बा।

ऊ बेटी जे सब भाई बहिन के पढ़वली–लिखवली, सबकर शादी–बियाह करवली तबो लागता कि अपनन का एह मुकदमा के जाल से बहरा ऊ ना निकल पइहन। पूरा जिनगी ऊ अपना सुख के मने में दबवले रह गइली। वियाह–शादी ना कके बाप–मतारी क सेवा के अपन धरम बनवली। एह जिनगी में अपन ऊ कवनो खाहिस पूरा ना कइली। बाप त अपन करतब बूझ के अपन बसियत एह लायक बेटी क नाँव क देलन आ निफिकिर होके, सबके छोड़ के चल देलन।

सुनले रहीं कि बड़का–बड़का राजा लोगन क राजपाठ असहीं बिला गइल–तब विलास–भवन के कवन औकात रहे। ऊ तऽ अपना मालिक क कंजूसी से आज बिलाए क कगार पर पहुँचल रहे। मालिक जियते जी त कंजूसी कके धन–दउलत बटोरबे कइलन, मरतो घड़ी बँटवारा करे में कंजूसिए कइलन। अपना बेटा लोगिन में केहू के एह काबिल ना बुझलन कि एह घर क रक्षा त केहू क सकेला। इहे बात रहे कि बड़की–बेटी के लायक बूझके अपना पूरा जायदाद के मालिक उनहीं के बना देलन। ऊ कबो ना सोचलन कि बाकी बाँचल तीन गो बेटा आ तीनगो बेटी जब कोर्ट–कचहरी में दउड़े लागी तब एतहत हवेलियो के ऊ हवा में लोग उड़ा दी। मुकदमा अइसन भूत–प्रेत होला जवन केतनो ओझा–सोखा के झरलो–फूँकला पर भागेला ना।

उहे भइल अब हवेली में एह कोर्ट कचहरी क राज भ गइल रहे। जेकरा आँच में बड़कियो बेटी अकारथ झँउसाए लगली। एह मुकदमा क लहर ओहू बेटी के लीले खातिर लपके लागल। हमरा बुझाता कि जब–जब ओह बेटी के ऊ लहर जरावत होई तब तब ऊ इहे सोचत होइहन कि काहे न उहो अपना तीनो बहिन जइसन समय रहते केहू क रानी आ केहू क माई बन गइली। रानी आ माई बन गइल रहिती तब आज ई दिन ना देखे के परित। ●●

❑ द्वारा-आर ए० संजीव डी-II, 147,
काका नगर, नई दिल्ली–110023

फोटो ग्राफर, लेखक, कवि भाई लोगन से निहोरा.......

(1) फुल स्केप कागज पर साफ सुन्दर लिखावट में भा कृतीदेव 10 फॉन्ट में टाइप कराके रचना–सामग्री आ फोटोग्राफ रजि0 ड़ाक से भेजीं अउर **paati.bhojpuri@gmail.com**, या **ashok.dvivedipaati@gmail.com** पर मेल करीं।
(2) पत्रिका में रिपोर्ताज रपट, फीचर सामग्री भेजत खा, साथ में ऊहे चित्र/फोटो भेजल जाव, जवन बढ़िया आ प्रकाशन जोग होखे। आपन संक्षिप्त परिचय आ नया फोटो साथ में भेजीं। (रजि0 डाक से)
(3) पाठक भाई लोगन से विनती बा कि पत्रिका का बारे में, आपन प्रतिक्रिया/विचार भेजत खा, आपन नाम पता, पिनकोड सहित आ मोबाइल नंबर भेजीं। पता पत्रिका में छपल बा।
(4) संस्कृति–कला संबंधी आलेख बढ़िया चित्र रेखाचित्र, फोटोग्राफ के साफ प्रिन्ट–आउट का साथे भेजत खा ओकरा तथ्य–परक प्रामाणिकता के जाँच जरूर करीं। संपादक का नाँवें ईमेल पर फोटोग्राफ भेजल जा सकेला बाकि लिखित रचना के प्रिन्ट रजि0 डाक/कुरियर से भेजल जरूरी बा।
(5) निजी खर्चा पर निकलेवाली आ बिना लाभ के छपेवाली अव्यावसायिक पत्रिकन के सबसे ज्यादा सहयोग ओकरा लेखक कवियन आ पाठकन से मिलेला। ई समझ के एह पत्रिका के पहिले खुद ग्राहक बनी अउरी दुसरो के बनाईं।

लोकाचार तब आ अब

✍ अशोक कुमार तिवारी

कहल गइल बा कि ''जे लउके से लोक'' माने ई दृश्यमान जगते लोक हऽ। लोक द्वारा, लोक में अपना परम्परा आ जीवन संस्कृति के अनुसार जवन आचरण कइल जाला, ऊ लोकाचार हऽ। लोकाचार परम्परा से मजबूत भइल। एह परम्परा में शास्त्र मत में लोक मत आ व्यवहार के संतुलन रहे। ओकरा बेवस्था में तमाम बेद, पुराण आ उपनिषद आ शास्त्र से जवन कुछ छुटल–छटकल रहे ओकर भरपाई व्यवहारिक ज्ञान से कइके लोकाचार के रूप दीहल गइल रहे, जवन कि समाज के सभ्य–असभ्य, बड़–छोट, पढ़ल–नीपढ़, कमजोर–बरियारा माने सबका के महत्व दिहला के साथ–साथ सामाजिक आधार से कमजोर, कम पढ़ल–लिखल आ उपेक्षितो के विशेषाधिकार देबे के काम चलाऊ बेवस्था रहे। हमरा हिसाब से उपेक्षितन से मतलब समाज में निरादृत चण्ठ–लण्ठ, राँड़–साँढ,पागल–बउराह, मदान्थ–नसेड़ी, मनबढ़ू–मनसोख, बूढ–बच्चा वगैरह के लिहल जा सकेला। यदि ई लोग कवनो अनेतियो कऽ देव, भा कइल चाहे त लोकाचार के तहत एकरा खातिर छूट के प्रावधान रहे। शर्त ई रहे कि ओह काम से समाज के नोकसान के बजाय कल्यान होखे। लोकाचार मे उपेक्षित खातिर का विशेषाधिकार भा छूट रहे एकरा के कुछ उदाहरन के माध्यम से जानल जा सकेला।

जइसे मान लीहीं कि साधू लोगन के कवनो टोली कहीं कवनो जतरा पर जा रहल बा आ साँझ हो गइल, तऽ जहँवे साँझ हो जाई उहवें ऊ लोग केहुओ के दरवाजा पर आपन डेरा डाल देव आ कहि देव कि आज हमनी के डेरा इहवें रही। त उहवॉ के समाज एकरा के माने। गृहस्थ परिवार के मुखिया के दायित्व हो जाउ कि ऊ सपरी त खुद, ना तऽ गॉवो–जवार, टोला–परोसा के मदद से ओह साधू लोग खातिर सीधा–सातू, लकड़ी–गोंइठा, बरतन–पानी भा आउर जवने जरूरत के सामान होई ओकर प्रबन्ध करी।

एही तरी मान लीं कि कौनों नसेड़ी नशा के तरंग में समाज में केहू के झूठ–साँच, जलालत–फजिहत कऽ देव, अनाप–शनाप बोल देव त ओकरा खातिर समाज ओकरा के मारला–पिटला के बजाय उपेक्षा करे भा टाल देव। हद से हद ई करे कि ओकरा के तब तक खातिर बान्हि के एकोरा कऽ देव जब तक ओकरा नशा ना उतर जाव। मान लीहीं कवनो पागल–बउराह केहू व्यक्ति विशेष भा पूरा समाज के एक सुरूकिए उल्टा–सुल्टा बोले लागल भा ढेले–झटहा चलावे लागल त समाज ओकरा के गारी आ सजाय ना देके कवनो घर में बन्द कर देव चाहे हाथ–गोड़ मे पैकड़ डाल के छोड़ दियाइ। कौनो साँढ़–भॅइसा चाहे अनेरिया जानवर खेत में ढुक के नोकसान कइ देव त ऽ ओकरा के जान से ना मारके, लाठी–डण टा, लुकार से हाँक–हूँफ के भगा भर दीहल जाव।

कवनो बूढ़ जदि फुरमा देलस कि आज हम पूवे खाइब त ऊ परिवार कइसहूँ क के ओकर ऊ इच्छा पूरन करे के उतजोग करे। कवनो बच्चा पाठशाला जाये के बेरा छरिया गइल कि पेट दुखाता, पढ़े ना जाइब त ऽ ई जानियो के कि ई बहाना करत बा, तबहूँ गारजियन ओकर मन राख देव। रातियो खा कौनो छोट बच्चा जिद कऽ देलस कि हमरा चाना मामा चहबे करिहें, त ऽ मतारी के ओह बच्चा खातिर थरिया में पानी भरके ओकर बिम्बे सही, चन्ना मामा नीचे उतारे के परि जाव। समाज में कहीं गीत–गवनई, नाच होत होखे आ कौनों मनबढ़ू फुरुमाइश कइ देव कि '' फलनवे गीत'' होई त गवनिहार टोली के मजबूरन ओ गीत के सुनावे के पड़े।

गाय के पहिला रोटी दीहल, कुकुर के कवरा दीहल, पंछियन के दाना खियावल, मछरिन के आटा के गोली डालल, चिउटिंन के मानि–रास्ता पर आटा छींटल आ घरन में गौरइया, कबूतरन खातिर कोठर बनवावल ई सब परोपकार पुरनका लोकाचार के अंग रहें। लोक के ई बखूबी मालुम रहे कि अनका भलाई कइले से आपनो भलाई आ ओकर पुण्यफल सम्भव बा। क्रिया के प्रतिक्रिया होला। एही से परहित आ परोपकार के बिचार से ''लोक'' एकर कामना कइलस कि ''पंच के भला, ताहि पीछे हमरो भला।'' ई लोकाचार मानवी संबेदना के त दरसावते रहे। अतनवे ना लोगन के प्रेरित करे बदे एके धरम आ पाप–पुण्य से जोरि के डेरवावलो जाय जवन कि समाज खातिर सुगम अदृश्य अनुशासन के रूप में बाध्यकारी रहे आ एकरा से समाज में एगो सद्भावना सन्देश जाय। सॉच तऽ इहे बा कि अगर एह सब चीजन के धरम, पाप–पुन्न आ सरग–नरक से ना जोड़ल गइल रहित त समाज सहजे एकरा पर विश्वास आ आचारन ना करे पाइत आ नाहिये समाज के एह सब में आस्था रहित।

बदलत समय के साथे समाज में शिक्षा बढ़ल त शिक्षा के माध्यम से पूरा विश्व एक–दोसरा के साहित्य–संस्कृति, आचार–व्यवहार, ज्ञान–विज्ञान से जुड़ल जानल। विज्ञान आ आधुनिकता का कारन पूरा विश्व में परिवर्तन के एगो दौर चलल। लोग पहिले के तुलना में जादा तार्किक भइल आ लोगन के सोच बदलला के नतीजा भइल कि हर चीज के लोग तर्क के कसउटी पर कसल चालू कर दीहल जवना से ईश्वर धर्म आ मान्य लोकाचारो प्रभावित भइले बिना ना रहे पावल। एही में पाश्चात्य आ चीनी विचारकन से प्रभावित कुछ कथित भारतीय विद्वान लोग समाज के ईश्वर, धर्म आ स्थापित लोकाचार के खिलाफ उकसाइ बरगलाइ के स्थापित सदभाव वाली एकता के बाँटे के प्रयास कइल जबकि ओह पाश्चात्य देशन आ चीन के स्थिति–परिस्थिति सामाजिक संरचना आ वातावरण भारतीय स्थिति–परिस्थिति सामाजिकता आ लोकाचार से भिन्न रहे। एकर भयानक असर ई होत रहे कि देश भितरे–भितरे पहिले मजहब–पंथ आ विभिन्न तथा कथित समाजन में बॅटल। समाज से परिवार में आ परिवार से व्यक्ति में बँटात चल गइल। लोकाचार में परमार्थ के जगह विशुद्व स्थार्थ समा गइल। लोग व्यक्तिगत पसंद–नापसंद का जाति–वर्ग गोल आ खेमा में गइल आइल बन्द करे लागल।

कतना दुख के बात बा कि केहू के मुअलों पर चार गो कान्ह ना मिले, बलुक भाड़ा के गाड़ी कइके शरीर के दाह–दफन करेके पड़ें। गनीमत बा कि एकर आँच आ असर एह हद ले 'लोक' मे ना हो पावल, जवना से अबहुँओ आपसी प्रेम आ भाई–चारा बांचल बा। इहे ले ना अगर नेता लोग के छोड़ दियाव त तमाम बुद्विजीवी लोग विभिन्न माध्यम से एह प्रयास में लागल जुड़ल बा कि विखण्डन के कइसे रोकल जाउ। एही प्रयास के देन हऽ कि एने कुछ साल से लोगन में परोपकार, प्रकृति संरक्षण आ जगत कल्याण के भावना के विकास भइल बा आ एह सब चीजन में आस्था बढ़ल बा। एगो नया आशा जाग उठल बा कि लोगन में परोपकारी लोकाचार, आपसी प्रेम भाईचारा बनल रही आ सनातनी परंपरा का आधार पर देश, समाज, परिवार के एकता अखण्डता कायम रही।

कहल जाला कि उमेद पर दुनिया कायम बिया। त ऽ जरूरी बा कि हमहूँ उमेद पर कायम रहीं।

●●

❑ ग्राम व पो०-सूर्यभानपुर, जिला-बलिया, उ०प्र०

लोककंठ मे बसल सनातन साहित्य

जलज कुमार मिश्र 'अनुपम'

बदलाव महत्वपूर्ण होखेला बाकिर बदलाव बरसात के नदी ना होखेला, ऊ त बाढ़ के पानी होखेला जवन अपना धारा मे बहुत कुछ बहा के लेके चल जाला। ऊ नीमन ना देखे, बाउर ना देखे काहे कि बाढ़ के आपन कवनो नैतिक चरित्र ना होखेला। एह दौर के अगर बात कइल जाव त साहित्य के नाम पर बहुते कचरा परोसाये लागल बाटे। आज के साहित्य के लोक से कवनो वास्ता नइखे। अब त साहित्य एगो उदेश्य पूर्ति के साधन हो गइल बाटे।

साहित्य में सत्य निहित होखेला। बिना सत्य के, प्रामाणिकता के, साहित्य के कवनो अस्तित्व ना होखेला। आज के दौर बड़ा भयावह लागत बाटे। आज जब प्रगतिशीलता के नाम पर कुतर्क आ राजनीति साहित्य के अंग बनत जात बाटे, तब एह बात के आवश्यकता अउरी बढ़ जात बाटे कि पुरान थाती के संरक्षण के जिम्मेदारी के लिही आ के एकरा के, के अपना कंध ाा पर, एकर पालो लेके चली। साहित्य जब ले मानवी मूल्य के कसौटी पर ना कसाई, ओकर प्रासंगिक आ व्यापक परिदृश्य ना लउकी।

हम एक बेर आचार्य विद्यानिवास मिश्र जी के लेख पढ़त रहनी उहाँ के कहले बानी कि साहित्य के प्रयोजन एगो इहो होखेला कि ओकरा मूल्य के प्रासंगिकता के जाँच खाली अपना युग के दृष्टि से ना करे के चाही, ओकरा के आगे के संभावना के दृष्टि से देखे के चाही। जब जरुरत महसूस होखे त ओह युग मे व्याप्त अंधविश्वासी जड़ आस्था के खंडन करी बाकिर एकर मतलब ई कबो ना निकल सकेला कि ऊ युगनिरपेक्ष चाहे कालनिरपेक्ष बाटे। साहित्य देशातीत अउरी युगातीत होखेला आ ऊ देश अउरी युग के बन के ओकर अतिक्रमण करेला ताकी ऊ अपना देश काल अउरी युग के अधिक दीप्तिमान बना सके।

भारतीय लोक परम्परा श्रुति प्रधान रहल बाटे। पीढ़ी दर पीढ़ी अपना परम्परा मे एकसूत्रता बरकरार राखे के चाही। इहाँ एकसूत्रता के मतलब मानव मूल्य के संरक्षण से बाटे, जवन की स्थाई होखेला। स्थाई मूल्यन के पहचान तबे संभव बाटे जब रउरा ओकरा अंदर प्रवेश कइल जाई आ ई पहचाने के सामर्थ्य का साथ कि एकरा मे स्थाई का बाटे आ अस्थाई का बाटे! युग के हिसाब से शब्द साधना बहुत महत्वपूर्ण होखेला। श्रुति परम्परा के सबसे बड़का फायदा ई होखेला कि ओकरा से संस्कृति मे निरंतरता बनल रहेला।

आज हमनी किहाँ, हर अगिला पीढ़ी के ई बोध होखे लागल बाटे कि ओकर पिछलका पीढ़ी ओकरा से कम जानकार चाहे कम विकसित बाटे। एकर मतलब ई निकल के आवत बाटे कि पिछलका पीढ़ी कहीं ना कहीं श्रुति परम्परा से मिलल ज्ञान के सही तरीका से हस्तांतरण करे मे असफल रहल बाटे। एही परिप्रेक्ष्य में भोजपुरी के राख के देखीं त मालूम चली कि भोजपुरी में साहित्य श्रुति प्रधान साहित्य के भरमार बाटे। भोजपुरी के संदर्भ मे ग्रियर्सन कहत बाड़े कि भोजपुरी ओह शक्तिशाली, स्फूर्तिपूर्ण अउरी उत्साही जाति के व्यावहारिक भाषा हवे, जवन परिस्थिति अउरी समय के अनुकूल अपना के बनावे खतिरा सदा प्रस्तुत रहेले आ एकर प्रभाव हिन्दुस्तान के हर भाग पर पड़ल बाटे। एह जीवन–यात्रा में, लोक के वाचिक संपदा हमेशा भोजपुरियन के आगा के राह देखावत आइल।

भोजपुरी के लोकगीत भोजपुरी लोक के जान होखेला। भोजपुरिया संस्कृति के जान प्रान ओकरा लोकगीत मे बसेला। भोजपुरिया क्षेत्र मे जनम से लेके, मरण तक ले जेतना संस्कार बनावल बाटे सबका हिसाब से गीत बनल बाटे। भोजपुरिया इलाका मे जन्मोत्सव के अवसर पर सोहर गावल जाला। ओकरा बाद उपनयन संस्कार के हर विधी–विधान पर गीत रचल बाटे।

शादी के अवसर पर माटी कोड़ाई चाहे मटकोर के पहिले लगन चुमावे से लेके बरात के विदाई ले तमाम तरह के अलग–अलग नेग चार पर गीत बनल बाटे। मिलाजुला के देखल जाव त तीस पैतिस तरह के अलग अलग गीत बाटे खाली बियाह मे जइसे कि हल्दी कुचल, सगुन उठावल चाहे माड़ो छववावे के गीत, तिलक के गीत, गारी के गीत, चुमावन के गीत, संझा के गीत, पराती के गीत, परछावन के गीत, डोमकच के गीत, दौरा में डेग के गीत, कोहबर के गीत, गवना के गीत, धान कूटाई के गीत, चुल्हा पराई के गीत, कोहरवत के गीत, मँडवान के गीत, पीतर नेवतइ के गीत, मातृ पूजन के गीत, कलसा धरे के गीत, द्वार पूजा के गीत, हल्दी लगावे के गीत, देवता बोलावे के गीत, माटी कोड़े के गीत, लावा भूजे के गीत, पोखरा खोने के गीत, नहवावे के गीत, नजर उतारे के गीत, नोह काटे के गीत, कपडा पहिरावे के गीत, इमली घोटावे के गीत, गुरहत्थी के गीत, परछावन के गीत, कन्या दान के गीत, सिन्दूर दान के गीत, लावा मिलावे के गीत, गोदभराई के गीत, बिदाई के गीत चाहे दुआर छेकाई के गीत एह सब गीतन मे लोक के आत्मा के बास होखेला। एकरा अलावे देखेम त मालुम चली कि हमनी इहाँ लड़कपन मे खेलहूँ कुदे के बाल गीत बाटे, लोरी गीत बाटे, मौसम के हिसाब से फगुआ, चइती, बारहमासा, कजरी, चाहे झिझियाँ, चकवा–चकई चाहे निर्गुण, चिट्ठी पर गीत, धान रोपाई के गीत, धान कटनी के गीत चाहे ऋतु गीत बनल बाटे। एक तरह से पूरा जीवन–चक्र आ श्रम–चक्र लोक गीतन में अनुभवसिद्ध होके गुँथाइल बा।

अगर हमनी के अपना से एगो पीढ़ी पीछे ताकल जाव त मालूम चली कि सब केहु के मोटा मोटी कुछ ना कुछ मुँह–जबानी इयाद बाटे, बाकिर आज के पीढ़ी एह से अंजान बनला का कारन भकुआइल बाटे। ई बात हमनी के समझे के होई कि हमनी इहाँ माई आ मौसी मे अंतर होखेला। चाची, मामी, फुआ ई सब संबंधन में खाली अंटी के घंटी डोलावला से काम ना चली। परिवार एगो सामाजिक संस्था के नाम हवे। सामाजिक संस्था लोक से चलेला अउरी ई धर्म संस्था आ राज संस्था से अलग होखेला आ एकर आपन रुप स्वरुप आ नियम होखेला। भारतीय समाज में लोक के जड़ एही कारन अंग्रेजी शासन से मुक्ति आ विदेशी विचारन का दबाव में कथित वामपंथी प्रगतिशीलता, आधुनिकता आदि आजु ले भारतीय लोकमानस पर आपन असर ना डाल पवलस।

भारत हरदम से सनातन संस्कृति के देश रहल बाटे। संस्कृति माने जीवन–संस्कृति तमाम तरह के आक्रमण एह देश पर भइल चाहे ऊ वेदकालीन संस्कृति पर बौद्ध के आक्रमण चाहे बौद्ध पर पुराणकाल के आक्रमण चाहे पुराणकाल पर मुगल आक्रमण चाहे ओकरा बाद पश्चिमी सभ्यता के आक्रमण बाकिर सब आक्रमण के बाहो लोक संस्कृति बाँचल रह गइल। संस्कृति के मतलब इहे होखेला कि ओकरा गतिशीलता में से अवगुन हटावल जा चुकल बाटे आ नया गुन के समय के साथ स्वीकृति हो चुकल बाटे। हमनी सब केहू के ई नैतिक जिम्मेदारी बनत बाटे कि अपना एह सांस्कृतिक परम्परा के सही सलामत आगे का पीढ़ी के हस्तांतरण करी। जवन रउरा जनमा नइखी सकत, ओकरा के मिटावे के अधिकारो रउरा लगे नइखे।

आजकल जिनगी एतना अजीब हो गइल बाटे कि सबका लगे समय के अभाव बाटे। सब केहू के अपना अपना से मतलब रह गइल बाटे। एकरा से आपन क्षति बाटे। एकरा के शहरीकरण के दोष मानी चाहे पश्चिमीकरण के अब पुरनका खराब लागे लागल बाटे आ लोग एकरा चकर मे ई भुला गइल बाटे कि पुरान सबका होखे के बाटे। लोककथा जवन कि नैतिकता आ मूल्य के पहचान आ परम्परा के ढाल रहलऽ ओकर अब लोप हो रइल बाटे।

लोक कथा कहे वाला पुरनिया अब जल्दी कहाँ भेटात बाड़ें? बूढ़–पुरनियाँ, जे घर मे बाँचल बाटे उहो उपेक्षित बाटे। कृत्रिम रोशनी आ सूरज के प्रकास मे बहुत अंतर होखेला। सूरज शाश्वत सनातन हवे आ ओकरा आगे ले रहे के बाटे। ई जेतना जल्दी बुझाये लागो ऊ सही रही। अनुसंधान जीवन के प्रगति मे सहायक होखेला बाकिर अनुसंधान के सहारे जीये के मतलब ई ना होखेला कि जीवित परम्परा के गला घोंट देहल जाव।

भारत के परिदृश्य मे इतिहास के व्याख्या हर दौर मे बदलत रहल बाटे। बजारवाद के एह दौर में आम आदमी आज कठपुतली हो गइल बाटे आ ओकरा इहे नइखे बुझात कि ओकरा के नचावत के बाटे?

आज देश के तथाकथित बुद्धिजीवी समुदाय लोक से पूर्णतया कट चुकल बाटे। ऊ आम आदमी के आकांक्षा अउरी उम्मीद के छुवे मे असफल रहल बाटे। अजादी के बाद से सत्ता अउर लोक के बीच मे अभी ले सामंजस्य स्थापित ना हो सकल। शहर अउरी गाँव के बीच के खाई दिन प्रतिदिन बढ़ल जात बाटे। काल बदलत रही बाकिर सत्य ना बदलेला। आधुनिकता मूल्यहीनता के कसौटी पर कबो स्वीकार नइखे हो सकत, नाही प्रगतिशीलता के नाँव पर अनर्गल अराजकता के।

रंग बदल दिहला से पहचान ना बदलेला। कोइल आ काग दूनू के रंग करिया होखेला बाकिर, गुन धर्म के अंतर बाटे। रंगाइल सियार के भेद कबो ना कबो खुलिये जाला। राउर आपन हर समय राउर रही। 'थेम्स', गंगा माई के जगह कबो ना ले सकेली। जब आदमी दुःख मे आवेला, जब ऊ हार जाला, या अपना आप के टूटल महसूस करेला त ओकरा आपन माइये इयाद आवेली आ ओह बेरा ओकरा आपन ऊ लोक इयाद आवेला जवना में ऊ पलाइल–पोसाइल रहे। काहे कि दुःख मे नकाब हट जाला आ वास्तविक स्वरूप सामने होला। सनातन माने ऊ संस्कृति–प्रवाह, जवन निरन्तर बहत चलि आइल बा, जवन 'लोक' का जीवन–संस्कृति आ ओकरा पीढ़ी–दर–पीढ़ी का अनुभवन से सिद्ध बा, ओसे विलग होके, नया मार्ग के अनुसरण सार्थक आ उपयोगी ना होई। ●●

❑ बेतिया, (पश्चिम चम्पारण)

संत कबीर आ चम्पारणः अन्तर्सम्बन्ध

गुलरेज शहजाद

बिहार के दखिन–पच्छिम ओरी एगो जनपद बा, चम्पारण। चम्पारण पौराणिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आ ऐतिहासिक दृष्टिकोण से काफी महत्वपूर्ण बा। एह पावन धरा–धाम से हमेशा हिंसा, अन्याय, अनाचार, पाखंड आ प्रपंच के बरखिलाफ विरोध के तेज आवाज उभरेला आ हमेशा बदलाव का नया अध्याय के रचना होखेला। चाहे ऊ पौराणिक काल होखे, मौर्य चाहे आधुनिक भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के कालखण्ड रहल होखे, चम्पारण हमेशा रोशनी के लड़ाई के अंजाम देबे के महान काम कइले बा। गांधी जयंती के 150 वाँ साल में एक बेरी फिरू अपना आत्म–गौरव के मूल तत्वन के वैचारिक खोज जरूरी बा।

आदिकवि वाल्मीकि, महर्षि याज्ञवल्क्य आ उनके विदुषी पत्नियन मैत्रेयी आ गार्गी, महात्मा बुद्ध, कबीर आ महात्मा गांधी जैसन कईगो महान संत, फकीर आ चिंतक मनीषियन के पावन प्रेम, ज्ञान आ सेवा के पवित्र जल से सिंचित ई धरती संघर्ष आ श्रम का सौंदर्य से तर–ब–तर बा। चंपारण का धरती से क्रांतिकारी कवि आ समाज सुधारक संत कबीर के जुड़ाव रहल बा।

कबीर निर्गुण काव्य धारा के अन्यतम सर्जक आ हिंदी संत काव्य के महत्वपूर्ण स्तंभ का रूप में ख्यात बाड़ें। कबीर अपना समय के धार्मिक, सामाजिक आ राजनीतिक व्यवस्था का जवरे कुरीतियन से टकराए के साहस कइलें। ऊ निधड़क आ निर्भीक सृजनधर्मी के फर्ज साहित्य में अंजाम दिहलें। मध्यकालीन कवि रहत उनका भीतर समय–काल के पार देखे के अद्‌भुत दृष्टि रहे। इहे कारण रहे कि कबीर आजुओ ओतने प्रासंगिक बाड़ें जतना अपना दौर में रहलें।

चम्पारण का धरती से कबीर के गहरा जुड़ाव रहल। अगर अइसन कहल जाय कि जे स्थान भगवान बुद्ध के जीवन मे सारनाथ के बा उहे स्थान संत कबीर के जीवन–वृत में चम्पारण के बा बेजाय ना होखी। भगवान बुद्ध के ज्ञान प्राप्त भइल बोधगया में आ ओकर प्रकटीकरण आपन पांच खास शिष्यन का बीच सारनाथ में कइलें। ओहि तरे संत कबीर के ज्ञान प्राप्त भइल काशी में आ ओकर प्रकटीकरण भइल चम्पारण स्थित सोमेश्वर महादेव के नगरी अरेराज अनुमण्डल के चटिया में। सदानीरा नारायणी का तट पर अवस्थित चटिया में संत कबीर के दोहा ''बीजक'' का रूप के संकलित भइल। ई साहित्य का इतिहास के एगो अनोखी घटना बा।

संत कबीर काशी से चल के जतरा करत चटिया अइलें। काफी समय ले ऊ इहँवा निवास कइलें आ उनके कुल्हि साखी, दोहा के कबीर साहेब के शिष्य भगवान गोसाईं बड़ा मनोयोग से लिपिबद्ध कइलें। एही संकलन के ''बीजक'' का रूप में ख्याति मिलल। भगवान गोसाईं निम्बार्क सम्प्रदाय के संत रहस। शास्त्रार्थ में पराजित भइला का बाद ऊ कबीर साहेब के शिष्यत्व ग्रहण कइलें।

कबीर साहेब के अवसान का बाद भगवान गोसाईं मगहर से उनकर प्रतीक–पुष्प लेआ के चटिया में समाधि स्थापित कइलें आ कबीर–पंथ के ''भगताही शाखा''

के स्थापना भइल। चटिया में भगवान गोसाईं सहित भगताही शाखा के कुल 53 महंथन के समाधि बा। भगताही शाखा में कबीर पंथ का भक्ति–भावना के प्रधानता बा। इहवाँ वाह्योपचार निषेध बा।

''जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिये ज्ञान'' – के उद्घोष करे वाला कबीर–पंथ के धारा मानव–मानव में भेद दृष्टि के निषेध करे वाला धारा बा। कबीर साहेब सत्य, अहिंसा, प्रेम आ भाईचारा के सीख समाज के दिहलें। आडंबर आ देखावा के घनघोर विरोध कइलें। सामाजिक–सांस्कृतिक विडंबना आ कुरीतियन पर जबरदस्त चोट कइलें। ज्ञान–मार्ग के आत्म–उन्नयन के सबसे बेहतर रस्ता बतवलें।

सबका बाद ई एगो दुखद सच्चाई बा कि मौजूदा दौर में कबीर–पंथ के कबीर साहेब के अनुयायी लोग विवादास्पद बना देले बा। कबीर साहेब का नाम पर बनल मठ सब वर्चस्व आ भौतिकता के लिप्सा के शिकार हो के रह गइल बा। मठ का लगे अकूत सम्पति का चलते वर्चस्व का लड़ाई में हत्या तक के अंजाम दिहल गइल बा। सम्पति विवाद में अझुराइल मठ के स्थिति आजकाल ठीक नइखे।

आज अइसन स्मृति–स्थलन के बचवला का साथे संरक्षण आ विकास के जरूरत बा। चम्पारण के कोना–कोना सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण बा आ संत कबीर से जुड़ल ''चटिया मठ'' के महत्व व्यापक आ ऐतिहासिक बा जहवाँ कबीर वाणी संग्रह भइल आ बीजक के रचना भइल। चटिया मठ एगो ऐतिहासिक–सांस्कृतिक स्थल का जवरे मध्यकालीन ज्ञानमार्गी शाखा के अन्यतम कवि, समाज–सुधारक आ क्रांतिकारी संत कबीर साहेब के स्मृतियन के वातायन भी बा जेकरा के सहेज के राखल जरूरी बा। एकरा के एगो सांस्कृतिक विरासत का रूप में विकसित आ संरक्षित कइल चम्पारण का रहनिहार लोग का साथे सबकर धर्म बा। ●●

❑ नकछेद टोला, मोतिहारी–845101, पूर्वीचंपारन

लोकराग

मधुबाला सिन्हा

कवना रे नगरिया से
अइले एक जोगिया ----
कि जोग कइले ना
मोरा बाली रे उमिरिया की जोग कइले ना ।।

सुतल रहनी जे बाबा के अँगनवा-----
कि भोर भइले ना
एगो जोगिया बोलावे रामा,
भोर भइले ना ।

पहिरेले मिरगाछाला, लेले
हाथ में डमरुआ रामा
गरवा में ना
पहिरे सँपवा के मलवा
रामा गरवे में ना

चलऽ धनी, चलऽ सँगे
हमरो नगरिया कि---उहवें बाड़े ना
रामा भँगवा धतुरवा कि उहें बाड़े ना

तुहूँ रमइहऽ धूनी
चिलम पियइहऽ मोके
पीसि दिहऽ ना
रामा भंगिया धतुरवा कि भोग लगइहऽ ना

चित बा बेआकुल
मोरी बाली रे उमिरिया
कि जोग कइले ना
रामा अइले एगो जोगिया कि जोग कइले ना !

●●

❑ नेक्टर प्वाइंट, आवासीय विद्यालय, चाँदमारी, वार्ड–26, मोतिहारी (पूर्वी चम्पारण)

गीतन के अधार-भूमि आ बुनावट के बिन्दु

सौरभ पाण्डेय

गीत मानव–समाज के संप्रेषणीयता के प्राकृतिक रूप हवन सऽ। गीतन के एही से सनातन समझल जा सकेला। इन्हनीं के वास्तविक संबंध हिरदै से रहल। सउँसे सृष्टी अपना बेवहार में भावमय होले, माने लय में होले। सृष्टि के सभ अवयव एगो विशेष लय में संस्कारित आ क्रियाशील होलन सऽ। ईहे लय कवनो गीत के आत्मा होला। एक सुरुआत से लोकमानस आपन भिन–भिन्न भाव के अभिव्यक्ति लय में करत रहल बा। अइसने अभिव्यक्ति संप्रेषणीयता के विकास में आगा चल के गीतन के अधार बनल। गीत मानव–मन के हुलास, क्षोभ भा जीवन में कवनो तरीका के बदलाव के समान रूप से अभिव्यंजित करत रहल बाड़न सऽ। आदमी के मूल प्रकृति चूँकी समाजिक हऽ, त ओकर नितांत निजी अनुभूतियो के समाजिक अभिव्यक्ती मिलत रहल बा। ईहे कारन बा जे समाज अपना बिकास के एक सुरूआत से गीतन के आपन अभिव्यक्ति के माध्यम बनवलस।

कथ्य आ इंगित के हिसाब से गीतन के दायरा बड़हन फैलाव लेले रहेला। समाज के बड़हन वर्ग के मनई आपन सुख–दुख, उत्साह–उमंग, हुलास–पीड़ा, आफत–बीपत, अपना जिनिगी के संघर्ष–साधना आदि के सोझ अभिव्यक्ति गीतन में पावेले। ओही से उनका हियरा के भाव बोल पावेला। एही से जीवन–यापन से लेके सभ तरहा के अवसर, रितु, उत्सव–तेवहार, भौतिक–वैचारिक–समाजिक–आध्यात्मिक बेवहार आ उत्जोग के गीत उद्भूत भइल बा। गाँव–गिरान के समाज प्रकृतिजीवी समाज रहल बा। ऊ हर तरह से प्रकृती प निर्भर रहल बा। आ गीत ओकर जीवनी–शक्ति खातिर औषध रहल बा। गीतन के माध्यम से समाज के सभ वर्ग के लोगन खातिर समाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आ मनोवैज्ञानिक भाव के निकहा संवेदनशील आ सार्थक अभिव्यक्ति मिलत रहल बा। एहसे ई कहे में कवनो बेजाँइ ना होई, जे गीत अइसन काव्य रचना हऽ जेकरा समाज के बड़ वर्ग–समूह द्वारा अपना जरूरत के मोताबिक समै काल आ परिस्थिती के अनुसार गावल जात रहल बा। एह से एक बात एकदम साफ बा, जे गेयता, लयबद्धता गीत खातिर अनिवार्य शर्त बड़ुए। जवन अभिव्यक्ति सप्रवाह गावल ना जा सके ऊ भलहीं कुछऊ हो सकेला, गीत ना कहाई।

धमनी में बहत खून के बहाओ में एगो बिसेस आवृति भइल करेला। माने ऊहो एगो लय में होला आ तबहीं बहेला। एह लय के हर समै बनल रहल शरीर के स्वस्थ आ निरोगी बनल रहला खातिर निकहा जरूरी बा। ईहे शरीर के स्वस्थ भइला के निसानी हऽ। लोक–चेतना आ सबल संस्कृति के सङे गतिमान समाज अइसहीं एगो सधल आवृति में भइल करेला। समाज के ई आवृति ओकरा लगातार बनल रहला से सधत जाले। अइसना समाज के लोक अपना अनुभव आ आपन अनुभूति के संप्रेषित करे के क्रम में लगातार नियमबद्ध होत जाला। ईहे नियमबद्धता आगा संप्रेषणीयता के व्याकरन आ ओकर ढंग तय करेले, जवन समै आ बिचार–समृद्धि के अनुसार साहित्यिक विधा के मानक तै करत ओकर विधान बने के कारन होत जाले। ईहे कवनो विधा के विधान के नियत होखे के मूल हऽ। ई भलहीं

निकहा दीर्घकालीन क्रिया हऽ, बाकिर ई क्रिया लगातार ठोस भइला खातिर ठोस भासिक अधार जोहत रहेला। आगा चल के ईहे उत्जोग संप्रेषण–माध्यम के अनुरूप कवनो अभिव्यक्ति के वैधानिक शिल्प बनला के कारन होत जाला। गीत के विधानओ के ईहे मूल हऽ। एही से गीत होखो भा नवगीत होखो भा कवनो जनगीते काँहें ना होखो, भावानुभूतिए के कइ गो सरूप हवन सऽ। गीत कवनो तरीका के काँहें नत होखो, एकर हर सरूप के वैधानिके ले ना, प्रस्तुतीकरन के हिसाबो से इन्हनीं के आपन–आपन मान्य आग्रह भइल करेला। आ रचनाकारन के ओह आग्रह के संतुष्ट कइल सभले जरूरी काम होला। ई होखहीं के चाहीं। अगर रचनाकर से ईहे नइखे हो पावत त रचनाकार छद्म अभ्यासी बा। ओकर रचनाधर्म सही गति में नइखे आ ना सही तरीके निभ रहल बा।

एक समय रहे, जब गीत लोक–प्रयास में समहुते बनत जात रहन सऽ। आ लोक–समाज ओकरा सुने आ गोहरावल करे। एह से गीत श्रव्य होत रहलन सऽ। श्रव्य भइला के माने गीतन के पढ़ला से ढेर ओकर गवला आ सुनला से वास्ता भइल करे। एही कारन, गीतन में बेर–बेर शाब्दिक चमत्कार के जरूरत बनल आ ओह खातिर गीतन में अलंकार आदि के प्रभाव हावी होखे लागल। नाट्यशास्त्र के नव–रस के माध्यम से पद्य–प्रस्तुती के श्रेणीबद्ध करे के गझिन आ सार्थक प्रयास कइल गइल, ताकि, कवनो शाब्दिक संप्रेषण मानवीय दशा के जरूरत के मोताबिक इकाईगत कइल जा सके। इकाईगत एह से, जे बेवहार के अधार प संप्रेषण के सरूप नियत आ निश्चित हो सके। इकाईगत भइला से कवनो संप्रेषण, भा गीत, मानवीय संवेदना के गहिरे प्रभावित करे में सक्षम भइल करेला। ईहे भिन्न–भिन्न अवसरन प भिन्न–भिन्न गीतन के बने के अधार बनल आ ओही अनुसार गीतन के मानक लय तै भइला के कारन बनल।

एह बात से नजर ना फेरल जा सके जे लोक–समाज के गीत आ साहित्यिक गीतन में विधान के आवृति निर्णायक भूमिका अदा करेले। लोक–समाज के गीत ओह समाज के परंपरा आ लोकजन के कंठ से अकार पावत गठन में आवत जाला जबकि साहित्यिक गीत रचनाकार के निजी उत्जोग होला, जवना के लेके गीतकार के अपना कथ्य, तथ्य, बनावट, बुनावट, शिल्प आदि में अनुभव आ अभ्यास से लगातार परिष्कार करे के परेला। लोक–समाज के गीत आ साहित्यिक गीत के बीच कइल गइल कवनो घालमेल कवनो भासा के रचना के साहित्यिकता के कसौटी प कमजोर बनावेले। एह बात के तरफ समाज के बैचारिक सुधी वर्ग के लगातार सचेत रहे के चाहीं। एक बात एइजा एकदम साफ बा, जे साहित्यिक गीत के गेयता ओकरा में प्रयुक्त भइल शब्द के विन्यास में सुगढ़ मात्रिकता के कारन संभव हो पावेला। एगो गीतकार खातिर ई जानल निकहा जरूरी होखे के चाहीं, जे गेयता भाव–आवृति के हिसाब से शब्दन प जबरी स्वराघात से संभव ना भइल करे। शब्दन के सुगढ़ प्रतिस्थापना आ मात्रिकता के कारने गीत गेय, सरस आ कर्णप्रिय हो पावेलन सऽ। गीत चाहें जवना तरीका के होखो, एह बात के गिरह पारि के बूझि लीहल निकहा जरूरी होखे के चाहीं। ईहे कवनो भासा के साहित्य के कसौटी प गीत के सफल भइला के अधारभूत नियम हऽ। ना त कतनो लोकप्रियता होखो, ऊ एक ओर, साहित्यिकता के कसौटी प सुधी–समाज काल–चरन के पाट प ओइसना गीतन के कवनो तरजीह ना देसु। गेयता आ सांगीतिक बिन्दु गीतन खातिर अनिवार्य आ अपरिहार्य अस होला। ईहे ना, गीत–रचना में बिचार के अंतःसंगीत आ ओह गीत के कहन (कथ्य) खातिर प्रयुक्त शब्दन के बीच संतुलित आ बेवहारिक संबंध होखे के चाहीं। एही से छंदानुशासन के बहरी जाइ के साहित्यिक गीत के कल्पना ना कइल जा सके। गेयता आ सांगीतिक लयता कवनो रचना के गीत भइला के कसौटी भइल करेला। बाकिर ईहो ओतने साँच बा, जे गीत छंदानुशासन के सीमा में बन्हाइल आपन बैचारिक उन्मुक्तता के संप्रेषण से कवनो तरी के समझौता ना करे। कवनो गीत अपना लय–यात्रा में छंद आ एकर अनुशासन के पतवार अस उपयोग करेला। माने, कहन के साधे में मन–भाव के बहाव के बिपरीत होते छंद के पतवार दिशा बनावे खातिर हाजिर रही, ना त ओह गीत के प्रयुक्त शब्द मन–भाव के बहिरावत बे कवनो रोक–टोक, बे पतवार के उपयोग के एक सुरिये बहत जाला।

चूँकि, गीतकार आपन गीत–रचना के माध्यम से आपन निजी भाव समाज के सोझा करेला, एह से ओकरा अनुभव में खलसा पौढ़ भाव भर ले ना, बलुक ओकर अनुभव में समाजिक व्यापकता के अनुसार ओइसना साँचा में ढले के तागद चाहीं। एही से कवनो सार्थक गीत अपना कहन के बिम्ब से चेतना के आ समाज आ ओकर मनई के बीच एगो बड़ महीन बाकिर बहुत जरूरी संबंध बुनत सोझा आवेला। ई संबंध जतने साफ आ मजबूती से बहरियाई, गीत ओतने दूर ले प्रभाव छोड़त कालजयी होखी। गीतकार खातिर एगो आउरी महत्वपूर्ण बिन्दू होला, ऊ हऽ ओकर शब्द आ भासा के

अस्तर। गीत के कहन खातिर अगर भासा आ ओकर शब्द एकदम से उपयुक्त होखी त ओकरा ओकर समाज बे कवनो लाग–लपेट के अपना लेला। चूँकी परंपरा से कढ़ल कवनो समाज के ताना–बाना एकरङा ना होके बहुरङा होला, लोगन के पारंपरिक पृष्ठभूमि अगर एक होखबो करे, त शैक्षणिक, बैचारिक, आर्थिक आ भावात्मक पृष्ठभूमी कबहूँ एक ना हो सके। ई अइसन अवयव हवन सऽ, जवन कवनो गीत के कालजयता निर्धारित करे में महत्वपूर्ण भूमिका बनावेलन सऽ। व्याकरण आ विधान के पाटन के बीच बहत गीत–नदी पढ़ल–बेपढ़ल लोगन के बीच स्वच्छंद आ प्राकृतिक रूप से बहत चलेले। गीत लोक खातिर होला। श्रमसंस्कार लोक के गठन के मूल तत्व हऽ। एह से गीतकार जब–जब पाण्डित्य–भासा के सङी बनल अतार्किक रूप में बहुत दूर निकल गइल करेला, गीत चट–से आपन बाँहि छोड़ावत लोकभासा के संङहतिया हो जाला। गीत–प्रक्रिया के ईहे प्राकृतिक दसा हऽ। एही से गीत हर काल, हर समै में लोक आ लोक–भासा के अनुगामी रहल बा। चाहें ऊ साहित्यिक गीत काहें ना होखे।

अब ई जानल निकहा जरूरी बा, जे ई लोक हऽ का ? लोक भलहीं भौतिक रूप से लउकत बुझाला, बाकिर ई वास्तव में मानवीय बिकास के सुदूर अतीत से लेके आजु तक ले चलल आवत यात्रा के समहुत अनुभूति के समेकित सरूप हऽ। एह से लोक भौतिक ना होके एगो भाव–शब्द ढेर हऽ, जेकरा नमी से समाज के वर्तमान प सांस्कृतिक–समृद्धि तर होत रहेला। ई लोकवे हऽ, जवन समाज के गीत–यात्रा के दिशा देला। ई लोक हऽ, जवन अभिव्यक्ति–बेवहार में गीतन के अध ाारभूत टेक भइल करेला।

भारतीय समाज मूल रूप से खेती आ परिश्रम प आश्रित समाज हऽ। एह समाज के हर तरहा के भाव अलगा–अलगा गीतन से मुखर होत रहल बा। भाव के अनुसार लयबद्ध शब्दवन के गावल जाला। चूँकि लोक–समाज के मूल बेवहार नियत ना होखे, बलुक समै के अनुसार बदलत रहेला एही से गीतन के कहन के बिम्ब आ प्रतीक भा उपमान आ एकर हेतुओ अपना–अपना समै–काल के अनुसार बदलत रहल बा। गीतन के इतिहास में कौ हाली अइसन समै आइल बा जब गीतन के तथ्य ओतना प्रभावी नइखे रहि गइल। गीतन से समाज के लेके कवनो जिम्मेदारी भा ओकर निहित हेतु गाएब लउकल बुझाइल बा। ओह घरे के गीतन में खलसा शब्द आ विधान के अनुसार लय भा गेयता के कसरत जोर पकड़त बुझाई। ऊ ई समै रहे जब गीतन में बिषयवस्तु आ संवेदना के सतह प मांसल, रूमानीयत, बेभाव के भावुकता के बोलबाला भइल करे। अइसना समै में गीत आपन हेतु भुला के आमजन के सरोकार से फरिका चलत बुझाए लागल रहले सऽ। ई बिसेस कके साहित्यिक गीत के दशा रहे। एह से साहित्यिक गीतन से आमजन के रुची आ लगाव लगभग खतम होत गइल। सही कहल त ई होखी जे आमजन के गीत में आ साहित्य–संसार के रचना के लेके कवनो उत्साहे ना रहि गइल रहे। एह सभ से समाज में भारी अहित भइल। समरस समाज लगातार कर्कश होत गइल। भा ईहो कहल जा सकेला जे समाज कर्कश होत गइल एह से गीतकारओ आपन प्रस्तुती के पहुँच आ ओकर दायरा छोट करत गइल। अभिव्यक्ति के व्याकरण बदलत गइल। गीतन के नाँव प बकवास परोसाए लागल। एक समै के बाद लोक आ आमजन ओह तरहा के गीतन आ रचना के त्याग दीहलस। अइसना में आगा चल के साहित्य के एगो बड़ धड़ा ओइसना गीतन से उबिया गइल। साहित्य–सेवी गीतन के निरर्थक आ गैर जरूरी कहल सुरू क दिहले। गीतन के मरणासन्न कहे जाए लागल। साहित्य के एगो बड़ आ प्रभावी वर्ग त एक तरी आंदोलन चला के ई घोषणा क दिहलस जे 'गीत मू चुकल बा'। पद्य–साहित्य से गीतन के नाँव प जवन लिखाव, ओकर बहिष्कार होखे लागल।

एह में कवनो शक–सुबहा नइखे, जे उत्तर भारत के कवनो भासा होखो, हिंदी साहित्य के गठन आ एकर बिकास के प्रभाव गहिरे परल बा। ई लाजिमी बा। हिंदी साहित्य के छायावाद के उत्तर–चरण में गीत जन के आशा–उम्मेद सङे तालमेल बना राखे में सक्षम ना रहि पवले सऽ। एह बात के प्रभाव भोजपुरी समाज के साहित्य आ गीतन प ओतना त ना परल बाकिर रचना प्रकाशन के आवृती के कमतर रहला से ई बात ढेर बहिरी ना आ सकल। चूँकी हिंदी के बिकास में भोजपुरिया क्षेत्र के विद्वान–साहित्यकारन के अकथ भूमिका रहल बा। एहसे हिंदी साहित्य के आँगन में जवन–जवन चलन आ बदलाव आवत गइल ओकर छाया भोजपुरी रचनाकर्म आ साहित्यओ प परल। अइसन ऊ चलन आ बदलाव भोजपुरी साहित्य में खलसा बतकही आ चर्चा–परिचर्चा भर में सीमित ना रहल, बलुक ऊ रचनात्मक रूप से लउके लागल। भोजपुरियों में नवगीत आ जनगीत मुखर होके बहिराइल। आ का खूब बहिराइल ! बिसेस क के जनगीतन के जवन रचना भोजपुरी आ अवधी साहित्य से बहिराइल बाड़ी सऽ, ओकर जोर हिंदियो में ओह अस्तर के ना मिले।

भोजपुरी गीतन के कलेवर में आइल ई बदलाव सोझ हिंदी साहित्य से आइल। बिम्ब भा प्रतीक भा उपमान में निकहा नयापन लउकल सुरू भइल। पुरान तथ्य नया कलेवर में नया कथ्य के जामा पहिरले सोझा आवे लगले सऽ। लोक–समाज के वर्तमान सरूप प गीत आ गीतकार के नजर परल सुरु भइल। जवन गीत एक लमहर समै से पुरान बिम्ब आ बिसै प अँटक गइल रहलन सऽ, उन्हनीं के टटका कथ्य आ बिसै भेंटाए लागल। एह बात के अतने से बूझल जाव, जे आज के समाज में पाछिल दू–तीन पीढ़ी से कतना लोग जाँत भा ओखर देखले बा ? अगर देखलहूँ बा त कतना घर अइसन रहि गइल बाड़न सऽ, जहवाँ जाँत भा ओखर आदी के रोजीना छोड़ीं, कइसहूँ, कबहूँ उपयोग हो रहल बा ? फेर कवनो रचनाकार कवनो लाचार जिनिगी के जाँत के दू पाटन के बीच दरात कहि रहल बा, त अइसना बिम्ब से आजु के कतना पाठक आपन जुड़ाव महसूस करिहें ? एह से, आजु के पाठक गीतन में कुछ नया खोज रहल बा त का बेजाँइ बा ? अइसना कथ्य से पाछा छोड़ावे के सोच बनल जऊरी बुझा रहल बा। एह उत्जोग में रचनाकर्म के रङ बदलल सुरू भइल बा आ एह बदलाव से जवन कुछ बहिराइल बा ऊ 'नवगीत' के नाँव से प्रचलित भइल बा। नवगीत छंद, बेवहार, बिम्ब, कथ्य, माने जे हर तरीका से पारंपरिक गीतन से फरिका लउक रहल बाड़न सऽ। चिंतन के अस्तर प अइसन गीत ढेर यथार्थपरक, जन–जमीन के मर्म भाव से जूड़ल बुझा रहल बाड़न सऽ।

एक बात जवन बहुत महत्वपूर्ण बा, ऊ ई हऽ, जे भारतीय, बिसेस कके भोजपुरिया समाज, के मूल भाव उत्सवधर्मी हऽ। एह बात के लेके लोक बेवहार के मर्म प बिचार कइल जाव, त निकहे बूझल जा सकेला। भोजपुरिया गँवई समाज के एगो बहुत बड़ वर्ग एक अस्तर प अछछ गरीबी के जियत–भोगत समाज रहल बा। बाकिर सबले ढेर उत्सव आ तरह–तरह के परब–तेवहार गाँव–जवार के एही वर्ग में मनावल जाला। दुख के आपन महत्ता बा। ओकरा लोकगीत होखो भा सहित्यिक गीत अभिव्यक्तियो माफिक मिलत रहल बा। दुख, पीड़ा, संताप आ बिरह के जतना सुन्दर अभिव्यक्ती भोजपुरी गीतन में मिल जाला ऊ अतुलनीय बा। गीतन के माध्यम से दुख के ललितबोध से गावल गइल बा। बाकिर ईहो साँच बा जे हर रितु के आपन–आपन परब तेवहार आ उत्सव होला। ई आउर कुछऊ ना, एक तरहा से दुख के लेके जन–मानस के सक्षम प्रतिकार हऽ। दुख के गावल एक बात हऽ आ जिनिगी के जियल दोसर बात। ईहे मानसिक तागद आजु ले भोजपुरी समाज के अंतर्धारा नियत करत रहल बा। एह से हिंदी साहित्य के माध्यम से एक वर्ग द्वारा आयातित 'सामूहिक नैराश्य' के भोजपुरिया समाज ढेर भाव ना दे सकल। भलहीं, यथार्थ के नाँव प कतनो साँचबयानी के ओट काँहें ना दिहल गइल। एही से नवगीत के माध्यम से अभिव्यक्ती के कोरसिस करत रचनाकार लोगन के ई बूझे के परी जे लोक–मानस आ जन के बूझल पहिल कर्तव्य होखो। ना कि लोक–मानस आ जन के जबरी साधे कोरसिस करो लोग। लोक–मानस आ जन के साधल एगो लगातार चलत लमहर प्रक्रिया हऽ, जवन कौ गो कारक प निर्भर करेला। सहित्यिक गीत के एही प्रक्रिया के पक्षधर होखे के चाहीं। तबहीं गीत से लोक–मानस आ जन जुड़ी, भलहीं गीतन के कुछऊ नाँव दियाव।

अबहीं अगर नवगीत प चर्चा कइल जाव त कवनो गीत के नवगीत होखे में कथ्य के कईएक पहलू प बिचार जऊरी होखी। जेमें, गीतन के भाव–सरूप के, प्रस्तुती में नयापन के, कहन में व्यापकता के, यथार्थ के गोहरावे में शाब्दिक आ मानसिक तागद के, शैल्पिक दृष्टीकोण के, कहन में जरूरी भौतिक आ भावदशा में बदलाव के, प्रयुक्त शब्दन के अर्थ आ इन्हनीं के गहराई के, समाजिक आ बैचारिक प्रभाव के धेयान राखल निकहा जरूरी होखे के होखी। तवना प नवगीतओ गीते हवन सऽ। एह से इन्हनीं के सांगीतिक पक्ष से रचनाकार द्वारा भइल कवनो समझौता प्रस्तुती के निकहे कमजोर क दीही। एह से सउँसे संवेदना के सङे गीतन के बुनावट प बिसेस धेयान राखल जऊरी बा। भारत में समाज कतहूँ के होखो, पाछिल एक दशक में परिस्थिती एकदम से बदलल बा। सनातनी सुख–दुख के सङे–सङे मानवीय भाव के मूल भलहीं ऊहे होखो जवन सोभाव के मूल हऽ, बाकिर अभिव्यक्ती के बेवहार जरूर बदल रहल बा। बलुक बदल चुकल बा। अगर अइसन बा त गीतन के काया में बदलाव काँहें ना होखी ? जरूरत बा गीतन के कलेवर आ प्रस्तुती में नयापन आओ, ऊ लउको आ गीतन में आजु के समाज के दर्शन होखो। ●●

❑ एम-2/ए-17, ए०डी०ए० कॉलोनी,
नैनी, प्रयागराज–221008

भोजपुरी उपन्यास 'देश खातिर'

डॉ. अर्जुन तिवारी

प्रेम अंकुर हृदय में जब उगबै करी,
भाव मन में सदा ई उठबै करी।
खोट मन में ना रही कवनो मितवा
मन के बेधत बात सब फूटबै करी।।

'वन्देमातरम्' के नारा के साथ 'देश खातिर' कइसे लिखा गइल एकरे बदे उपन्यासकार के कथन पर ध्यान देवे के चाही– "12 जुलाई 2017 के मन में विचार आयल 'विल्पव' के बाद कुछ लिखे कऽ। एक शब्द जेहन में आयल 'देश खातिर' बस कथावस्तु मिल गइल। अंधकूप काल कोठरी में एक दीया मिल गइल। चित्र आँखी के सामने आवे लगल। सरस्वती मइया विचारन कऽ भण्डार खोल दिहलिन। चुन–बुन के कगजे पर लगलीं उतारे। एक पूरा उपन्यास तइयार हो गयल 'देश खातिर'।" महावीर विक्रम–बजरंगी, शिव आ माँ शारदा के अनुकम्पा से लिखायल उपन्यास बाबा तुलसी के सद्‌विचार के सत्यापित करऽता।

'जेहि पर कृपा करहिं जन जानी,
तेहि उर अजिर नचावहिं बानी'

सोगहग उपन्यास पढ़ले पर हमरा बुझाइल कि ए घोर कलिकाल में पाण्डेय जी सतजुगी बाड़न। छल प्रपंच से दूर रहे वाला के साहित्य सेवा के रोग दबोचले बा।

"पाल ले इक रोग नादाँ जिन्दगी के बास्ते,
सिर्फ सेहत के भरोसे जिन्दगी चलती नही।"

मनुष्य के जीवन में जइसे शरीर के जिन्दा रखे के होला ओइसहीं मन आ आत्मा के जिन्दा रखे के होला। ओके भोजन–पानी देवे के पड़ेला। जइसन ओकर आवश्यकता हो। कोई क मन कुछो में रमेला कोई क कुछो में। हमार मन एही में रमेला। ... एक ऊँची भावना लेके ओही के विषय में आत्मा के डुबोये रहे शुभ विचार में, द्वेष, घृणा, ईर्ष्या से दूर रहें। निरोग मन से ईश्वर तत्व के प्रकाशित रखे, अशुभ चिन्तन मानसिक दुर्बलता क प्रतीक हौ। एसे मन कऽ कार्य करे वाली शक्ति कमजोर पड़ जाले।.... आधुनिक भौतिकतावादी, भोगवादी, बाजारवादी, समय में हमरे देश कऽ लोग राष्ट्र धर्म भुला जात हयन। जब एकर संतुलन बनल रही, तबै जनतंत्र आ समाजबाद क पुष्प खिल पाई। उपन्यास में पूरे कश्मीर के अपनावे कऽ परिकल्पना कयल हौ। गुण्डा गर्दी, भ्रष्टाचार, जातिवाद, बंशवाद, क्षेत्रवाद, आतंकवाद के नेस्तनाबूद करे कऽ परिकल्पना हौ, सब कर मालिक एक क बात हौ।

ऊपर क हर एक शब्द विन्ध्यारण में व्यापल संस्कृति–सभ्यता के परिचायक बा जवने कऽ पुष्टि संत कबीरदास कइले हउवन–

जैसा अन-जल खाइये, वैसा ही मन होय।
जैसा पानी पीजिये, तैसी बानी होय।।

साजिश के शिकार प्रो0 अवनीश के बहुज्ञता, जेल जीवन में स्वाध्याय, वैचारिक परिवर्तन तथा सात्विकता, साधुता का संचार हर पाठक हेतु अनुकरणीय बा। अनुचर दास क संगी अनुछिट दास झारखंडी बाबा जन जागरण खातिर देश भ्रमण पर निकललें। उत्तर भारत में जन जागरण आ स्वातंत्र्य आन्दोलन के प्रभावी बनाके ई चारो महापुरुषन क एके नारा रहे।

उपन्यास में कथा त हौ, ओसे बढ़ के वर्णमय चित्र हौ। अंधकार से प्रकाश असत् से सत्, जड़ से चेतन आ बाह्य जगत से अन्तर्जगत के आलोकित करे वाली विधा ह। इतिहास से बढ़ के उपन्यास सत्य के अधिक नजदीक होला। ई समाज में सुख–शान्ति रचना के मूल स्रोत हो अपना चरितार्थ करे में 'देश–खातिर' के हर पन्ना अनुकरणीय बा। उपन्यासकार पाण्डेय जी लिखले बानीं– "ई उपन्यास पियाज के तरह ऊपर से देखे में खुरदुरा लगी। चाहे कुछ लोगन के जइसे ओकरे गन्ध से नफरत होला, जब ओकरे औषधीय गुण के पता चली तब ओन ओकर मुरीद हो जालन। वइसहीं पियाज के तरह जइसे–जइसे एके उघारत जइहन तइसे तइसे चिकना आ प्यारा दिखाई देई। एकरे अन्दर के भाव कऽ, शब्दन कऽ प्रकाश बाहर निकल के काली निशा के उजाले में बदल देही।"

'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' के मंत्र फूके वाला 'देश खातिर' में पाण्डेय जी स्वतंत्रता संग्राम, हिन्दू मुसलिम संघर्ष, ऊँच–नीच, वर्ग–भेद, सर्व धर्म समभाव, आतंकवाद, राष्ट्र ऐक्य संबंधी मुद्दा पर सब देश प्रेमी लोग के ध्यान धरवले बाड़े। नई पीढ़ी भारत के गौरव से परिचित होय, देश प्रेम कऽ भावना जगे, एही बदे पाण्डेय जी राष्ट्रभक्तिपरक पंक्तियन से एह उपन्यास के सजवले बानी–

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।

साहित्य जर बोए बदे ना हऽ। देश तोड़े बदे, गुमराह करे वाला ग्रंथ जला देवे के चाहीं। बिचार स्वातंत्र्य के नाम पर, कुत्सित भाव के प्रकाशन दिमाग के दिवलियापन ह। एह सब पर कलम चलाइ के इतिहास रच देले बाड़न जेमे सद्भाव, सत्प्रेरणा, सत्कर्म के संगम बा। गीता, महाभारत, रामचरितमानस के उद्ध रण से आपन बात पुष्ट करिके लेखक नइकी पीढ़ी के बतावता कि 'पुराने चाउर पंथ पड़ेला आ ओल्ड इज गोल्ड बा। बार–बार ओहि के घोरवला से बुद्धि निर्मल होई, नीमन भाव जागी आ कालजयी कृति के रचना हो सकेला। ब्रह्मा, विष्णु, महेश के तरह सिरजन, पोषण आ समाधान दिखाके उपन्यासकार "सर्वे भद्राणि पश्यन्तु" के उद्घोष कइले बाड़े जइसे 'सब जन हिताय सबजन सुखाय' के भाव समाज में पसरे लगे, सब सुख शान्ति से रहें।' पुरान सद्ग्रंथन के निचोड़ आ नयी किताबन के समाज सुधार संबंधी सुझाव के अपना के समरसता के मंत्र फूकें में पं. विजय शंकर जी बेजोड़ बानी। 'देश खातिर' जइसन सनमार्ग बतावे वाली पोथी मानस जइसन लोकप्रिय बनी। एमे कवनो शक सुबहा के गुंजाइश ना बा। ••

❑ पूर्व विभागाध्यक्ष,
पत्रकारिता काशी विद्यापीठ, वाराणसी

Anjoria.com
पहिलका भोजपुरी वेबसाइट

अपने गाँव में बिसरल : मध्यकालीन भारत के सम्राट आ चौसा (बक्सर)

श्री भगवान पाण्डेय

सुनले बानी ''भाग्यं फलति सर्वदा, न च विद्या न च पौरुषं। माने भाग्य के आगे पुरुषार्थ गौण हो जाला। एकर परमान मध्यकालीन भारत के इतिहास में मिलत बा जहाँ बिहार राज्य के बक्सर जिला अन्तर्गत चौसा (बक्सर) के एगो साधारण युवक बिना कवनो पुरुसारथ के, बिना लड़ाई झगड़ा के, खाली भाग्य के बल पर भारत अइसन विशाल देश के शहंशाहे ना बनल बल्कि उ अपना नाम के सिक्का चला के इतिहास में आपन जगहा बना लिहलसि। बाकिर जहाँ ओकर जनम भईल ओह गांव के लोगन के भी आज ई पता नइखे की ओकरे गांव के एगो साधारण युवक भारत के इतिहास पुरुष के रूप में आपन नाम दर्ज करा चुकल बा। जे केहू जाने वाला बड़लो बा ओकरा एह गौरव के एहसास नइखे।

चौसा ,बक्सर जिला मुख्यालय से दस किलोमीटर पच्छिम आ सहसराम (रोहतास) से लगभग 80 किलोमीटर पूरब बसल गाँव बा जवन कस्बाई रूप ले रहल बा। चौसा पच्छिम में कर्मनाशा नदी आ उत्तर में पावन गङ्गा नदी के तट पर बसल प्राचीन गांव महर्षि च्यवन आश्रम खातिर भी जानल जाला। चौसा के एगो टोला बारा रहे जवन आज के उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिला में चल गइल बा, ओही बारे में निजाम नाम के एगो लड़िका के जनम भइल रहे। निजाम के बाप मश्क (चमड़ा के थैला जवना में पानी भर के कहीं ले जा सकल जाय) बनावे के काम करत रहलन। ओह समय में मश्क में पानी पहुंचावे वाली जाति के भिश्ती कहल जात रहे। एहीसे युवक के नाम निजाम भिश्ती पड़ल। निजाम भिश्ती बस्ती के लोगन के माल मवेशी के चरावत रहे जेकरा एवज में मजदूरी के रूप में ओकरा के कुछ कौड़ी मिल जात रहे। भिश्ती अपना कन्ध ाा पर बराबर एगो मश्क लेके मवेशी चरावे जात रहे। मवेशी के चरत छोड़ के भिश्ती गङ्गा तीरे जा के अपना मश्क में पानी भर के राखत रहे, ताकि जंगल में जवना राही के पियास लागत रहे ओकरा के उ पानी पियावत रहे। ओह समय में हर जगह पानी खातिर कुँआ भा चापाकल ना रहे। गांव के लोग भा ओह रास्ता से जाए आवे वाला राही बटोही के ई पता पता रहे कि भिश्ती अपना मश्क में पानी भर के लोगन के पियावे खातिर राखेला यदि पियास लागी जाई त भिश्ती मिलबे करीआ पानी पियाई। मवेशी चरावला के बाद सांझ के बेरा में जब अन्हार फैले लागे त भिश्ती मश्क में पानी भर के अपना पासे राखल एगो कांसा के बरतन में कुछ कौड़ी डाल के हिलावत डोलावत रहे ताकि ए आवाज के सुन के लोग समझ जाय कि भिश्ती कवनी ओर बा।भिश्ती के एह मानवीय गुण से ओकर स्वभाव आ सेवा भाव के भी पता चल रहल बा। ई भिश्ती के दिनचर्या रहे।कर्म के फल त मिलबे करेला । भारत के देव् भूमि भी कहल गइल बा। एहि से भारत धर्म परायण देश के रूप में भी जानल जाला। इहे कारण बा कि इतिहास के खंघलला पर जब भिश्ती के एह रूप के पता चलता त ई कहे में संकोच नइखे होत कि पुण्य के फल कबो ना कबो अइसनो मिलेला।

गीता में बा ''कर्मण्येवाधिकारस्ते––''। आस्तिक भारत में एकर केतना प्रमाण बा जवना में भिश्ती के शहंशाह बनल भी ओकर पुण्य कर्म के फल मानल जाई। ना

त मवेशी चरावे वाला एगो युवक (भिश्ती), जवन कुछ कौड़ी के बदले गाँव के लोगन के मवेशी चरावत होखे ऊ एक दिन भारत अइसन विशाल देश के सम्राट बनि सकित? बाकिर बनल!! आ ''भाग्यं फलति सर्वदा न च विद्या न च पुरुषं ''प्रमाणित भइल। कर्म फल पावे खातिर भिश्ती के ना त कहीं जाए के पड़ल, ना त केहू से कुछ याचना करे के पड़ल, ना त केहू से कवनो लड़ाई लड़े के पड़ल। भिश्ती त सपनों में ना सोचले रहे कि ओकरा सम्राट बने के बा। बाकि बढ़िया कर्म के फल बइठले बइठल झोली में टपक जाला। आ भिश्ती के झोली में टपकियो गइल। मलूक दास के कहल –''सबके दाता राम'' साँच हो गइल। भिश्ती खातिर एकर सुयोग कइसे जुटल एकरा के देखल जाय।

–तब भारत मुगल साम्राज्य के अधीन रहे। आ ओकर बादशाह हुमायूं रहलन। एही समय में शाहाबाद के अफगान सरदार फरीद खान जे हसन खां नाम के एगो जागीरदार के लड़िका रहलन आ अपना वीरता आ शासन कौशल के साथे साथे जन हित के कार्य करत–करत आपन लोकप्रियता बढ़ा चुकल रहले। फरीद खां के बहादुरी के बारे में कहल जाला की ऊ

एगो जियते शेर के काटि के दू टुकड़ा करि दिहले, जवना से उनुकर नाम शेर खान पड़ गइल। उनकर बहादुरी अतना लोकप्रिय भइल की उनकरा के लोग शेर खान आ बाद में शेर शाह सूरी के नाम से पहचाने आ जाने लागल। शेर शाह एगो उदार शासक, आ कुशल रणनीतिकार के संगे प्रजा के हितैषी दृढ़ आ बहुत साहसी रहलन। ऊ मुगल के अत्याचार के प्रबल विरोधी बनि के बंगाल के कुछ भाग के अपना अफगान शासन के अधीन कइ के दिल्ली पर आपन शासन कायम करे के तैयारी में जुटल रहले। इतिहास के जानकर के मानल जाय त शेर शाह अपना अभियान के सफल बनावे खातिर अफगानियन के साथे साथे भारत के राजपूतन के मिला के आपन मजबूत सेना संगठित कइले रहलन। हालांकि इनिकर सेना मुगल सेना के

सोझा कुछऊ ना रहे, बाकिर साहस आ रणनीतिक कौशल में ई मुगलन से भारी पड़ल। अपना एही सेना के सहारे शेर शाह अफगानी शासन कायम करे खातिर योजना बनावत रहले। एकरा खातिर मुगल शासक हुमाँयू के हरावल जरूरी रहे। अफगानी मुखबिर हुमायूं के गतिविधि शेर शाह तक पहुँचावत रहलन।

शेर शाह के पता चलल की हुमायूँ बंगाल से दिल्ली जाए खातिर एहि राह से आ रहल बा त ऊ अपना सैनिक के साथे कर्मनाशा के किनारा घात लगा के डेरा डाल दिहलसि। इतिहास के जानकार आ एगो बूढ ग्रामीण के अनुसार हुमायूँ के शेर शाह के ए चाल के जानकारी ना मिल सकल। एह से 1539 में ऊ बंगाल से दिल्ली जाए के क्रम में बिहार के बक्सर जिला के चौसा गाँव में अपना सैनिकन के साथे कुछ दिन खातिर डेरा डालि दिहलसि।इतिहास जाने वाला इहो कहल कि हुमायूं के सेना चौसा में 26 अप्रैल 1539 से 26 जून 1539 तक कुल तीन महीना रहे। एह बीच में कबो कबो सीमा पर अफगान सेना से मुठभेड़ होत रहे। इतिहास के ऊ जानकार बतावत रहले कि हुमायूं के भी शेर शाह से भय हो गइल रहे जवना कारण से ऊ शेर शाह से संधि क के उनका के बिहार आ बंगाल के शासक कबूल क लिहलसि। बाकिर शेरशाह अतने से संतुष्ट ना भइले। ऊ त मुगल सत्ता के हटा के भारत पर आपन झंडा गाड़े के तैयारी में रहलन। एहि से ''प्रेम आ युद्ध'' में सब कुछ

जायज होला के नीति पर चल के 26 जून 1539 के रात में मुगल सेना पर अचानक धावा बोले के आदेश दे दिहलें। बतावल गइल कि मौसम त गर्मी के रहे बाकिर घनघोर बारिश के चलते चारुओर पानिए पानी हो गइल । इहाँ तक कि मुगल सैनिक के शिविरो में पानी लाग गइल जवना से सैनिक में खलबली मचि गइल। मुगल सैनिक त एकर के प्राकृतिक आक्रमण मान लिहले अफगान के तरफ बेपरवाह रहलन। जबकि अफगान सैनिक त सावधान आ चौकस रहले बाकिर मौसम आ परिस्थिति मुगल सेना के प्रतिकूल रहे जवना कारण से मुट्ठी भर अफगान सैनिक आठ हजार मुगल सैनिक के मार गिरवलन। एह अप्रत्याशित आक्रमण से हुमायूं घबरा गइल आ जान बचावे खातिर ऊ अपना घोड़ा पर चढ़ि के भागल। रात में कुछ सुझल ना ओकर घोड़ा गंगा नदी में उतरि गइल। अब हुमायूँ के डूबे के नौबति आ गइल। गंगा में छपाक के आवाज निजाम भिश्ती सुनलसि त धावल जाके गंगा जी में कुद के हुमायूँ के घोड़ा सहित ओह पार निकललसि। एह तरी हुमायूं के जान निजाम भिश्ती बचा दिहलसि । बाद में ऊ बच बचा के ऊ जान लेके दिल्ली ओर भागल।

जानकार बतावेलन कि शेरशाह आ हुमायूँ के बीच जवन युद्ध 26 जून 1539 में शुरू भइल ऊ 30 जून तक चलल। चूंकि मुगल सेना के अंदाज ना रहे कि अफगानी शेरशाह एह तरह से हमला करी। ना त मुगल सेना शेरशाह के सेना पर बहुत भारी रहे। कुछ पुरान लोग बतावल कि जब जान बचावे खातिर हुमायूँ अपना घोड़ा पर सवार होके उफनाइल गङ्गा जी में कूद गइल। ओह समय पर निजाम भिशती गङ्गा जी के तीर पर आपन मश्क लेके पानी भरे गइल रहे। भिश्ती के नजर डूबत हुमायूँ पर पड़ल त उ बचावे खातिर अपने गङ्गा जी में कूद गइल । कइसे कइसे हुमायूं के निकालि के गङ्गा जी पार करा दिहलसि। आ हुमायूँ जान बचवलस। बाद में जब हुमायूँ दिल्ली के गद्दी पर बइठल त भिश्ती के एहसान ओकरा याद आइल। आ अपना सेनानायकन से भिश्ती के खोजवा के दिल्ली बोलवलस। शाही इमाम के बोलवा के विधिवत शाही रश्म के अनुसार एक दिन खातिर निजाम भिश्ती के दिल्ली के मुगल तख्त पर शासक बनावे खातिर ताजपोशी करवलसि। एह तरे निजाम भिश्ती एक दिन खातिर ही सही मुगल बादशाह बनि के दिल्ली के गद्दी पर बइठलन। आ एके दिन के बादशाहत में ऊ चमड़ा के सिक्का चलवा दिहलसि जवना पर प्रतीक चिन्ह के रूप में मश्क अंकित करा दिहलसि। कहल त ई जाला की हुमायूँ अपना जान बचवले खातिर भिश्ती के एक दिन खातिर बादशाहत दिहलसि। बाकिर इतिहास जाने वाला बतावत बाड़न की बादशाहत त एक दिन खातिर मिलल बाकिर भिश्ती भाग्य के अतना चाँड़ रहे कि जब शाही इमाम भिश्ती के ताजपोशी करा दिलहलन ओहि दिने सांझ के समय जब शाही इमाम नमाज पढ़े खातिर मस्जिद जात रहलन त सीढ़ी से उतरत समय उनुकर पैर फिसल गइल, ऊ गिर गइले जवना से उनुकर मौत हो गइल।

अब नया समस्या ई आ गइल की बिना शाही इमाम के भिश्ती के सिर से मुगलिया ताज उतारि के हुमायूँ के ताजपोशी के रस्म कइसे होई। एह से अब नया शाही इमाम के तलाश शुरू भइल। चौसा गाँव के एगो प्रबुद्ध अधिवक्ता वंश नारायण यादव जवन सुनले बात बतावत रहनी की शाही इमाम के खोजे में कुछ समय लाग गइल एह से निजाम भिश्ती दिल्ली के गद्दी पर लगभग सात दिन तक काबिज रहलन। इहो कहल जाता कि भिश्ती के सम्राट बनावे के पहिलहीं हुमायूँ एगो शाही फरमान जारी करि के नया सम्राट (यानि निजाम भिश्ती) के अधिकार सीमित क दिहले। जवना के तहत टकसाल आ सेना पर भिश्ती के नियंत्रण ना रही। संगे संगे नया सम्राट(भिश्ती) के कवनो नया कानून बनावे के अधिकार ना रही।

बाकिर निजाम भिश्ती चमड़ा के सिक्का त अपना बादशाहत में चलवा दिहलसि। जानकार लोग बतावत रहे कि चमड़ा के सिक्का के शाही मोहर के दर्जा ना दियाइल काहें कि भिश्ती के गद्दी से हटते चमड़ा के सिक्का बन्द हो गइल। कहल जाला कि भिश्ती दिल्ली के गद्दी छोड़ला के बाद लखनऊ आ गइल जहाँ बाद में ओकर मौत हो गइल।लखनऊ में भिश्ती के यादगार में मजार बनल बा। बाकिर ओकरा जन्म स्थान बारा (चौसा) भा चौसा में कवनों चिन्ह नइखे। इतिहास में का बा। का नइखे। का साँच भा का झूठ या किंवदन्ती बा एह आलेख के विषय नइखे। एह से लिखेवाला कवनो तथ्य के दावा नइखे करत बल्कि लिखे वाला के एकही मकसद बा कि ए विषय पर इतिहास जानेवाला भा जिज्ञासु आ शोधार्थी एकर पड़ताल करे आ विश्व प्रसिद्ध अइसन ऐतिहासिक तीर्थ स्थल के महत्व से सरकारो के अवगत करावे ताकि भोजपुरी गढ़ आ धान के कटोरा के रूप में विख्यात शाहाबाद के ई स्थल बड़हन पर्यटक स्थल के दर्जा मिलो जवना से एकर आर्थिक दशा सुधर सको। आ भारत में एकर गौरव गान होखो।

एकरा के का कहल जाई कि जवन गाँव विश्व इतिहास में एगो नया मोड़ ले आइल,जहां पर युद्ध

भइला से जवना गाँव के भिश्ती मुगल शासक (भलहीं एक दिन खातिर) बनल, आ चमड़ा के सिक्का चला के अपना नेकनीयत बौद्धिकता के स्वीकार करे खातिर इतिहास के विवश कइलस ऊ अपने गाँव में भुला दिहल गइल। जहवाँ भोजपुर के शान शेर शाह हुमायूं के हरा के दिल्ली के गद्दी पर काबिज भईल एहू गौरव के समझे वाली नया पीढ़ी नइखे ओहिजा के विकास कइसे होइ? नया पीढ़ी के युवक अपना गांव के गौरव आ महत्व से अनभिज्ञ त बदले बा सरकारो उदासीन बिया। चौसा में कवनो अइसन स्मारक नइखे जवना के आकर्षण से पर्यटक एने देखसु। यदि कुछ बाँचल बा त चौसा गाँव के पच्छिम में एगो टीला जवना के गढ़ कहल जाला। एकरा विषय में अधिवक्ता वंश नारायण सिंह 1909 के सर्वे खतियान देखवले जवना में प्लाट नम्बर 182 एरिया 1 एकड़ 23 डिसमिल मौजा नरबत पुर ऐतिहासिक जगह के नाम पर बा जबकि 1969 के सर्वे में ए जगह के रामलीला मैदान के नाम देखावल बा। टीला का दु तरफ से बाउंड्री दियाईल बा। टीला पर एगो सिला पट्ट लागल बा जवना मे उपरोक्त तथ्य के अत्यंत सक्षिप्त उल्लेख बा। शीला पट्ट पर अंकित बा कि ए युद्ध में हुमायूं के 8000 सैनिक मरा गइलन। एहि गाँव के एगो पुरनिया बाघा सिंह बतवले कि एह गांव नाम नरबध पुर रहे। एकरा के पुष्ट करे खातिर बतवले कि एहिजा हुमायूं के 8000 सैनिक मरा गइले । एहिजा ढेर नर के बध भइल रहे एहि से एकर नाम नरबध पुर पड़ल जवन आज नरबत पुर के नाम से जानल जात बा। एहि के नाम पर मौजा के नाम पड़ल।

ई तर्क के लिहाज से सटीक बुझात बा। बाकिर ऐतिहासिक स्थान के नाम पर संरक्षित रकबा बहुते कम बा आ जवन बडलो बा ओकरा रख रखाव पर ग्रामीण लोगन के ध्यान नइखे। पता चलल एहिजा 2014—15 में पुरातत्व विभाग के देखरेख में खुदाई करावल गइल रहे जवना में गुप्तकाल के मूर्ति, पथल, कुछ बर्तन मिलल रहे जवन पटना संग्रहालय में राखल गइल बा। संग्रहालय में राखल मूर्तियन के बारे में जानकार लोगन के अलग अलग मत बा।

बाकिर कुछ पढ़ल लिखल लोगन के छोड़ दिहल जाय त इ चौसा आ बारा के अधिकांश लोग भिश्ती के नाम से भी परिचित नइखन। जबकि चौसा खातिर भिश्ती एगो इतिहास पुरुष के नाम बा। आश्चर्य त एहू से भईल कि भारत में श्रुति के परम्परा बहुत प्राचीन बा आ उ धर्म आ कर्म कांड के रूप में भी अपनावल जाला। श्रुति उहे ह जवन सुनल गइल बा बाकिर लिपिबद्ध ना हो सकल ।गाँव के इतिहास भी अइसहीं बनेला।बाकिर चौसा में कुछ पुरान आ पढ़ल लिखल के छोड़ दिहल जाय त नया पीढी एकरा से अनजान दिखलाई पड़ल। एकरा अलावे पर्यटन भवन कैम्पस में गोंइठा, जलावन के ढेर लउकल। ई स्थिति चिंताजनक मानल जाई।गांव के जानकार लोगन के भी चाहीं की नया पीढ़ी के बिठा के अपना इतिहास पर संवाद करे ।

चौसा के धार्मिक महत्व

चौसा इतिहास खातिर जतना महत्वपूर्ण बा धर्मो के क्षेत्र में महर्षि च्यवन के कारण ओतने महत्वपूर्ण बा। चौसा महर्षि च्यवन आश्रम के रूप में स्थानीय क्षेत्र में विख्यात बा। महर्षि च्यवन आश्रम चौसा गाँव से पूरब गंगा पम्प कैनाल से सटल पूरब आ बक्सर सासाराम सड़क से उत्तर किनारा सड़क पर स्थित बा।पतित पावनी गंगा के सुरम्य तट पर स्थित महर्षि च्यवन आश्रम पर पहुंचते थकान मिट गईल। बहुत शांति मिलल। बरगद—पीपर—पाकड़ के घना छाँह के नीचे एगो बड़हन ऊँच चबूतरा पर तीन—चार गो ग्रामीण बइठल बतकही करत रहलन। हमरा संगे चौसा के अधिवक्त श्री बंश नारायण यादव आ पत्रकार अधिवक्ता श्री राकेश कुमार सिंह रहलन। हमनी के आश्रम के घूम के देखत अपने में बतियावत रहनी जा। महर्षि च्यवन पर बात चलत रहे। तब तक बइठल ग्रामीण में से एक आदमी पूछि दिहलसि। केने आइल बानी जा। जब हम कहनी की हम च्यवन आश्रम देखे आ जाने खातिर आइल बानी। तब ओहिजा बइठल एगो दोसर आदमी एगो तीसर आदमी के देखा के बतावल की एहिजा के पुजारी जी इहाँ के हईं। हमनी के उहाँ के लगे चबूतरा पर बइठ गइनी जा। पुजारी जी के नाम रामावतार यादव रहे आ उहाँ के चौसा के नजदीक के गाँव कठघरवा के रहे वाला रहनी। गंगा तट पर जहाँ च्यवन आश्रम बा ओह घाट के महादेवा घाट कहल जाला।

पुजारी के देखला से केहू ना कही सकी की ई कवनो मन्दिर भा आश्रम के पुजारी होइहैं। बतकही

में भी ना बुझाइल की ई पढ़ल लिखल बाड़न। बाकिर स्मृति उनकर बहुत ठीक रहे। बाकि ऊ एगो पुराकथा बतावे लगलन – महर्षि च्यवन भृगु ऋषि के पुत्र रहलन। इनका अनुसार भृगु ऋषि के पत्नी पुलोमा गर्भवती रहली जेकरा के कवनो राक्षस अपहरण के के ले जात रहे। रास्ता में चौसा के गंगा तट के एही महादेवा घाट पर जनम भइल। जनम भइला के बाद च्यवन ऋषि ओ राक्षस के दिब्य शक्ति से मार दिहले आ ओहिजे तपस्या करे लगलन। तप करत उनका हजारो बरिस गुजर गइल । समय के साथे उनुकर आयु भी बढ़त चलि गइल। तप में अतना लीन भइलन की कतने जाड़ा, गरमी आ बरिसात गुजरी गईल। उनका शरीर पर धूरि माटी जम गइल। शरीर पर जमल माटी में दियका आपन घर बना लिहले स। चौसा के नजदीक लगभग दस किलोममीटर पच्छिम सासाराम रोड पर स्थित सरेजा राज के राजा सयाति एक दिन घूमे खातिर अपना परिवार संगे गंगा तट के करीब अइलन। उनका साथे उनकर पुत्री सुकन्या भी रहली। सुकन्या के नजर घुमत घुमत च्यवन ऋषि के शरीर पर गइल। उनका बुझाइल कि ई मिट्टी के ढेर ह जवना में दियका लागी गइल बा। बाकिर दियका लागल मिट्टी के ढेर में से दुगो छेद रहे जवन चमकत रहे। सुकन्या के जिज्ञासा बढ़ी गईल ई का चमकत बा? कुतूहल बस एगो लकड़ी से चमकत छेद के खोदि दिहली। खोदते ओकरा में से खून बहे लागल। दियका के ढेर खून से लाल होखे लागल। सुकन्या डेराइ के आपन पिता से जाके घटना के बारे में बतवली। राजा अपने जाके महर्षि के शरीर से मिट्टी के झडले तब ऋषि के कृशकाय शरीर लउकल। महर्षि के तप भंग हो गइल रहे। राजा शर्याति महर्षि से क्षमा मांगे लगलन। एकरा पर उनुकर पुत्री सुकन्या अपना बाप से कहली की पिताजी हमरा चलते ऋषि के कष्ट भईल त हम इहाँ के अपराधी बानीं एसे एह अपराध के प्रायश्चित हम ऋषि के आपन सेवा दे के करबि। एह से रउरा हमार शादी ऋषि से कर दीं। राजा शर्याति अपना कन्या के जिद्द देखि के ऋषि के सामने आपन कन्या सुकन्या के प्रस्ताव रखले। ऋषि राजा के प्रस्ताव स्वीकार कइले आ सुकन्या के शादी च्यवन ऋषि से हो गइल। शादी भइला के बादो ऋषि समाधी में लीन हो गइलन। उनकर पत्नी सुकन्या उनुकर समाधि भंग ना होखे एकरा खातिर तत्पर रहत रहली। बहुत दिन के बाद महर्षि के समाधि जब टूटल त उनुकर नजर अपना पत्नी सुकन्या पर पड़ल। पत्नी के सेवा से ऋषि के मन में पत्नी के प्रति करुणा के भाव पैदा भइल।

ऋषि च्यवन पत्नी पर द्रवित होके आपन ध्यान लगा के देव वैद्य अश्विन कुमार के आवाहन कइलन। एक दिन दुनो अश्विनी कुमार महर्षि च्यवन के आश्रम में आ गइलन। एहिजा महर्षि के पत्नी सुकन्या उहनी लोगन के विधिवत पूजन कइली। अश्विनी कुमार सुकन्या के सेवा आ अपना पति के प्रति निष्ठा आ पातिव्रत्य से अत्यंत प्रसन्न हो गइल लोग। उहनी लोग कहल कि हमनी के तहरा सेवा से प्रसन्न बानी जा। हमनी के ऋषि के ठीक कर देब जा। आ 54 तरह के जड़ी–बूटी से च्यवनप्राश बनाके खियावल लोग। आ सुकन्या से कहल लोग की अपना ऋषि पति के हमनी के साथे गंगा जी में स्नान कर खातिर भेजीं। ऋषि के सुकन्या अश्विनी कुमार के संगे गंगा स्नान खातिर भेजली। गंगा जी में अश्विनी कुमार अपना संगे च्यवन ऋषि के डुबकी लगववलन। डुबकी लगा के निकलते च्यवन ऋषि अश्विनी कुमार लेखा युवक हो गइलन। सुकन्या देखते चकित हो गइली। अब स्थिति ई हो गइल की सुकन्या के पति के ह पहचानल मुश्किल रहे।

ऋषि के काया परिवर्तन के बाद कहल गइल की आपन पति के पहचान के ले जा। सुकन्या पतिव्रता रहबे कइली। तुरत पति के पहचान के हिगरा लिहली। अश्विनी कुमार प्रसन्न हो के सुकन्या के आशीर्वाद देत देव लोक चल गइल। जब राजा शर्याति के एकर खबर मिलल त उनका खुशी के ठेकाना ना रहे। राजा दउरले च्यवन ऋषि के आश्रम में अइलन। आ एकरा के दैवी कृपा मानि के एगो यज्ञ करावे के योजना बनवलन। राजा शर्याति के यज्ञ में अश्विनी कुमार के भी भाग देबे खातिर बुलावा गइल। अश्विनी कुमार यज्ञ में अइलन। लेकिन इहनी लोगन के अइला से देवराज इंद्र नाराज हो गइले। उ ऋषि च्यवन के मना कइलन की अश्विनी कुमार के यज्ञ में भाग लेबे के आ सोम रस पान करे के अधिकार नइखे। बाकिर च्यवन ऋषि ना मनलन। देवराज इंद्र क्रुद्ध हो के ऋषि च्यवन पर बज्र से प्रहार करे चलले तब ऋषि अपना तप के प्रभाव से इंद्र के स्तम्भित कर दिहले आ एगो राक्षस के पैदा कर दिहले जवन इंद्र के खाये खातिर दउरल। इंद्र भय से अश्विनी कुमार के यज्ञ के भाग आ सोम रस पान के अधिकार दिहले।

हमरा आश्चर्य के ठेकाना ना रहे। अतना सीधा साधा आदमी जवन बहुत पढ़ल लिखल नइखे चौसा के महादेवा घाट पर महर्षि च्यवन आ सुकन्या के साधना के बखान करि के उहनी लोगन के आज भी जीवित रखले बा। पुजारी जी से जब पुछल गइल की अतना जानकारी कहाँ से मिलल। त उ बतवले की

सुखसागर में बा। अब सुख सागर में बा कि नइखे, जतना उ बतवले ओकरा के लिपिबद्ध क के राखि दिहली। अब आचार्य, भा इतिहास के जानकार लोग एकर खोज करे कि एकरा में का आ कतना सत्य आ प्रमाणिक बा। सरसरी नजर से देखला पर देश, काल, परिस्थिति में अंतर लउकी। लेकिन ग्रामीण इतिहास अइसही बनेला। यदि सैकड़ो बरिस से चौसा में च्यवन के आश्रम के चर्चा हो रहल बा हजार बरिस से चर्चा चलत आवत बा । पीढ़ी दर पीढ़ी एहिजा तक आइल बा। बाकिर अब आगे कहाँ तक जा रहल बा ई आवे वाला समय बताई। यदि गाँव जागरूक होइ, एहिजा के जन प्रतिनिधि एकरा पर ध्यान दिहन तबे एकर दीर्घायु होखे के सम्भावना बा।

लेकिन इतिहास के देखला से कुछ बात गौर करे लायक आ रहल बा। आलेख तैयार करे के क्रम में हमरा सामने कुछ प्रश्न आइल। रउरो सभे एकरा पर सोचब जा। चौसा के इतिहास भा महर्षि च्यवन के आश्रम के बहाने जवन कुछ जानकारी मिलल ओकरा में चार गो पात्र हमरा सामने अइलन (1) भिश्ती (2) हुमायूं (3) शेरशाह (4) महर्षि च्यवन। चारो पात्र के सम्बंध कवनो ना कवनो रूप में चौसा से रहल। चारो पात्र कुछ समय, अधिक समय, भा जन्म से चौसा भा भोजपुरी क्षेत्र में रहले भा जनमले। एहिजा के हवा–पानी–अन्न के उपयोग यथा समय कइलन। एहिजा के धरती चारो पात्र के अपना गोदी में आश्रय दिहलसि। का इहे कारण त नइखे की चारो पात्र में एक तरह के मानवीय गुण दिख रहल बा। चारो पात्र में दया, त्याग, जन पक्षधरता, अन्याय के खिलाफ लड़े के भावना, प्रति उपकार, सेवा भाव लउकत बा। आ एकरा बारे में हमरा बुझात बा कि महर्षि च्यवन चूंकि तपस्वी आ सिद्ध बानीं उहाँ में ई गुण स्वाभाविक बा बाकिर एगो विशेष अतना बा कि प्रति उपकार में अश्वनी कुमार के सोम रस पान के अधिकार दिलावल। यदि प्रति उपकार के बात ना रहित त शायद अश्विनी कुमार के सोम रस पान भा यज्ञ के भाग दियवावे के कबो शायद अवसर आइत। क्रूर स्वार्थी मुगल शासक हुमायूँ में प्रतिउपकार के भाव कहाँ से आइल ? जवना से ऊ भिश्ती के एके दिन खातिर बाकि दिल्ली के बादशाह बनावे खातिर आपन सिंहासन दे दिहलसि। भिश्ती आ शेरशाह त भोजपुरी माटी के लाल रहबे कइलन।

हमरा बुझात बा कि ई भोजपुरी अंचल का माटी के विशेषता हऽ।।, ,एहिजा के माटी से पैदा अन्न,जल भा एकरा के छू के बहल हवा के देंन ह जवन एकरा के सेवन करे वाला के अंदर दया, करुणा, प्रतिकार, प्रतिउपकार, पुरुसार्थ, ज्ञानी बना देला। इहे कारण बा कि समाज के उपेक्षित भिश्ती जेकरा पास कवनो शिक्षा ना रहे, शासन के बारे में कुछ ना जानत रहे फिर भी कतना बुद्धिमान आ कूटनीतिज्ञ रहे जवना से एकही निर्णय ले के चमड़ा के सिक्का चला के भारते ना बल्कि विश्व के इतिहास में आपन आ अपना देश के, अपना गाँव के नाम सोना के अक्षर में अंकित करा दिहलसि। भिश्ती के शेरशाह अपना विजय पताका फहरा के, आपन कुशल शासन आ जन हित के काम से विश्व इतिहास में खाली आपन नामे ना अंकित करवले बल्कि अपना भोजपुरी माटी के उज्ज्वल चरित्र से संसार के परिचित करवले। भोजपुरिहा अइसहीं उतान ना रहेले। ●●

❑ शिवगोविंदायतन, रामबाग,पी.पी.रोड, बक्सर(बिहार)

दू गो गीत

✍ डॉ0 हरेश्वर राय

बिसंगति

अँखियन के अम्बर में बाज मेड़राता ।
धरती का छाती प रेंगनी फुलाता ।।

गउआँ के पाकड़ प बइठल बा गीध ।
मुसकिल मनावल बा होली आ ईद ।।

खेतन में एह साल फूटि गइल भुआ ।
सहुआ दुअरिये प बइठल बा मुआ।।

चूर भइल सपना भइल भागि घूर ।
रोपतानी आम बाकी जामत बा बबूर ।।

मरि गइले बाबू हमार भइल ना दवाई ।
माई के पिनसिन प होखऽता लड़ाई ।।

बुचिया के अँखिया में माड़ा फुलाइल बा ।
मेहरी के ठेहुन के तेल ओरियाइल बा ।।

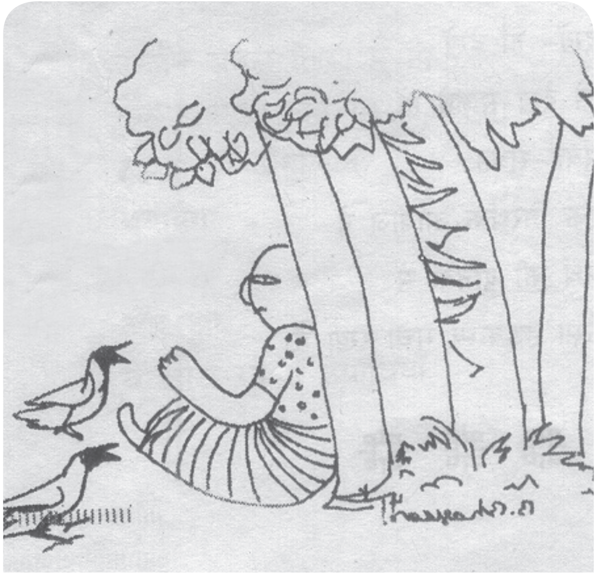

भोर

अम्बर के कोरा कागज प
ललका रंग छिंटाइल बा,
सोना रंग सियाही से
सुन्दर भोर लिखाइल बा।

नीड़ बसेरन के कलरव के
सगरो तान छेड़ाइल बा,
अन्धकार के कबर के ऊपर
आस उजास रेंड़ाइल बा।

मंद पवन मकरंद बनल बा
नीलकमल मुसुकाइल बा,
मोती रूप ओस धइले बा
कली-फूल शरमाइल बा।

भानु बाल पतंग बनल बा
तितली दल इतराइल बा,
कोयल, संत, सरोज, बटोही
सबके मन अगराइल बा। ●●

❑ बी-३७, सिटी होम्स कालोनी,
जवाहरनगर सतना, म.प्र.,

‘अपरिमिता’ सांस्कृतिक संस्था बलिया के ‘‘डाँडिया-उत्सव-आयोजन’’

स्थान : टाउनहॉल, बलिया में विजेता प्रतिभागियन के समारोह अध्यक्ष डॉ0 अशोक द्विवेदी पुरस्कार-प्रमाण पत्र देत

अपरिमिता संस्था के पदाधिकारियन के साथ संपादक ''पाती''

''पाती रचना-मंच'' आ विश्व भोजपुरी सम्मेलन (बलिया) इकाई के मासिक बइठक आ कवि गोष्ठी
स्थान-कुँवर सिंह इण्टरमीडिएट कॉलेज, बलिया के प्रांगण

तनिकी समदरसी बनि के देखीं!

शिलीमुख

भौतिक सुख–सवारथ खातिर, बुद्धि के अतार्किक–व्यापार आ तंग–सोच का घेरा में फँसल लोग, अपना मन के एतना मइल करत जा रहल बा कि छोट–छोट बात में ओ लोग के अहं आ दुराग्रह सतह पर आ जात बा। एह लोग के मन एतना अमान आ उत्तेजित हो जाता कि ओह लोग के मर्यादाहीन आ अराजक डहर पर त ढकेलते बा, विवेको हर लेता। ई अस्थिर, अराजक, असहिष्णु मन, एघरी राजनीतिक दुराग्रह आ हठवादी पक्षधरता का चलते अउर ज्वलनशील हो गइल बा। सब अपना स्वारथ आ आग्रह–दुराग्रह का साथ, अपना पसन्द–नापसन्द के खुल के जाहिर करे से नइखे हिचकिचात। एघरी त 'सोशल मीडिया' एकर मंच बनल बा।

'जायज' के नाजायज आ 'गलत' के सही बतावे वालन क बढ़त संख्या, अब अपना अराजक उफान का साथ समाज के गरस रहल बा। बरिसन–बरिसन तक 'सत्ता' पर एकाधिकार आ दखल राखे वाला गोल, गद्दी छिनइला का खीझ आ आक्रोश में, कवनो हद तक जाये के तइयार बा, तऽ सत्ताहीन, ओकरा तिलमिलाहट के अउर बढ़ावे में कसर नइखे उठा राखत। बिपक्ष में बइठल दल भा राजनेतन के एकर मलाल ज्यादा बा कि आजु से पहिले ओकरे जायज–नजायज, गलत–सही के तूती बोलत रहे, ऊ जब, जवन चाहत रहे, कर देत रहे आ अब एगो 'अदना' ओकर एकहूँ दाल गले नइखे देत। राजनीतिक–प्रतिस्पर्द्धा आ हामाहूमी में, अपना–अपना आग्रह–दुराग्रह, नफा–नोकसान आ नफरत का साथ आम जनतो आ गइल बिया.... केहू, केहू के सुने के तइयार नइखे। बिख–वमन आ मर्यादाहीन उत्सर्जन (अभिव्यक्ति के आजादी का नाँव पर) लगातार हो रहल बा। आपन–आपन गढ़ल 'साँच' देखावे आ साबित करे में सैकड़न झूठ के सहारा। एह से काम ना बनल त गलदोदई आ थेथरई के अस्त्र बटले बा। गोयाकि भारत क सभ्य–सुशिक्षित–सुसंस्कृत कहाये वाला समाज, घृणा आ द्वेष का उफान में छिन्न–भिन्न होके जरे खातिर के तइयार बा।

आपन बात कहे भा अभिव्यक्ति के स्वतंत्रता जरूरी बा, बाकिर एतनो कटु आ तीत ना कि समाज का कवनो समुदाय, वर्ग भा जाति के उपहास, उपेक्षा होखे भा चोट पहुँचे। 'सेकुलर' चोला पहिरला क मतलब ई ना कि भारत का विशाल हिन्दू आबादी का भावना आ आस्था का साथ खेलवाड़ कइल जाव। एगो बुरा समय रहे कि 'राम' का अस्तित्व के काल्पनिक कहा जाव, "सहमत" प्रदर्शनी लागे.... सीता के राम के बहिन बतावल जाय। सरस्वती आ दुर्गा के नग्न आ फूहर चित्र बना के चर्चा में आवे के आयोजन होखे, लंका जाये खातिर राम का सेना के बनावल सेतु के झूठ आ गप्प कहि दियाव। भारत का वास्तविक, इतिहास आ संस्कृति के तोर–मरोड़ के मनचाहा फेरबदल कइल जाव; बाकि अब, जब 'साँच' भूइँ फोर के प्रमाण का साथ सोझा आ गइल, तब्बो ओकरा पर राजनीतिक छल–छहन्तर आ बिधवा–विलाप! कि एकरा प चरचा संशोधन काहें होता? अरे तूँ जवन रेख खिंचले रहलऽ ऊ 'साँच' के तोपे वाला रहे, त ओके मेटावे आ सही रेख बनावे के पड़बे करी। ई ना न चली कि तोहार सात खून माफ हो जाय आ दोसरा का खोंखलो–कँहरला पर प्रतिबन्ध लागो। 'सहिष्णु' तोहरो होखे के परी, आ दुसरा का बिचार के सुने आ सम्मान देबे के परी। असहमति जतावे के तोहार तरीका आक्रामक रही, त दुसरा में प्रतिक्रिया भइल सुभाविक बा। एही तरे आपुसी बतकही, बहस एतना अतार्किक, असंगत आ फूहर ना

हो जाय कि एक–दुसरा का निजता आ सम्मान के ध्ाज्जी उड़े लागे।

ई स्वतंत्रता बड़ी मूल्यवान हऽ एकर बड़ कीमत चुकावल गइल बा। एकर दुरुपयोग एतना ना होय कि ऊ घातक हो जाय। दायित्व आ जिम्मेदारी दोसरा का कपारे आ हमरा खातिर हर बात के स्वतंत्रता। भला कईसे निबही? हमार 'स्वतंत्रता', दुसरा के नीन भा ध्यान में खलल डाले, त ऊ स्वतंत्रता अनेत वाली आ अराजक कहाई। हमनी किहाँ एगो व्यावहारिक चलन ई हो गइल बा कि हर गलती, हर दोष, हर बेजायँ, सरकार आ बेवस्था पर मढ़ के छुट्टी पा लीं। ई बेमारी समाज के खुदपरस्त, स्वार्थी, लालची आ गैरजिम्मेदार त बनवते बिया, अराजक लोगन के "सेफ कारीडोर" देबे लागल बिया। ध्यान से सोचीं त दूर ना, रउरा आसेपास सैकड़न गो उदाहरन मिल जाई.... कहीं सुर्ती, पान थूक दिहल, खाइ के कचरा फेंक दिहल, सड़क के 'रॉंग साइड' चलल ट्राफिक आ रेलवे नियमन के उल्लंघन त आम बात बा। ढिठाई आ मनबढ़ूपन के उदाहरन का दिहल जाय, गोल में बानी त केहू पर 'टांट' कस देबि, 'फब्ती' अइसन कि 'लाजो', लजा जाय। घर का दुआरी के कचरा आ नाली जाम हमनियें का करब जा, बाकिर सफाई–खातिर, नगर 'बेवस्था' के पानी पी–पी के गरियाइब जा। ई हमनी के पढ़ल–लिखल समाज के कवन नया सहूर बिकसित हो गइल, जबकि गाँव का हर घर में बाबू, काका, बाबा, भाई लोग दुआर से गली ले खरहरा आ झाडू लगावे। माई, काकी, फुआ, बहिन लोग घर–आँगन बहारे के कचरा, घूर पर फेंके आ सबकर घर–दुआर चिक्कन लागे। सबके नीक लागे।

हमहन का इलाका में बड़का संयुक्त परिवार त टूटिये गइलन सऽ, एकल परिवारो में कम अनदेखउवल आ गुरमुसाहट नइखे। अलग–बिलग भइला आ सुतंत्र खान–पान, रहन–सहन, कमाई आ खर्चा का बादो आपुस में भितरिया डाह, जलन आ चढ़ा–उपरी काहें बा? एक दुसरा का प्रति अविश्वास, शंका आ नफरत काहें बढ़त चलल जा रहल बा? घर से गाँव, शहर आ समाज में काहें फइलत जा रहल बा? 'बसुधा' के कुटुम्ब माने वाला एह देश में, भौतिकता के होड़ में एक–दुसरा क कान्ह छीलत प्रतिद्वन्दिता, एक दुसरा के मिटा देबे के जनून, लोगन के केतना असहिष्णु बनवले जा रहल बा। घर–मुहल्ला से लेले प्रदेश, देश ले फइलत एह दुर्भाव–लहर के राजनीतिक दुष्चक्र आ बौद्धिक–साजिश का जरिये लुत्ती लेसि के अउर भड़कावल जा रहल बा। पंथ, मजहब, जात–पाँत, सवर्ण–दलित–पिछड़ा, भाषा आ क्षेत्र का आधार पर भड़कावे–लड़ावे में पिछला कुछ दशकन से लागल राजनीतिक दल, नेता, पंडा, मोलबी कथित सेकुलर बुद्धिजीवी आ सेलेक्टेड पत्रकार ए घरी 'असहिष्णुता के राग अलापत थाकत नइखे। सर्वाधिक असहिष्णु, त खुद इहे लोग बा। प्रायोजित हो–हल्ला मचावे आ 'पुरस्कार वापसी' के नाटक करे वाला लोगन के अपना वर्चस्व, सत्ता आ अधिकार छिनइला के मलाल एतना ज्यादा रहे कि ऊ लोग देश आ जनता के अहित कइयो के, सत्ताधारी दल का नेता के नीचा देखावे में, एँड़ी से चोटी एक कइले से ना हिचकिचाइल।

एह कथित प्रगतिशील, सेकुलर बुद्धिजीवी नाँव का कुतर्की 'गैंग' के खामख्याली रहल कि जवन ई लोग कही, तवने सही, दोसर कही त, ऊ कहीं के ना रही। बब्बुर बोवला पर आम ना फरी। एह लोग का पक्षधरन का गलती, छल, षड्यंत्र आ अपराध पर चुप्पी आ दोसरा वाला का जाने–अनजाने कइल गलती पर हाय–तोबा। एह लोगन का वैचारिक फितूर वाला प्रदूषण के जबाब दिहला पर, ए लोगन के एकजुट हल्ला आ असहिष्णुता देखत बनेला। जमाना बदल रहल बा, बरिसन से एह लोगन के आयातित, प्रायोजित बिचार–प्रदूषण सुनत–सहत लोगन के अभिव्यक्ति के आजादी के प्रयोग करे आ गइल त अउरी परेशानी बा। खराबी, कुटिलता, अपराध, हिंसा, आतंक, 'लिंचिंग', कट्टरता, बर्बरता त केनियो, केहू करे, ऊ खराब बा। ओकर मिल के निन्दा, भर्त्सना आ इलाज होखे के चाहीं। सबके समाज में समदर्शी होखे के परी। सबके, सबका सम्मान के खेयाल करे के परी। उत्तेजना फइला के समाधान ना खोजा पाई। न्याय, समानता, स्वतंत्रता आ अधिकार त सबकर बा, फेर 'सेलेक्शन' वाली नौटंकी काहें? चीन्हि–चीन्हि के 'साटिकफिटिक' आ 'रेवड़ी' बाँटे वालन के 'सहिष्णुता' आ 'त्याग' के अरथ, के समझाई? समय जबाब दे रहल बा।

लब्बोलुआब इहे कि भटकटया, नागफनी, बब्बुर बोवला पर काँटे–काँट फरी। दुसरा का राह में काँट बिछावे आ खाई खोदे वालन के ऊहे काँट, उहे खाई मिली। हमन का 'लोक' में त सबका सुख, सबका हित क कामना कइल जाला। भारतीय संस्कृति सबकर हित, सबकर भल सोचे वाला विचार आ मन के मइल धोवत रहे के सनेस एही से देत आइल कि ऊ साथ मिल के चले, साथ मिल के करे वाला समाज बनावल चाहत रहे। हमनी के जहिया ई संस्कृति, ई विचारध्ाारा समझ में आ जाई, तहिया, सहिष्णु आ सन्तोषी बन के रहे आ जाई। ओह दिन के इन्तजार बा कि हमहन के दीठि में समदर्शी भाव जागो। ●●